अर्हम्

आचार्यश्रीमद्विजयदानसूरीश्वरजी-जैनग्रन्थमालायाः पञ्चचत्वारिंशं रत्नम्

सिरिपउमचंदसूरिसीसविरइयविक्कमसेणचरियन्तग्गय

पाइअकहासंगह ।

प्रकाशयित्री-आचार्य श्रीमद्विजयदानसूरीश्वरजी जैनग्रन्थमाला-गोपीपुरा-सुरत.

सम्पादक-संशोधकौ-सिद्धान्तमहोदधि आचार्यश्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वरपट्टप्रभावक
व्याख्यानवाचस्पति आचार्यश्रीमद्विजयरामचन्द्रसूरीश्वरशिष्यौ
पं. श्रीमानविजयः पं. श्रीकान्तिविजयश्च

वीर संवत् २४७८
विक्रम संवत् २००८

पण्यम्-रूप्यकद्वयम्

क्राउन सन १९५
प्रतयः ५००

इदं पुस्तकं भावनगरपुर्यां महोदयमुद्रणालये गुलाबचन्द लल्लुभाई द्वारा मुद्रापयित्वा प्रकाशितम् ।

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठम्	श्लोक:	अशुद्ध:	शुद्ध:
१/१	१	°रिर्द्धि	°रिद्धि
२/२	५०	चिंतिऊञ	चिंतिऊण
३/१	५४	रयणवई विहव°	रयणवईविहव°
८/२	६	°वुक्खियमणा	दुक्खियमणा
१६/२	६२	वेअणा	चेअणा
,,	,,	आणि(हरि)स्सइ	आणिस्सइ
२५/१	१००	क पि	कं पि
३१/२	६७	पुत्ताइं	पत्ताइं
३४/१	६	°धूरघवलो	°धुरधवलो
३९/१	५२	निंदिय कम्मं	निंदियकम्मं
४१/२	१३	सेसं (?)	सेसं (सेसाइं)
४२/१	३९	°याइ नासो	°याइनासो
४३/२	८३	बहुं पवण°	°बहुपवण°
४४/१	१०१	पयागिर्णि	पगागिर्णि
४४/२	११२	°हरः	°घरः

अनुक्रमणिका

१	दानविषये धनदेव-धनदत्तकथा	पृष्ठ	१
२	सम्यक्त्वप्रभावे धनश्रेष्ठिकथा	,,	६/१
३	दानविषये चंडगोवालकथा	,,	८/२
४	,, कृपणश्रेष्ठिकथा	,,	११/२
५	शीलप्रभावे जयलक्ष्मीदेवीकथा	,,	१४/२
६	,, सुन्दरीदेवीकथा	,,	१८/२
७	नवकारफले सौभाग्यसुन्दरकथा	,,	२१/२
८	तपोविषये मृगाङ्करेखाकथा	,,	२५/२
९	,, अघटकथा	,,	२९/२
१०	भावनाप्रभावे धर्मदत्तकथा	,,	३३/२
११	,, बहुबुद्धिकथा	,,	३७/१
१२	अनित्यताविषये समुद्रदत्तकथा	,,	४१/१

प्रकाशकीय निवेदन

अमने जणावतां अतिहर्ष थाय छे के–सदरहु संस्था तरफथी अत्यार सुधीमां ४४नी संख्यामां नाना मोटा ग्रन्थो तथा प्रतिओ प्रकाशित करवामां आवेल छे. जेमांना केटलाक तो अमुद्रित हता. तेवी रीते अत्यार सुधी कदि नहि प्रकाशित थयेल आचार्य सिरिपउमचंदसूरिसीसविरइयसिरिविक्कमसेणचरिय प्राकृत कथानकनी अन्तर्गत दान-शीयल-तप-भावना-सम्यक्त्व-नवकार तथा अनित्यता वगेरे उपर दर्शावेल चौद कथाओ पैकी मळेल बार कथाओनो संग्रह करी पाइअकहासंगह नामनो आ ग्रन्थ सिद्धान्त-महोदधि आचार्य श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराजना पट्टप्रभावक-व्याख्यानवाचस्पति आचार्य श्रीमद्विजयरामचन्द्र-सूरीश्वरजीना विद्वान् शिष्यो पूज्य पंन्यासजी श्रीमानविजयजी महाराज तथा पूज्य पंन्यासजी श्रीकान्तिविजयजी महाराजे सम्पादित तथा संशोधित करी आपेल छे. तेने आ संस्थाना ४५ मा ग्रन्थांक तरीके वाचकजनोना करकमलमां रजू करवा आजे अमे भाग्यशाली थया छीए.

आ ग्रन्थनी महत्ता अंगेनो ख्याल सम्पादकीय वक्तव्यमां आपेल होवाथी अमारे ते संबंधी कंइ पण लखवानुं रहेतुं नथी.

आ ग्रन्थ छपाववामां कोईनी पण सहाय मळेल नथी. आथी आ ग्रन्थ तैयार करवामां जे खर्च थयेल छे, ते प्रमाणमां ज किंमत

राखवामां आवेल छे. आ संस्थानो उद्देश पोताना कोई पण प्रकाशनमांथी नफो नहि लेवानो होवाथी पडतर किंमत राखवा छतां पण लेजर कागळ तथा सारी छपाईना अंगे खर्च वधु आववाथी, राखवामां आवेली किंमत वांचकजनोने कदाच वधु लागे तो क्षन्तव्य गणशे एम अमे आशा राखीये छीये.

सदरहु ग्रन्थना सम्पादक तथा संशोधननुं कार्य बन्ने पूज्य पंन्यासजी महाराजाओए करी आपी ज्ञानप्रचारना अमारा आ कार्यमां जे मदद करी छे ते बदल आ संस्था तेओश्रीनो घणो आभार माने छे अने एमना तरफथी आवी मदद अमारी संस्थाने वधुने वधु मळे एम अमे इच्छीए छीए.

गोपीपुरा–सुरत.
वि. सं. २००८ ज्येष्ठ सुद २

लि० श्री विजयदानसूरीश्वरजी जैन ग्रन्थमाला
व्यवस्थापक—मास्तर हीरालाल रणछोडभाई

सम्पादकीय-वक्तव्य

पाइअकहासंगह नामना अद्यावधि अप्रगट आ ग्रन्थमां श्रीपद्मचन्द्रसूरिशिष्यविरचित विक्रमसेनचरित्रनी अंदर आवती चौद कथाओ पैकी बार कथाओनो संग्रह छे. शक्य तपास करवा छतां पण संपूर्ण विक्रमसेनचरित्र प्राप्त न थवाथी जे बार कथाओ मळी ते उपयोगी अने भाववाही लागवाथी संग्रहित करी आ ग्रन्थरूपे मुद्रित करावी छे.

ग्रन्थ परिचय—आ ग्रन्थमां संग्रहित कथाओ विक्रमसेनचरित्रनी छे. ते चरित्रमां अन्यान्यविषयनी चौद कथाओ छे, जे नीचे आपेला श्लोको उपरथी जाणी शकाशे—

" तिसलाकुच्छिसरोवरकलहंसं वीरजिणवरं नमिउं। दुज्जयअंतररिउविजयपत्तं सिवरमणीसोक्खभरं ॥ १ ॥

× × × ×

रयणत्तयजुत्ताणं गुरूणं [सिरि]पउमचंदसूरीण। मंदमई वि पसाएण किं पि जंपेमि उवएसं ॥ ५ ॥

× × × ×

अह विक्कमसेणनराहिवस्स पभणेमि चरियमिणं। सम्मत्तलाहपुव्वं सव्वट्ठविमाणगमणंतं ॥ २० ॥
इह पुव्वं सम्मत्ते चरियं धणसिट्ठिणो समक्खायं। अह दाणे धणदेवो धणदत्तो भाउणो दोन्नि ॥ २१ ॥

नामेण मयणसेणो वेसामयणो त्ति कुंभयारो य । चंडो गोवालो चिय किविणो दाणंमि चत्तारि ॥ २२ ॥
सीलंमि य जयलच्छी देवी तह सुंदरी दुवे इत्थ । खयरी मयंकरेहा अघडंनिवो दोन्नि तवम्मि ॥ २३ ॥
सिट्ठी य धम्मंदत्तो बहुबुद्धी णाम मंतिणो पुत्तो । एए दुन्नि वि कहिया दिट्ठंता भावणाविसए ॥ २४ ॥
नवकारफले भणिओ निवई सोहग्गसुंदरो नाम । कहिओ अणिचयाए समुद्ददत्तो वणियपुत्तो ॥ २५ ॥
नियमस्स फले भणियो कमलो नामेण सिट्ठिणो पुत्तो । चउदस कहाणगाइं नेयाइं समासओ कमसो ॥ २६ ॥"

[पाटणना संघवीना पाडाना ताडपत्रभंडारना डा. नं. ६५/४ नी नंबर. १ नी प्रति उपरथी]

आ श्लोकोमां जणावेली चौद कथाओ पैकी बार ज कथाओ अमने मळी शकी छे. जे अन्यत्र आपेली अनुक्रमणिका उपरथी जोई शकाशे.

ग्रन्थकार परिचय—उपर ग्रन्थ परिचयमां जणावेला पांचमा श्लोक उपरथी आ ग्रन्थना कर्त्ता श्रीपद्मचन्द्रसूरिना शिष्य छे एटलुं ज जाणवा मळे छे, परन्तु तेमना नाम वगेरे संबंधी बीजी कशी ज हकीकत शक्य तपास करवा छतां मळी शकी नथी.

प्रतिपरिचय—आ ग्रन्थना सम्पादनमां अमे त्रण ताडपत्रनी प्रतिओनो उपयोग कर्यो छे, तेनी A B C एवी संज्ञा राखी छे.

A संज्ञक प्रति—आ प्रति पाटणना संघवीना पाडाना भंडारनी छे. तेनो तत्रत्य जूनो डा. नं. २९५ अने नवो डा. नं. ६५/४ छे अने पत्र संख्या ७८ छे. आ प्रतिमां शरुआतमां लगभग साठ उपरांत श्लोको विक्रमसेनचरित्रने अंगे आपेला छे. एमां पहेली कथा सम्यक्त्व उपर धनश्रेष्ठिनी छे. तथा छेल्ली चौदमी कथा नियमना फल उपर कमल नामना श्रेष्ठिपुत्रनी छे. शरुआतना

श्लोकोमांथी १–५ अने २० थी २६ सुधीना एम कुल नव श्लोको अत्रे अमे आ वक्तव्यमां एटला ज माटे आप्या छे के एना आधारे ग्रन्थनुं नाम, ग्रन्थकारना गुरुनुं नाम अने ग्रन्थनी वस्तु सौ कोईना ख्यालमां आवी शके. आ प्रति अपूर्ण होवाथी चौद कथाओ पैकी अघटकुमार सुधीनी आठ ज कथाओ आमां छे. क्रमसर गणतां अघटकुमारनी कथा नवमी थाय छे. परन्तु आ प्रतिमां त्रीजी मदनसेननी कथा नथी. एटले आठ ज कथाओ छे. B अने C संज्ञक प्रतिओमां पण आ मदनसेननी कथा मळी शकी नथी. तेवी रीते चौदमी श्रेष्ठिपुत्र कमलनी कथा पण त्रणे प्रतिओमांथी एके प्रतिमां मळी नथी. एटले आ बे कथाओ अमे आपी शक्या नथी. आ प्रति सारी हालतमां छे. पुष्पिका आदि कांई पण एमां नथी.

B संज्ञक प्रति–आ प्रति पण उपर्युक्त भंडारनी ज छे. तेनो तत्रत्य जूनो डा नं. ४८ अने नवो डा. नं. १५७/१ छे. पत्र संख्या १५४ छे. आ प्रतिने अनेक स्थळे उधेइए जर्जरित करी क्षत-प्रहत करी नांखी छे. पत्र ५३ थी ५७ सुधीना पांच पत्रोमां तो जमणी बाजुनो लगभग एक षष्ठांश भाग तो अलग थई गयेलो होवाथी खोवाइ गयेलो छे. ए भाग ग्रन्थपालनी बिन-काळजीथी के उपयोग करनारा पैकी कोईनी बेदरकारीथी खोवायो छे तेनी अमने माहिती नथी. परन्तु आवुं तो केटलीए महामूली प्रतिओ माटे बन्युं हशे ते तो ज्यारे भंडारोनी प्रत्येक प्रतिओ बारीकाइथी तपासवामां आवे त्यारे ज प्रामाणिकपणे कही शकाय.

आ प्रतिना डाभडा उपर द्वादश कथा एवुं नाम आपेलुं छे अने तेमां पत्र १ थी १४१ सुधीमां आ ग्रन्थमां संपादन करेली बारे कथाओ विक्रमसेन चरित्रमांथी उद्धार करीने लखेल छे अने तेनी पछी पत्र १४१ थी १५४ उपर अमरचन्द्रसूरिकृत विभक्तिविचार प्रकरण छे. जेनुं संपादन अमे विक्रम संवत २००६ मां कर्युं छे. आ प्रतिमां पण पुष्पिका आदि कांई ज नथी.

C संज्ञक प्रति–आ प्रति पाटणना तपागच्छीय ताडपत्र भंडारनी छे. एनो तत्रत्य डा. नं. २० छे. आ प्रतिमां मात्र एक धनदेव–धनदत्तनी कथाज छे. जे पत्र २०० थी २०८ उपर छे. आ प्रतिना अंतमां नीचे प्रमाणे उल्लेख छे.

संवत् १३९८ वर्षे पोष सुदि ७ सोमे कथाद्वयं लिखितमिति

ग्रन्थ रचनाकाळ–A संज्ञक प्रति अपूर्ण छे, एटले तेना उपरथी ग्रन्थनी रचना क्यारे थई तेनो निर्णय थई शके तेम नथी. B संज्ञक प्रतिमां कथाओनो फक्त उतारो ज करवामां आवेलो छे, एटले तेमा आधारे पण रचनाकाल मळी शके तेम नथी. तेम तेनी अन्ते पुष्पिका पण नथी के जेथी कोई पण जातनुं अनुमान थई शके. त्रीजी C संज्ञक प्रतिना अन्ते पुष्पिका छे, जे जोतां ते प्रति १३९८ मां लखायेली छे, एटले मूल ग्रन्थ विक्रमसेनचरित्रनी रचना ते पहेलानी होवी जोईए ए निश्चित छे. छतां केटला वखत पहेलानी ते रचना छे ते निश्चित कही शकाय नहि. परन्तु ग्रन्थ घणो प्राचीन छे ए तो निर्विवाद छे.

ऋणस्वीकार–आ सम्पादनमां अमने संघवीना पाडानी बे प्रतिओ पटवा सेवन्तिलाल तरफथी अने तपागच्छीय भंडारनी प्रति पूज्य मुनिराज श्री जशविजयजी महाराजनी प्रेरणाथी तेना कार्यवाहक तरफथी मळी छे. तेथी अमारा आ कार्यमां सहाय करवा बदल ते दरेकनो आभार मानीये छीए. आ ग्रन्थ छपाया बाद स्वाध्यायरसिक पूज्यपाद पंन्यासजी महाराज श्रीमान् मुक्तिविजयजी गणिवर ध्यानपूर्वक वांची गया छे अने केटलीक अशुद्धिओ तरफ अमारुं ध्यान दोर्युं छे, ते बदल तेओश्रीनो अत्यन्त उपकार मानीए छीए.

उपसंहार–आ ग्रन्थमां त्रण प्रतिओनो उपयोग करवा छतां मुख्यता B संज्ञक प्रतिनी राखी छे. आम छतां ज्यां बीजी प्रतिनो पाठ तेना करतां वधु संगत लाग्यो छे त्यां तेने मुख्य करी बाकीनी प्रतिना पाठने फुटनोटमां पाठान्तर तरीके मूक्यो छे. ज्यां

अक्षरो कपाई गयेला छे त्यां अमे नवा मूकेला अक्षरो [ ] आवा कौंसमां मूक्या छे, अने जे अक्षरो अमारा ख्यालमां आवी शक्या नथी त्यां तेटला अक्षरोनी आ प्रमाणे + + + + + + जग्या खाली राखी छे. ज्यां कोई पाठ अशुद्ध लाग्यो छे त्यां ( ) आवा कौंसमां अमने शुद्ध जणायेलो पाठ मूक्यो छे. ज्यां कोई नवो अक्षर वधारवानी जरुर लागी छे त्यां [ ] आवा कौंसमां तेटला अक्षरो मूक्या छे, अने ज्यां अमने अर्थनो ख्याल नथी आव्यो त्यां (?) आवुं चिह्न कर्युं छे. कथाओनो क्रम जे विक्रमसेन चरित्रमां छे ते द्वादश कथानी प्रतिमां नथी, ज्यारे आ ग्रन्थमां बन्नेथी भिन्नक्रमे कथाओ गोठववामां आवी छे जे अनुक्रमणिका उपरथी जोई शकाशे.

प्रान्ते जणाववानुं के शक्य काळजी राखवा छतां चक्षुदोषथी, मतिमान्द्यथी के प्रेसदोषथी जे कोई अशुद्धिओ रही गयेली छे तेनुं शुद्धिपत्रक आ साथे दाखल करवामां आव्युं छे, छतां ते उपरांत कोई अशुद्धि जणाय तो तेने क्षम्य गणी विद्वानो सुधारीने वांचशे अने अमने जणावशे एवी अमारी नम्र विज्ञप्ति छे.

मानविजय तथा कान्तिविजय.

नमः श्रीवर्द्धमानस्वामिने ।

सकलागमरहस्यवेदि–आचार्यश्रीमद्विजयदानसूरीश्वरेभ्यो नमः ।

सिरिपउमचंदसूरिसीसविरइयविक्कमसेणचरियन्तग्गय—

पाइअकहासंगह ।

दानविषये धनदेवधनदत्तकथानकम्—जो दाणं भत्तीए वियरइ सो पावए विउलरिद्धिं । धणदेवो धणदत्तो सहोयरा इत्थ दिट्ठंता ॥ १ ॥ सिंहलदीवो दीवो नरनाहो सिंहलेसरो तत्थ । भज्जा सिंहलनामा सिंहलसीहो सुओ ताणं ॥ २ ॥ सिंहलसीहो पत्तो वसंतसमयंमि बाहिरुज्जाणे । हाहारवं तहिं सो निसुणेई कन्नसद्दं व ॥ ३ ॥ किं ? किं ? किं ? ति भणंतो गओ पुरो जाव ताव सो नियई । एगं कन्नं मयगलकरसंनिहियं विलवमाणिं ॥ ४ ॥ न हु ताय ! रक्खसि तुमं जणणि ! तुमं पि हु करेसि नो करुणं । कुलदेवयाउ ! तुम्हे[1] वि इह समए कत्थ वि गयाओ ? ॥ ५ ॥ किं अत्थि कोइ पुरिसो करुणाउवयार–साहससमेओ ? । जो मं रक्खइ सिग्घं एयाओ करिकयंताओ ॥ ६ ॥ तं पिच्छिअ सो चिंतइ दीणस्स करेइ जो न उवयारं । सो किं नेव विलीणो जणणीए उयरमज्झंमि ॥ ७ ॥ उक्तं च—किं ताणं जम्मेण वि जणणीए पसवदुक्खजणगेण ।

---

१ तुम्हि वि A B ।

[1]परउवयारगुणो खलु न जाण हिययंमि विप्फुरइ ॥ ८ ॥ उवयारो किज्जंतो गुणावहो होइ अप्पणो चेव । भूसंतं नयणेसुं कज्जलमवि सहइ इत्थीणं ॥ ९ ॥ इय चिंतिऊण कुमरो करिणो पुरओ पडं [2]खिवेऊण । आयड्ढिऊण तत्तो जणयाणं अप्पए कन्नं ॥ १० ॥ नरनाहो [3]सुणिऊणं वुत्तंतं हरिसनिब्भरो कहवि । चिंतइ कुमरस्स गुणे धीरिमउवयारकरुणाओ ॥ ११ ॥ धणधणसिरी उ धणवईकन्नं गहिऊण कुमरगयचित्तं । सिंहलसीहस्स परोवयारिणो दिंति निवसक्खं ॥ १२ ॥ सिट्ठिधूया कुमरेणं पाणिग्गहणं करेइ नरनाहो । नियविहवसारवियरणअद्दरिद्दं कुणइ सयलजणं ॥ १३ ॥ परिभमइ जत्थ कुमरो अइसुहयसिरोमणी गुणावासो । सयलो वि रमणिवग्गो न तस्स पुट्ठिं चयइ कहवि ॥ १४ ॥ समयंमि जंमि कुमरो कीलाहेउं पयाइ वीहिम्मि । समयंमि तंमि तरुणीण हुंति विविहाउ चेट्ठाओ ॥ १५ ॥ हारं बंधइ [4]चरणे गीवाए नेउरं मसीरेहा । [5]विरयइ ललाडवट्टे तिलयं नयणेसु खलु का वि ॥ १६ ॥ का वि [6]अइउरसुयमणा सुओ त्ति कुणिउं कडीए मज्जारं । मग्गम्मि जाइ सिग्घं जणेहिं निहुअं हसिज्जंती ॥ १७ ॥ का वि हु वेढिज्जंती वायसनियरेण हत्थठिअकवला । कर कर कर त्ति (?) [7]सुणिरी लज्जइ सयमेव लोएसु ॥ १८ ॥ का वि सकोवा पभणइ हले ! हले ! सुणसु वयण मज्झमिणं । रुद्धो सयलो वि पहो तुज्झ नियंबेण [8]विउलेण ॥ १९ ॥ पवणुड्डिअ दूरगयं न मुणइ उत्तरियअंसुयं का वि । कुमरं अवलोयंती देंती तरुणाण परिओसं ॥ २० ॥ का वि पयंपइ वुड्ढे ! निरत्थयं कह पहो तए रुद्धो ? । धम्मस्स एस

१ परोवयारगुणो वि हु न C । २ खवेऊग C । ३ सोऊणं B C । ४ चलणे C । ५ विअरइ A वियरइ C । ६ अइऊसुयमणा B C । ७ चुणिरी C । ८ पिहुलेण C ।

समओ तरुणाण पलोयणे न उणो ॥ २१ ॥ अप्पाणं रमणीओ तिसिअं छुहियं वं[1] नो विआणंति । आगच्छंति सगेहे कुमरे पत्तंमि धवलहरे ॥ २२॥ अन्नदिणे सिट्ठिजणो निवइं विन्नवइ देव ! अन्नाओ । न गिहे दीसइ रमणीलोओ कुमरे बहिभमंते ॥ २३ ॥ सोहग्गरूवगुणगणसंजमिओ इव चएइ न कुमारं । रमणिजणो ता तं तह कुणसु जहा ठाइ नियगेहे ॥२४॥ आमं ति पभणिऊणं कयसम्माणं विसज्जए लोयं । किंकायव्वविमूढो राया चिंताउरो जाओ ॥ २५ ॥ हं[2]कारिऊण भणिओ मा हिंडसु कुमर ! नयरमज्झंमि । ज्झिज्जइ तुह लायण्णं पिज्जंतं तरुणिनयणेहिं ॥ २६ ॥ अहिमाणधणो मुणिउं चित्तं निवइस्स चिंतए कुमरो । नियगुणगणो वि मज्झं संजाओ सत्तुवग्गसमो ॥ २७ ॥ धिद्धी मह जम्मो वि हु लोयाणं दुक्खकारणं जेण । ता जह सुहिओ लोओ हवेइ तं चिय लहु करिस्सं ॥ २८ ॥ इय सो विसन्नचित्तो कहकहमवि गमइ जाव [3]सयलदिणं । ता मुणिअमाणसा पिययमा वि तं पुच्छइ सदुक्खं ॥ २९ ॥ मज्झ सवहेण विप्पसि सच्चं चिय कहसु तुज्झ किं दुक्खं ? । कुमरो विसायकारणमह कहिउं तं पयंपेइ ॥ ३० ॥ कायव्वं अज्ज मए गमणं देसंतरंमि दूरंमि । ता दइए ! [4]मायगिहे चिट्ठ तुमं कइवयदिणाइं ॥३१॥ सा पडिभणेइ पिययम ! जुत्तं वुत्तं तए इमं वयणं । छाय व्व तुज्झ पासं न उणो चइउं अहं सक्का ॥३२॥ ता मुणिआभिप्पाओ गहिऊणं धणवइं रयणिमज्झे । वासभवणाउ कुमरो विणिग्गओ तह य नयराओ ॥ ३३ ॥ गच्छंतो संपत्तो समुद्दकूले कमेण सो कुमरो । आरुहइ जाणवत्तं पियाए सहिओ तओ तत्थ ॥ ३४ ॥ पडिकूलमारुएणं फुट्टं तं धणवई वि दिव्ववसा । लहिऊण फलहखंडं संपत्ता तीरभायम्मि ॥ ३५ ॥ संपत्तफलहखंडो पिओ वि जइ जीविओ कहवि होज्जा ।

१ कुमरं C । २ इयमार्या A B प्रत्योर्नास्ति । ३ दिवसमिणं C । ४ तायगिहे C ।

इय आसाए तीए चत्तं न हु जीवियं तत्थ ॥ ३६ ॥ उक्तं च—वल्लहविरहे लोओ जं न मरइ जलणदाहतुल्ले वि । तं तस्स पुणवि संगमआसाअमिएण संकंतो ॥ ३७ ॥ गच्छंती वसिमेणं कुसुमपुरं धणवई वि संपत्ता । पियमेलयंमि तित्थे तवइ तवं तत्थ सा दुसहं ॥ ३८ ॥ सिंहलसीहविओए अभिग्गहं गिण्हए इमं बाला । जइ दइयं पिच्छिस्सं ता मोणवयं परिचइस्सं ॥ ३९ ॥ सिंहलसीहो वि तहिं पत्तेणेक्केण फलहखंडेण । तरिऊणं जलरासिं रयणउरं पुरवरं पत्तो ॥ ४० ॥ तत्थ नइतीरदेसे निसुणिय दुसहं जणस्स अक्कंदं । पुच्छइ एगं पुरिसं किमेयमह सो पयंपेइ ॥ ४१ ॥ इह रयणपहो राया पाणपिया रयणसुंदरी तस्स । रयणवई ताण सुया भुयगेणं अज्ज सा डसिया ॥ ४२ ॥ गारुडिएहिं विमुक्का मुय त्ति काऊण तो चियामज्झे । पक्खित्ता जलणो वि हु पउणो तेणेस अक्कंदो ॥ ४३ ॥ अह भणइ तस्स समुहं कुमरो दंसेसु तं निवइकन्नं । जइ पुण जीवइ कहमवि एसा मह मंतजंतेहिं ॥ ४४ ॥ सुणिऊण तस्स वयणं पुरिसो तं नेइ निवइपासंमि । भणइ अ एसो कुमरिं जीवाविस्सइ कुणह दिट्ठं ॥ ४५ ॥ दंसेइ निवो कुमरिं चिंधाणि मुणित्तु चिंतए कुमरो । जीवइ एसा अज्जवि ता सत्तिं कं पि पयडेमि ॥ ४६ ॥ दाऊण अंतरपडे चउद्दिसिं पवरमंतजोगेहिं । पउणीकया कुमारी तो सयलं हरिसियं नयरं ॥ ४७ ॥ राया नयरे धूयापहियजुओ पविसए विभूईए । तेण समं कन्नाए कुणेइ वारिज्जयं ज्झत्ति ॥ ४८ ॥ भूमीए सुअइ कुमरो बंभं पालेइ धणवइविओए । रयणवइए पुट्ठो कह न तुमं सुयसि पल्लंके ? ॥ ४९ ॥ जइ कहियइ सच्चं चिय ईसारोसं कुणेइ ता एसा । इय चिंतिऊण कुमरो समउच्चिय उत्तरं देई ॥ ५० ॥ देसावलोअणत्थं णिग्गच्छंतस्स मह इइ पइन्ना । बंभं भूमीसयणं जा नियजणए न पेच्छेमि ॥ ५१ ॥ रयणवई तं पभणइ धन्नो सो नाह ! जीवलोगंमि । कुलदेवयं व

जणए जो आराहेइ अणवरयं ॥ ५२ ॥ कुमरस्स गुणे दट्ठूण अहिणवे नरवई वि पुच्छेइ । को सि तुमं ? कत्तो व त्ति ? साहए सो तओ सव्वं ॥५३॥ तो हरिसपरो राया रयणवई विहवसंजुयं कुमरं । दिन्नामच्चसहायं सिंहलदीवंमि पेसेइ ॥५४॥ गच्छंताणं ताणं जलनिहिमज्झेण जाणवत्तेण । रयणवईए लुद्धो मंती अगणियकुलकलंकं ॥ ५५ ॥ वक्खित्तमणं कुमरं जलनिहिमज्झंमि खिवइ सो मंती । तं नाउं दुहियमणा अक्कंदं कुणइ रयणवई ॥ ५६ ॥ तो रुद्दनाममंती पभणइ दासो सया वि तुज्झ अहं । तं होसु मज्झ भज्जा अहऽन्नहा मरसि सिग्घं पि ॥ ५७ ॥ इय भणिया सा चिंतइ निक्करुणो एस कुणइ एयं पि । रक्खामि नियं सीलं किं पि हु इह उत्तरं दाउं ॥ ५८ ॥ मयकिच्चं तस्स अहं कुणेमि नो जाव ता न वत्तव्वं । जं किं पि तुमं भणिहिसि तओ परं तं चिय करिस्सं ॥ ५९ ॥ मंती वि[1] भणइ एवं हवउ तओ जंति ताइं वहणं पि । सहस त्ति दुहाजायं रुट्ठं पिव रुद्दमंतिम्मि ॥ ६० ॥ सा लद्धफलहखंडा उत्तरिऊणं पयाइ कुसुमपुरे[2] । रयणवई पियविरहे पत्ता पियमेलए तित्थे ॥ ६१ ॥ विरहानलतवियंगी जीवंतो एइ मज्झ जइ नाहो । ता मोणं मोत्तव्वं इय चिंतंती तवं कुणइ ॥ ६२ ॥ मंती वि मच्छपिट्ठिं लहिउं उल्लंघिऊण जलरासिं । संपत्तो कुसुमपुरे ओलग्गइ तं महीनाहं ॥ ६३ ॥ कुसुमसरेणं दिन्नं पुहईनाहेण[3] तस्स मंतिपयं । रज्जम्मि तंमि रुद्दो पहाणभावं समावन्नो[4] ॥ ६४ ॥ कुमरो वि हु निवडंतो उप्पाडेऊण आसमपयंमि । केण वि मुक्को पणमइ सविम्हओ तावसं तत्थ ॥ ६५ ॥ तावसवई वि दट्ठुं तस्स सरीरंमि रायचिंधाइं । रूववइं निवकन्नं[5] विवाहिउं हत्थमोयणए ॥ ६६ ॥ कंथं खुडियं खट्टं अप्पइ अ कहेइ देइ टंकसयं । निच्चं पढमा दुइया उ जाइ मणवंछिए ठाणे ॥ ६७ ॥

---

१ पभणइ C । २ कुसुमउरे C । ३ पुहवीनाहेण C । ४ समणुपत्तो C । ५ नियकन्नं B C ।

तं कुलवइं नमेउं भज्जजुओ चडिय खुडियखट्टाए । चिंतइ हियए गच्छसु जत्थ पिया धणवई मज्झ ॥ ६८ ॥ आगासेणं सा वि हु कुसुमपुरे जाव बाहिरुज्जाणे । संपत्ता ताव तओ रूववई तं पयंपेइ ॥ ६९ ॥ तिसिया हं नाह ! तुमं सलिलं आणेसु कइ व ठाणाओ । कंथं खट्टं भज्जं मुत्तूण जलस्स गहणत्थं ॥ ७० ॥ कूवंमि सो कुमारो पत्तो सप्पं निएइ तत्थेगं । मं कड्ढसु त्ति भणिरं एयाओ पुरिसभासाए ॥ ७१ ॥ कुमरो नियमुत्तरियं मुयइ अहो तत्थ लग्गए नागो । कड्ढइ वत्थेण समं सो कुमरं डसइ करकमले ॥ ७२ ॥ कुमरो विसप्पहावा संजाओ वामणो कुरूवो अ । सो तं भणइ सकोवं पडिउवयारो कओ उचिओ ॥ ७३ ॥ पडिउवयारो नूणं एसो चिय तुज्झ जाणिही कुमरो ! । अइसंकडंमि पडिओ खुज्जय[1] ! सुमरेसु मं झत्ति ॥ ७४ ॥ इय भणिऊणं नागो पत्तो अद्दंसणं तओ कुमरो । हरिसविसायसमेओ गहिय जलं चलइ सहस त्ति ॥ ७५ ॥ रूववईए सगासं आगंतूणं भणेइ वामणओ । पाणपिए ! पियसु तुमं अइसरसं सीयलं सलिलं ॥७६॥ अन्नपुरिसो त्ति काउं सा वि हु वेगेण जाइ अन्नत्थ । जोअइ सव्वं पि दिणं नियदइयं न उण पिच्छेइ ॥ ७७ ॥ पियमेलयंमि तित्थे तवइ तवं सा वि पियमविओए । तिण्णि वि तुण्हिक्काओ मीलियनयणाओ तिण्णे वि ॥ ७८ ॥ उक्तं च—एक्काए पउमिणीए नेहो सलहिज्जए जए नूणं । पाणप्पिअरविविरहे जा अन्नं पिच्छए नेव ॥७९॥ तत्थ ठियाणं ताणं आहारं देइ धम्मिओ लोओ । विगईए विणा कुणिऊण भोयणं निंति दियहाइं ॥८०॥ नरनाहो कुसुमसरो वुत्तंतं मुणिय[2] ताण लोयाओ । चिंतइ दोही किं पि हु महंतमिह कारणं एत्थ ॥८१॥ कोऊहलेण राया तत्थागच्छेइ परियणसमेओ । नयणवयणाण[3] चिट्ठं नहु ताणं पिक्खए कहवि ॥ ८२ ॥ तो पडहसद्दपुव्वं राया

१ खुज्ज A C । २ सुणिय C । ३ वयणनयणाण C ।

पभणेइ जो उ एयाओ। भासेइ तस्स सिग्घं कुसुमवइं देमि नियधूयं ॥ ८३ ॥ अह अवगणिओ तीए अइदुहिओ चिंतए मणे कुमरो। दिव्वंमि पराहुत्ते मणिच्छिअं होइ न कयावि ॥ ८४ ॥ भममाणो सो पत्तो तित्थे तत्थेव नियइ ताओ वि। तिन्नि वि मह भज्जाओ न उणो लक्खंति मं खुज्जं ॥ ८५ ॥ बहुदुक्खभरियहियओ जा चिंतइ ताण संगमोवायं। वाइज्जंतं पडहं ता निसुणइ छिवइ तं खुज्जो ॥ ८६ ॥ अह विंटणेण वेढिय फलहं कक्खाए खिविअ सो तत्थ। उवविसइ निवसमक्खं ताण सयासंमि हरिसपरो ॥ ८७ ॥ उस्सारिय विंटणयं फलहं हत्थंमि कुणिय पभणेइ। जो दुहिजणेहिं जाओ सो पिच्छइ अक्खराइं इहं (?) ॥ ८८ ॥ अइरम्मअक्खराइं लिहियाइं इत्थ केण [1]फलहिंमि। अनियंतो वि हु राया वक्खाणइ लज्जसंजुत्तो ॥८९॥ वाएऊणं खुज्जो वक्खाणइ ताण विम्हयं दिंतो। नियचरियं वित्थरओ लोओ वि हु सुणइ वक्खाणं ॥९०॥ सिंहलदीवे सिंहलसीहो मोएत्तु [2]वेरकरिकराओ। कुणिउं धणवइ भज्जं [3]चडिउं वहणे पडइ जलहिं ॥ ९१ ॥ अन्नं कहेमि कल्ले इय भणिउं पुत्थयं पि बंधेइ। तो धणवई मुणेउं नियपियचरियं इमं सव्वं ॥९२॥ चइऊणं मोणवयं तं पुच्छइ तस्स तत्थ किं जायं ?। सो वि पुणो पुण उट्ठइ पुणो पुणो पुच्छए सा वि ॥ ९३ ॥ तो भणइ फलहखंडं लहिउं जलहिं तरित्तु रयणउरे। रयणवइं जीवाविअ परिणिय पत्तो समुद्दंमि ॥९४॥ सो सचिवेणं जलहिंमि घल्लिओ एव कहिय उट्ठेइ। कल्ले अन्नं सव्वं कहिस्समह [4]मुणिअ नियचरियं ॥९५॥ रयणवई तं पुच्छइ किं जायं तस्स ? कहइ वामणओ। निवडंतो उप्पाडिय केण वि जलहीउ सो नीओ ॥९६॥ कम्मि वि तावसउडवे रूववइं तत्थ परिणिउं कन्नं। खट्टाकंथाजुत्तो कुसुमपुरे इत्थ सो पत्तो ॥९७॥ रूववईए भणिओ जलमाणेउं जलासए

१ फलहंमि C। २ करिवरकराओ C। ३ चडिओ वहणे C। ४ सुणिय C। ५ संपत्तो B C।

पत्तो । तो डसिओ सप्पेणं इय कहिउं उट्ठए खुज्जो ॥९८॥ कल्ले कहिस्समन्नं नियपियचरियं [1]मुणित्तु रूववई । किं संजायं तस्स ? त्ति सायरं पुच्छए खुज्जं ॥९९॥ तिन्नि वि वयणपराओ तिन्नि वि तस्संमुहं निअंतीओ । खुज्जयपुट्ठिं तिन्नि वि ताओ न चयंति जुवईओ ॥ १०० ॥ अवगन्निऊण ताओ निवइं मग्गेइ कुसुमवइकन्नं । मुणिऊण निअपइण्णं वीवाहं कुणइ सो सिग्घं ॥ १०१ ॥ कस्स वि नेव पमोओ नरवइलोअस्स तंमि वीवाहे । वामणउ त्ति भणित्ता को वि हु नो [2]मंगले देइ ॥१०२॥ तिन्नि वि जुवईओ तओ नियपिययमसुद्धिमत्थमाणाओ । मंगलधवले [3]खुज्जस्स दिंति ताउ चिय विवाहे ॥ १०३ ॥ छंदं कुणमाणीओ तिन्नि वि चिट्ठंति खुज्जपासंमि । गद्दहपाया वि जओ नियकज्जेणं मलिज्जंति ॥१०४॥ अह मग्गइ वीवाहे वामणओ हत्थमोयणं किं पि । हसिऊण भणइ सालो सप्पं गिण्हेसु फुप्फंतं ॥ १०५ ॥ जंपेइ तओ खुज्जो सप्पो चिअ होउ मज्झ पच्चक्खो । आगंतूणं सप्पो कओ वि सिग्घं डसइ हत्थे ॥ १०६ ॥ तो मुच्छं संपत्तो कुमरो पीडाइ पडइ महिवीढे । तिन्नि वि चिंतंति तओ जइ खुज्जो मरइ इह समए ॥ १०७ ॥ कत्तो पिययमसुद्धी हवेइ ता मरणमुचिअमम्हाणं । कुसुमवई वि हु चिंतइ पइमरणे नूण मह मरणं ॥ १०८ ॥ उक्तं च—अन्नं सव्वं पि दुहं कहमवि लोयाण नूण वीसरइ । वल्लहविओयदुक्खं जावज्जीवं पि सल्लेइ ॥ १०९ ॥ वल्लहविरहसरिच्छं अवरं दुक्खं न दीसए किं पि । जेणं सल्लंतेणं मरणं पि हु वंछए लोओ ॥ ११० ॥ निक्कारणजणदुज्जण ! रे दिव्व ! तहावि किं पि पभणेमो । वरि मरणं पि करेज्जा मा विरहो वल्लहजणस्स ॥ १११ ॥ मरणमणाओ चउरो वि ताउ उयरंमि दिंति जा छुरियं । ता सयलो वि हु लोओ अक्कंदइ मुक्कबाहभरो ॥ ११२ ॥ मा मा कुणेह तुज्झे अइगरुयं साहसं

१ मुणित्तु C । २ मंगलं देइ C । ३ खुज्जस्स तं दिंति ताओ चिय A ।

इमं सहसा । किं अप्पघायणेणं हवेइ मणवंछिया सिद्धी ? ॥ ११३ ॥ इय जा पभणइ लोओ मुच्छाविगमंमि सो पुणो खुज्जो । वरकंतिजुओ कामु व उट्ठए ता सहावत्थो ॥ ११४ ॥ विम्हइओ सयलजणो अपुव्वं पिच्छिऊण अच्छरियं । चउरो वि ताउ हियए नच्चंति अउव्वभावेणं ॥ ११५ ॥ सो पुव्वकहिअनागो देवो होऊण पभणए कुमरं । बंधवनेहेण अहं कहेमि तुह पुव्वभव-चरियं ॥ ११६ ॥ धणउरनयरे सेट्ठी धणंजओ तस्स धणवई भज्जा । धणदेवो धणदत्तो जुगलेणं ताण दो पुत्ता ॥ ११७ ॥ ते दुन्नि वि सुविणीया परोप्परं गाढनेहसंबद्धा । धम्मपरा दाणपरा सच्चपरा सीलसंजुत्ता ॥ ११८ ॥ अह गिम्हे कच्चोलं महुरज्जलसक्करापयसणाहं । धणदेवो पाणत्थं जा गिण्हइ नियइ ताव मुणी ॥ ११९ ॥ कह दुद्धं ! कह व मुणी ! कह मह भावो य इत्थ समयंमि ! । धन्नो हं इय चिंतिय दुद्धं पडिलाहए ज्झत्ति ॥१२०॥ सुद्धेणं भावेणं दाणं दिंतेण तेण हरिसेणं । देवाउयं निबद्धं अहो ! अहो ! दाणमाहप्पं ॥ १२१ ॥ इक्खुरसभरियकुंभो धणदत्तो एइ जाव गिहसमुहं । ता पिच्छइ मुणिजुयलं मग्गे तवउवसमसमेयं ॥ १२२ ॥ इक्खुरसेणं एगं तुंबं भरिऊण वंदए तत्तो । थोवु त्ति तओ दुइयं भरिऊणं नमइ मुणिचलणे ॥ १२३ ॥ जा जाइ किं पि ता वलिय ज्झत्ति भत्तीए भरई अ कडाहं । तो पुण वि नमिअ पेच्छइ इक्खुरसं कुंभए थोवं ॥१२४॥ नीए गिहे अणत्थो दिज्जंतो कस्स पुज्जए एसो ? । इय चिंतिऊण सव्वं पि देइ दुइयम्मि य कडाहे ॥१२५॥ अह आउं पालित्ता मरंति ते दो वि तत्थ धणदेवो । देवत्तं संपत्तो धणदत्तो उण तुमं जाओ ॥ १२६ ॥ भावेहिं चउहिं खंडत्तएण दिन्नो मुणीण इक्खुरसो । चउभावदाणजोगा भज्जचउक्कं तओ तुज्झ ॥ १२७ ॥ खंडत्तयभावाओ दुक्खं पत्तो सि तिन्नि वेलाओ । सुहभावदाणजोगा मह उण देवत्तणं जायं ॥ १२८ ॥ जलनिहिपडिओ उप्पाडिऊण मुक्को मए तया उडवे । जं तुह सत्तू

मंती इत्थ कओ तेण वामणओ ॥ १२९ ॥ डसिऊण तंमि ठाणे पुव्वनिहित्तं विसं मए हरियं। पुव्वभवसिणेहेणं एयं सव्वं पि परिविहिअं ॥ १३० ॥ सुणिऊणं नियचरियं सिंहलसीहस्स तत्थ संजायं। जाइस्सरणं तो झत्ति पेच्छए पुव्वभवमेसो ॥ १३१ ॥ इय कहिउं वुत्तंतं देवो अद्दंसणं गओ तत्तो। महिनाहेणं पुट्ठो नियचरियं कहइ कुमरो वि ॥ १३२ ॥ कुमरेणं पुट्ठाओ गाढं दुक्खेण जुत्तहिययाओ। भज्जाओ वित्थरओ साहिंति नियं नियं चरियं ॥ १३३ ॥ कुमरं रयणवइं पि हु नियअवराहं खमावए रुद्दो। ताइं वि अभयं वियरंति मंतिणो दीणवयणस्स ॥ १३४ ॥ अह कुसुमसरो राया सिंहलदीवंमि पेसए कुमरं। भज्जाचउक्क-जुत्तं पुन्नसहायं विभूईए ॥ १३५ ॥ खुडियं खट्टं आरुहिय वेगओ नहपहेण संपत्तो। जणणिजणयाण चलणे सिंहलसीहो नमइ तत्तो ॥ १३६ ॥ धणवइरयणवई वि य रूववई तह य कुसुमवइभज्जा। चउरो वि हु वहुयाओ नमंति ससुराण पयकमले ॥ १३७ ॥ जणणी भणइ सदुक्खं तुह विरहे वच्छ! जं न मह हिययं। फुट्टं तड त्ति ता खलु विहिणा वज्जेण संघडियं ॥ १३८ ॥ सो लज्जाए अहोमुहमवलोयइ गाढमाणसंजुत्तो। जणओ नियउच्छंगे सीहलसीहं तओ कुणइ ॥ १३९ ॥ कंथापहावजुत्तो अदरिद्दं कुणइ सयलमहिवलयं। सव्वाइं ताइं कालं गमेंति अइसोक्खभावेणं ॥ १४० ॥ अइदुग्घडचरियाइं सविसेसं मुणिय भवसरूवाइं। नियआउं पालेउं पंच वि पत्ताइं देवत्तं ॥ १४१ ॥

इति दानविषये धनदेवधनदत्तकथानकं समाप्तम्।

श्रीसम्यक्त्वप्रभावे धनश्रेष्ठिकथानकम्—तं नत्थि जं न सिज्झइ संमत्तं इत्थ पालयंताणं। जह लच्छी संपत्ता विउला धणसेट्ठिणा पुव्विं ॥ १ ॥ धणउरमत्थि पुरवरं धणुद्धरो नाम तत्थ भूवालो। सेट्ठी धणाभिहाणो धणदेवी भारिया तस्स ॥ २ ॥ धणचंदो धणपालो धणदेवो धणगिरी इमे चउरो। संजाया ताण सुया गंभीरा चउसमुद्द व्व ॥ ३ ॥ धंधी–धामी–धणदी–धणसिरिनामाउ ताण अह कमसो। जायाओ भज्जाओ निच्चं नेहेण जुत्ताओ ॥ ४ ॥ धणसेट्ठी विहवेणं वित्थरिओ चिंतए सुहमईए। रयणीइ चरिमजामे लच्छिसरूवं विसेसेण ॥५॥ पाएणं आजम्मं लच्छीए थिरत्तणं न पिच्छेमि। पुरिसुत्तमो वि चत्तो जीए निच्चं पि अणुरत्तो ॥ ६ ॥ उक्तं च—खणदिट्ठा खणनट्ठा लच्छी विज्जु व्व कुडिलसब्भावा। इय मुणिऊणं तीए केण वि गव्वो न कायव्वो ॥ ७ ॥ इय लच्छीइ इमाए गिण्हामि फलं सयं विढत्ताए। कारविय जिणाययणं दुत्तरभव-जलहिबोहित्थं ॥८॥ तो जाइ निवसयासे थालं भरिऊण रम्मरयणाणं। तं गहिऊणं राया भणइ धणं वरसु मणइट्ठं? ॥९॥ जिणभवणजोग्गभूमिं मग्गइ सो देइ तं धणो कुणइ। सोवन्नथंभसोवाणपंतिवरनीलमणिपडिमं ॥ १० ॥ गयणग्गलग्गसिहरं अणेगलहुदेवउलियसंजुत्तं। कणयमयकलसदंडं सिवपुरपहगइविमाणं व ॥११॥ फलकुसुमगंधनेवज्जसलिलअक्खयपईवधूवेहिं। तिक्कालं जिणपडिमं सो पूयइ भत्तिसंजुत्तो ॥ १२ ॥ इय सो गमेइ कालं जा किं पि हु हरिसनिब्भरो सेट्ठी। ता पुव्वकम्म-भावा जं जायं [1] तं निसामेह ॥ १३ ॥ जं दव्वं भूमीए खित्तं तं वंतरेहिं अवहरियं। जं दिन्नं लोयाणं [2] तं नो कहमवि लहइ सेट्ठी ॥ १४ ॥ जं वहणे पक्खित्तं तं पुण जलहिम्मि सयलमवि थक्कं। किं बहुणा? [3] रोरसमो सेट्ठी जाओ धणो झत्ति ॥ १५ ॥

---

१ इयमार्या A संज्ञकप्रतावेवास्ति। २ तस्स तं सुणसु A। ३ तं पि न कहमवि A।

सो मुणिय भवसरूवो न दीणभावं पयासए कहवि । भज्जा तणया य पुणो भणंति तं गाढदुहियमणा ॥ १६ ॥ बहुधम्म-वयवसओ दारिद्दं सेट्ठि ! तुम्ह संजायं । इय भणियस्स वि से ल्हसइ नेव धम्मंमि बहुमाणो ॥ १७ ॥ धम्मत्थवयवसओ दइए ! जायं न अम्ह दारिद्दं । पुव्वकियकम्माणं मुणह विवागं इमं तुब्भे ॥ १८ ॥ जं पि य तं पि य काउं वाणिज्जं नो तरंति ते तत्थ । नंदिग्गामे ताइं गयाइं चइऊण नियनयरं ॥ १९ ॥ सव्वाइं ताइं महया दुक्खेणं[1] निग्गमंति दियहाइं । पुट्टलयं[2] काऊणं संझाए मिलंति भुंजस्स[3] ॥ २० ॥ एक्कं सेट्ठिं मोत्तुं सिढिलियधम्माइं ताइं जायाइं । धम्माउ वि दारिद्दं नो गच्छइ इय विचिंतेउं ॥ २१ ॥ सेट्ठी निच्चलचित्तो धम्मे भावं चएइ नो कहवि । सम्मत्तसुद्धहियओ गमेइ सो कइवयदिणाइं ॥ २२ ॥ अन्नदियहंमि सेट्ठी सकुडुंबं भणइ महुरवयणेहिं । एगं वेलं जइ नियबिम्बं पिच्छामि ता धन्नो ॥ २३ ॥ तो सव्वाइं वि ताइं अक्कोसं देंति गाढदुक्खाइं । जंपंति य देवगिहाइधम्मिओ तुह गया लच्छी ॥ २४ ॥ तो एयाइं गरुयं कम्मं बंधंति इय अपुच्छित्तु । धणउरनयरे गच्छइ एगागी तह जिणाययणे ॥ २५ ॥ संबलनिमित्तमेगो चिट्ठइ गंठिम्मि रूवओ मज्झ । एएण अहं गिण्हामि रम्मकुसुमाइं पूयकए ॥ २६ ॥ उववासो मज्झ हविज्ज अज्ज चउमासयं जओ पव्वं । कल्ले पुण पारणयं जहतहवि हविस्सई नूणं ॥ २७ ॥ इय चिंतिऊण कुसुमाइं गिण्हिउं धूलिमलिणदेहो वि । सुहभावनिम्मलमणो भत्तीए कुणइ जिणपूयं ॥ २८ ॥ सुद्धेणं भावेणं तेणं दुत्थेण तंमि समयंमि । जं अज्जियं सुपुण्णं तं मुणइ विसिट्ठनाणजुओ ॥ २९ ॥ तो वंदिऊण देवे वसहिं गंतूण नमइ गुरुचलणे । निसुणइ धम्मं संझाइ तेहि अह पभणिओ सेट्ठी ॥ ३० ॥ वसहीए

१ दुक्खेण गमिंति तत्थ दियहाइं A । २ पोट्टलयं कुणिऊणं A । ३ भोज्जस्स A ।

पिट्ठिभाए सुन्नं गिहमेगमत्थि तत्थेव । पडिक्कमणज्झाणसज्झायसावहाणो निसिं नेसु ॥ ३१ ॥ केणावि कारणेणं नूणं गुरुणो भणंति इय सिट्ठी । निस्सीहियं भणित्ता तं पविसइ निव्वियारमणो ॥ ३२ ॥ रुहिरखरंटियमहियलअणेगभीसणकरंककंकाले । सो तत्थ एगकोणं पडिलेहिअ कुणइ पडिक्कमणं ॥ ३३ ॥ सज्झायमह कुणंतो वक्खाणंते(°णेइ) सयं पि परमत्थं । जो कुणइ जीवहिंसं सो पावइ नरयदुक्खाइं ॥ ३४ ॥ करुणारसरसियमणो जो अभयं देइ सव्वजीवाणं । सो लहइ विउलरिद्धिं मणिच्छियं उभयलोए वि ॥ ३५ ॥ एवं रयणिं सयलं सज्झायं कुणिय देसणासहियं । जा निग्गच्छइ सेट्ठी ता पुरओ नियइ नरमेगं ॥ ३६ ॥ सो संजसं पयंपइ सावय ! गेहस्सिमस्स नाहो हं । मुच्छाए मरिऊणं विहिवसओ वंतरो जाओ ॥ ३७ ॥ न कयं जं महकिच्चं कुडुंबलोएण भूरिभणिएण । किं बहुणा जलकरवयसरावमित्तं पि नो दिन्नं ॥ ३८ ॥ तो अहह ! दुट्ठमइणा विणासियं नियकुडुंबमखिलमवि । सुन्नमहिट्ठियमेयं गेहं मुच्छाए नडिएण ॥ ३९ ॥ दुपयं व चउप्पयं वा जं किं पि हु इत्थ पविसए कहवि । तं मारेमि अवस्सं करुणारहिओ विरसमाणं ॥ ४० ॥ अज्ज तुह देसणाए हिंसं मुणिऊण नरयदुहजणणिं । मह जाओ सुहभावो ता वरसु मणिच्छियं भद्द ! ॥ ४१ ॥ तो पभणइ तं सेट्ठी पओयणं नत्थि भद्द ! केणावि । एयं चिय कुणसु तुमं चएसु हिंसं दुहावासं ॥ ४२ ॥ सो आह सुहय ! हिंसा चत्त च्चिय तुज्झ देसणासवणे । अन्नं मग्गसु जेणं देवाण न दंसणं विहलं ॥ ४३ ॥ तो सेट्ठी सविमरिसं चिंतइ गुरुणो सुनाणिणो मज्झ । अज्ज रयणीइ जेहिं दिट्ठो मह भाविओ लाहो ॥ ४४ ॥ अन्नह कह पडिक्कमणाइ कारिओ तेहिं इत्थ भूयघरे । आह सुरो किं चिंतसि वारं वारं मए

---

१ मज्झ केणावि A ।

२

भणिओ ॥ ४५ ॥ जंपेइ धणो सेट्ठी नियगुरुं पुच्छिउं विमग्गेमि । हरिसपरेणं तेणाणुमन्निओ जाइ वसहीए ॥ ४६ ॥
पणमइ गुरूण चलणे नाणेणं मुणिय रयणिवुत्तंतं । पभणंति ते वि मग्गसु एयं चिय सिद्धि ! सुरपासे ॥ ४७ ॥ जा कल्ले
भावेणं कया मए जिणवरस्स वरपूया । तीइ च्चिय पच्चक्खं मज्झ फलं देसु दाणिं पि ॥ ४८ ॥ सो वि हु वंतरपासे तं चिय
मग्गेइ तत्थ गंतूण । पभणेइ सुरो सम्मं तीए फलं देवरिद्धीओ ॥ ४९ ॥ अणहुंताओ ताओ तुम्हं दाउं न अत्थि मह सत्ती ।
देवा वि हु लोयाणं देंति फलं अप्पसाहीणं ॥ ५० ॥ जं पुण मह साहीणं अत्थि निहाणं इमंमि कोणंमि । चउलक्खदम्ममाणं
तं गिण्हसु गेहमेयं च ॥ ५१ ॥ इय भणिऊणं देवो पत्तो अद्दंसणं तओ सेट्ठी । जा पेच्छइ तं ठाणं पयडीहूयं ता निहाणं
॥ ५२ ॥ तो चिंतइ धणसेट्ठी निच्चलभावाउ मज्झ धम्मंमि । जाया पुणो वि रिद्धी अहो ! अहो ! जिणमयपहावो ॥ ५३ ॥
तं गिण्हिऊण किं पि हु दविणं संबलनिमित्तमइनिहुओ । दाउं गिहस्स दारं विणिग्गओ हरिससंजुत्तो ॥ ५४ ॥ गंतूण चेइ-
यहरे जिणस्स पूयं विसेसओ काउं । आगम्म गुरुसयासं हरिसियचित्तो नमिअ तत्तो ॥ ५५ ॥ कस्स वि गेहे भोयणसामग्गिं
ज्झत्ति कारवेऊणं । पडिलाभिय मुणिजुयलं कुणइ तओ पारणं सेट्ठी ॥ ५६ ॥ अह धणसेट्ठी जिणगुरुचलणे नमिऊण जाइ
नियगामे । धम्मंमि दिन्नचित्तो विसइ तओ अप्पणो गेहं ॥ ५७ ॥ कोइ न पुच्छइ वत्तं गिहंमि पत्तस्स तस्स सेट्ठिस्स ।
पत्तेयं रयणीए नियं कुडुंबं भणइ तत्तो ॥ ५८ ॥ धणउरनयरंमि मए लद्धं रम्मं निहाणमइविउलं । ता गंतव्वमवस्सं तत्थ
तओ तेहिं सो भणिओ ॥ ५९ ॥ तुह गहिलत्तं जायं दविणं दविणं ति झंखमाणस्स । अम्हाणं नामं पि हु तत्थ पुरे जाइ न
कया वि ॥ ६० ॥ लहुपुत्तो नेहपरो पभणइ भत्तीए धणगिरी एवं । आगच्छिस्सामि अहं तए समं ताय !

तत्थ पुरे ॥ ६१ ॥ सो धणसेट्ठी धणगिरितणयं गहिऊण धणसिरिसमेयं । धणउरनयरे गच्छइ सुरदिन्ने विसइ नियगेहे ॥ ६२ ॥ तत्तो नरवइपुरओ उवायणं करिय कहइ सुरचरियं । सम्मत्तरंजियमणो सो वियरइ तस्स सेट्ठिपयं ॥ ६३ ॥ अह कड्ढिउं निहाणं तणयस्स समप्पिउं सयं सेट्ठी । धम्मपरु च्चिय चिट्ठइ मुणिऊणं तस्स माहप्पं ॥ ६४ ॥ जिणधम्मदिन्नचित्तो ववहारं कुणइ धणगिरी निच्चं । विहवेणं लोएण य कित्तीए पसरिओ तत्थ ॥ ६५ ॥ सोऊण से पसिद्धिं कुडुंबलोओ वि लज्जिओ धणियं । आगंतुं नो सक्कइ धणउरनयरंमि दीणमणो ॥ ६६ ॥ अन्नदिणे लहुपुत्तो परिभावइ किंतु मज्झ विहवेणं । अइदुक्खेणं जणणी चिट्ठइ तह भाउणो मज्झ ॥ ६७ ॥ किं तेणं तणएणं जीवंतेणावि इत्थलोयंमि । आजम्मं नियजणणी सुक्खेणं धरइ जो नेव ॥ ६८ ॥ इय चिंतिय नियजणयं पयंपए गाढभत्तिसंजुत्तो । आणेमि इत्थ जणणिं तुम्हाएसेण सकुडुंबं ॥ ६९ ॥ जंपेइ तओ सेट्ठी जं तुह उचियं कुणेसु तं वच्छ ! । सो लद्धसमाएसो नंदिग्गामंमि संपत्तो ॥ ७० ॥ भायजणं नियजणणिं पणमिय गामाओ आणइ सुहेण । धणउरपुरंमि ताइं धम्मपराइं तु चिट्ठंति ॥ ७१ ॥ अन्नदिणे गुरुचलणे भत्तीइ नमित्तु पुच्छए सिट्ठी । कह जाया मह रिद्धी ? गया कहं ? कह व संपत्ता ? ॥ ७२ ॥ अइसयनाणेण मुणी पुव्वभवं कहइ तस्स संखेवा । थलउरगामे सूरो नामासि तुमं वरो सेट्ठी ॥ ७३ ॥ दाणपहावसमज्जियकित्तिभरो सच्चसीलगुणकलिओ । सिद्धंतसवणनिम्मलचित्तो जिणधम्मसंजुत्तो ॥ ७४ ॥ अह अन्नया कयाई तुमए मग्गंमि गच्छमाणेण । पडिओ महीइ दिट्ठो हारो एगो सुबहुमुल्लो ॥ ७५ ॥ आजम्मं मह होही एयस्स पहावओ अदारिद्दं । इय चिंतिय लोहेणं तुमए सहस त्ति सो गहिओ

॥ ७६ ॥ तत्थ ठिएण वि तुमए चिंतियमेयं परस्स वत्थुमिणं । अवहरमाणस्स महं होही सम्मत्तपरिहाणी ॥ ७७ ॥ ता[1] अलमिमिणा मह नियनियमभंगक्खमेण हारेण । तं मुत्तुं तत्थ च्चिय अन्नत्थ तुमं तओ पत्तो ॥७८॥ सुहभावो कालेणं मरिउं जाओ तुमित्थ धणसेट्ठी । सम्मत्तपहावाओ पढमं जाया तुह समिद्धी ॥ ७९ ॥ परहारगहणअज्जियदुकम्मेणं समागयं तुज्झ । दारिद्दं जा मुक्को तं तेण पुणो वि तुह रिद्धी ॥ ८० ॥ इय पुव्वभवं सुणिउं सेट्ठी संजायजाइसरणो सो । गहियवओ संपत्तो देवत्तं पुन्नभावेणं[2] ॥ ८१ ॥ इति सम्यक्त्वप्रभावे धनश्रेष्ठिकथानकं समाप्तम् ।

दानविषये चंडगोवालकथानकम्—तं नत्थि किं पि लोए जं सिज्झइ नेव दाणमहिमाए । जह चंडगोवालेणं पत्ताओ देवरिद्धीओ ॥१॥ अत्थि विसालं नयरं रिद्धीए गयणवल्लहभिहाणं । तं पालइ नरनाहो धम्मरहो नाम धम्मपरो ॥२॥ नयरपहाणो सिट्ठी नामेणं कंथओ वसइ तत्थ । धम्मवई पाणपिया संजाया तस्स मणइट्ठा ॥३॥ जइवि नियदव्वसंखं कंथयसेट्ठी न याणइ तहावि । ओवज्जणं कुणंतो रयणिदिणं पि हु भमइ निच्चं ॥ ४ ॥ अह ताण जाइ कालो सेवंताणं सया वि विसयसुहं । पुव्वज्जियपुन्नपहावमिलियवित्ताणं (°चित्ताणं) दुण्हं पि ॥ ५ ॥ अन्नदियहंमि चिंतापरवसा कुणइ भोयणं नेव । अइदुक्खदुक्खियमणा चिट्ठइ मोणेण धम्मवई ॥६॥ जाणियवुत्तंतेणं भणिया सा सेट्ठिणा सदुक्खेण । दइए ! न हु मोणेणं पओयणं सिज्झए किं पि ! ॥७॥ जं किं पि तुज्झ दुक्खं अइदुसहं अत्थि हिययमज्झंमि । तं जइ मह कहणिज्जं हवेइ ता कहसु सहस त्ति ॥८॥ अह हसिउं सा जंपइ पिय ! किं तुह अत्थि एरिसं पिम्मं । जं मह सम्मुहं पभणसि एयं वयणं तुमं अज्ज ॥ ९ ॥ जं तुह

१ ता अलमिमिणा नियनियमभंगकरणक्खमे■ हारेण B । २ पुन्नभावाण A ।

वि अकहणिज्जं तं दिट्ठं किं पि कहवि मह पासे ?। कुलमहिलाणं खलु जीवियं पि नियनाहसाहीणं ॥१०॥ दुहकारणंमि कहिए होही तुज्झ वि मणस्स संतावो । इय नो कहियं अइ आगहो(अग्गहो) त्ति ता संपयं सुणसु ॥ ११ ॥ तं किं पि नत्थि जं न हु तुम्ह पसाएण सिज्झई मज्झ । एयं चिय मह दुक्खं पुत्तमुहं जं न पिच्छामि ॥ १२ ॥ तत्तो पभणइ सेट्ठी किं किज्जइ ? पियमे ! विसमवडिए । अत्थे इमंमि नूणं पुव्वज्जियकम्मसाहीणे ॥ १३ ॥ नो विहवेणं न परक्कमेणं बुद्धीए नेव न गुणेहिं । एसो अत्थो सिज्झइ पुरिसाणं पुन्नसाहीणो ॥ १४ ॥ तहवि मए जइयव्वं पुत्तत्थे कुणसु भोयणं दइए ! । जेण कुणेमि अहं पि हु तो दुन्नि वि ज्झत्ति भुंजंति ॥ १५ ॥ अह सा भणेइ दइयं मह कहवि होइ ताव न हु तणओ । पुत्तत्थे नाह ! तुमं अन्नं परिणेसु वरकन्नं ॥ १६ ॥ सेट्ठी पभणइ दइए ! दट्ठूणं मज्झ पियय्मं दुइयं । तुज्झ हविस्सइ ईसा दुक्खं गरुयं पुणो पच्छा ॥ १७ ॥ मा पिययम ! भण एवं तुह सवहो जइ धरेमि किं पि दुहं । तीए भणिओ परिणइ सिट्ठिधूयं जसवइभिहाणं ॥१८॥ तीए वि न हवइ पुत्तो अन्नमुवायं तओ अलहमाणो । नयरस्स दूरभाए काली देवी समत्थि तहिं ॥ १९ ॥ सा त्रि हु नयरजणाणं मणिच्छिए पच्चए य पूरेइ । कंथयसेट्ठी गंतूण तत्थ तं पूयए ज्झत्ति ॥ २० ॥ सो तत्थ ठिओ चिट्ठइ नियमं काउं मणंमि जइ एसा । वियरिस्सइ मह पुत्तं ता गच्छिस्सं नियं गेहं ॥ २१ ॥ तं निच्छयं मुणेउं सा वि हु पयडी-हवित्तु पभणेइ । तुट्ठा हं वरसु वरं सो जंपइ देसु मह पुत्तं ॥ २२ ॥ मह अत्थि पुरोहडए चूयतरू तस्स फलदुगं गहिउं । अप्पेसु जसवईए भविस्सई तीए पुत्तदुगं ॥ २३ ॥ पढमं पुत्तं अप्पसु धम्मवईए परं जसवईए । इय कहिऊणं देवी तक्खणम-हंसणं पत्ता ॥ २४ ॥ बहुपुत्तलोहजुत्तो सिट्ठी गिण्हित्तु सत्तअंबाइं । पमुइयचित्तो सगिहं पत्तो सव्वं कहइ वुत्तं ॥ २५ ॥

जा पिच्छइ अंबाइं दुन्नि चिय ताव तत्थ चिट्ठंति । अप्पइ लहुभज्जाए सिग्घं सा भक्खए हिट्ठा ॥ २६ ॥ तंमि वि दिणंमि पवरे जाओ गब्भस्स संभवो तीए । सा पडिपुन्ने काले पसवइ पुत्तं तओ एगं ॥ २७ ॥ तणुकंतिसमुज्जोइयदिसिवलयं सव्वलक्खणसमेयं । तं पिच्छिऊण चिंतइ हिट्ठमणा जसवई हियए ॥ २८ ॥ एसो रम्मो पुत्तो पढमो मज्झेव गुणनिही हवउ । जो पुण होही दुइओ धम्मवईए तमप्पिस्सं ॥ २९ ॥ इय चिंतियम्मि दुइओ न हु जायइ देवयापहावेण । जसवइउयरंमि तओ अइगाढा वेयणा जाया ॥ ३० ॥ तो अप्पइ पढमं चि हु सिग्घं धम्मवईए नियं पढमपुत्तं । अह दुइयं पसवेई देवपहावा जसवई वि ॥ ३१ ॥ धम्मवई हिट्ठमणा नियनाहं पइ पयंपए सिग्घं । महया विच्छड्डेणं वरजम्ममहूसवं कुणसु ॥ ३२ ॥ सेट्ठी वि तओ पभणइ दइए ! दुक्खेण अज्जिओ अत्थो । सहिऊण छुहं सीयं तावं अन्नं पि बहु दुक्खं ॥ ३३ ॥ ता अम्ह इमे पुत्ता न उणो परसंतिया हविस्संति । नियअत्थो मुहियाए वयइज्जइ कह णु जम्ममहे ॥ ३४ ॥ एउं (एअं) सुणिउं पढमो पुत्तो पभणेइ उच्चवयणेण । सुण ताय ! मज्झ वयणं कालीदेवीए भुवणंमि ॥ ३५ ॥ चूयतरुअहोभाए कलसो चिट्ठेइ रयणवरभरिओ । तं आणेउं मह उच्छवेसु वियरेसु सव्वेसु ॥ ३६ ॥ इय सुणिउं भयभीओ सेट्ठी चिंतेइ कह णु बालो वि । जंपइ उच्चसरेणं न हु पुत्तो एस किं भूयं? ॥ ३७ ॥ तो पुण वि भणइ बालो मा बीहसु ताय ! गच्छ तर्हि सिग्घं । कम्मयरं गहिऊणं आयड्ढइ खणिय जो सिग्घं ॥ ३८ ॥ कोऊहलेण सेट्ठी लोमवसेण य गओ सकम्मयरो । आयड्ढिऊण कलसं सो अप्पई सेट्ठिहत्थम्मि ॥ ३९ ॥ सो हरिसपरवसंगो तं गहिऊणं खिवेइ कक्खाए । मा कहसु कस्स वि इमं सव्वंहं वियरइ पुणो तस्स ॥ ४० ॥ आगंतूणं गेहे सेट्ठी रिद्धीए कुणइ जम्ममहं । अंब-

पहावा जाओ अंबकुमारो तओ नामं ॥ ४१ ॥ दुइयस्स वि तम्मि दिणे सिद्धकुमारो त्ति नाम संजायं । सो कम्मयरो पिच्छिय तं कलसं चिंतए हियए ॥ ४२ ॥ एसा अउव्ववत्ता चिट्ठंती मज्झ उयरमज्झंमि । गाढं जणेइ दुक्खं कुणमाणा कलकलारावं ॥ ४३ ॥ ता दुइयस्स य कस्स वि कहिउं उयरं कुणेमि अइसुहियं । अहवा कयसवहो कह कहेमि अन्नस्स कइयावि ॥ ४४ ॥ तो कम्मयरो रन्ने गंतुं वाडिजुअअंबविवरंमि । पविसिय वाहरइ तओ उच्चसरेणं तहिं सिग्घं ॥ ४५ ॥ मह सिट्ठिणा इयाणिं गहिओ मणिरयणपूरिओ कलसो । कालियभुवणे सहयारपरिसरे अप्पिओ य मए ॥ ४६ ॥ इय सो वाहरिऊणं पुणो पुणो कुणइ जाव उयरसुहं । ता पच्छन्नठिएणं सुणियं तं केण वि नरेण ॥ ४७ ॥ इय कारणेण कत्थ वि कहवि न भासिज्जए अकहणिज्जं । वाडीइ वि खलु कन्ना हवंति कइयावि सच्चमिणं ॥ ४८ ॥ अह पुरिसो गंतूणं निवइसयासंमि कहइ सव्वं पि । सो भणइ मंतिसमुहं कंथयसेट्ठिं इहाणेसु ॥४९॥ मंती वि हु आएसइ धरणत्थं कंथयस्स पुरिसजुगं । तंमि वि समए पभणइ अंबकुमारो नियं जणयं ॥ ५० ॥ ताय ! तुह निवइपुरिसा धरणत्थं इंति इय सुणेऊण । सेट्ठी वि भणइ कलसो न हु लच्छी किं पुण अलच्छी ? ॥ ५१ ॥ नरनाहो रुट्ठमणो गिण्हिस्सइ सव्वमेव गिहसारं । इअ चिंतिऊण सव्वं दव्वं सो खिवइ भूमीए ॥ ५२ ॥ आउलवाउलहियओ चिट्ठइ सेट्ठी वि भणेइ ता पुत्तो । मइ इत्थ विज्जमाणे किं को वि हु कुणइ तुह किं पि ? ॥ ५३ ॥ जा एवं अन्नोन्नं भणंति ते ताव आगया पुरिसा । सेट्ठि ! तुमं नरनाहो हक्कारइ ते पयंपंति ॥ ५४ ॥ कंपइ सेट्ठी वि तओ पालणयाओ स नीहरेऊण । अंबकुमारो दुन्नि वि आहणई करचवेडाए ॥ ५५ ॥ ते तप्पहारजज्जरियदेहविगलंतरुहिरमुहनासा । कहकहवि वलेऊणं नरवइपासंमि संपत्ता ॥ ५६ ॥ सेट्ठी वि तओ पभणइ अइगाढं कंपमाणकरचरणो ।

दइए ! एवं सोक्खं जायं तणएण जाएण ॥ ५७ ॥ पालणयंमि पसुत्तो अंबकुमारो वि भणइ हसिऊण । मज्झ पहावा सोक्खं तुम्हाण हविस्सई नूणं ॥ ५८ ॥ तस्स पहावा जाओ गेहस्स चउद्दिसिं पि पायारो । गयणग्गलग्गसिहरो तं पिच्छिअ विम्हिओ सेट्ठी ॥ ५९ ॥ ते पिच्छिऊण निवई रोसारुणलोयणो पयंपेइ । रे ! रे ! आणह सिग्घं पुत्तजुयं कंथयं सेट्ठिं ॥ ६० ॥ अह भणइ बुद्धिसागरमंती नरनाह ! सो न सामन्नो । कंथयपुत्तो बालेण जेण तुह आहया पुरिसा ॥ ६१ ॥ एसो उत्तमपुरिसो लिज्जइ भत्तीए न उण कोवेण । जुत्तिजुअं तव्वयणं मुणिउं मंतिं भणइ निवई ॥ ६२ ॥ सो केरिसो सुओ जो दीसइ जस्सेरिसो गुरुपहावो । मंतिवर ! गच्छ सिग्घं आणसु तं कहवि इत्थ तुमं ॥ ६३ ॥ अह भणइ अंबकुमरो जणयं इह ताय ! एइ मंतिवरो । सेट्ठी वि हु भयभीओ पोलिदुवाराइं ढंकेइ ॥ ६४ ॥ तो पुण वि वयइ पुत्तो भत्तिजुओ एइ न उण कोवपरो । ऊससिऊणं सेट्ठी उग्घाडइ ज्झत्ति दाराइं ॥ ६५ ॥ संपत्तो सो सचिवो उववसिई नेव आसणे मुक्के । इय भणइ तुज्झ गेहे उवद्दवं किं पि न कुणेमि ॥ ६६ ॥ तुह पुत्तदंसणूसुयमहिवइणा सिट्ठि ! पेसिओ अहयं । आहवणत्थं तं गिण्हिऊण तणयं तुमं चलसु ॥ ६७ ॥ तं सुणिय मंतिवयणं भयविहुरो जाव चिट्ठए सेट्ठी । ता भणइ अंबकुमरो मंति ! अहं आगमिस्सामि ॥ ६८ ॥ मंती पालणयठियं भासंतं पिच्छिऊण तं कुमरं । विम्हियहियओ गच्छइ ससिट्ठितणओ निवसयासे ॥ ६९ ॥ निवलक्खणोववेयं अउव्वचरियं सुए असंजुत्तं । तं पेच्छिऊण बालं नरनाहो विम्हिओ बाढं ॥ ७० ॥ गहिऊणं उच्छंगे नरनाहो वज्जरेइ तं कुमरं । सो तं जंपइ वयणं जं पइ कोऊहलं जणइ ॥ ७१ ॥ अंबकुमार ! इयाणिं नियवुत्तंतं कहेसु भणइ निवो । सो पडिभणेइ संपइ गच्छ तुमं सिग्घमुज्जाणं ॥ ७२ ॥ केवलनाणी तत्थ य समोसढो सो वि सयमेव । मह तुह वि

चरियमेयं सव्वं साहिस्सए सम्मं ॥ ७३ ॥ तं वयणं सोऊणं अइविम्हियमाणसो महीनाहो । नयरजणसिट्ठिपुत्तय-धम्मवईजसवईसहिओ ॥ ७४ ॥ धवलगिहाओ पत्तो उज्जाणे ज्झत्ति नमइ केवलिणं । वियरेइ धम्मलाहं सो वि तओ तस्स सुहजणयं ॥ ७५ ॥ उचियासणोवविट्ठे सयलजणे तत्थ केवली भणइ । संदेहहरणकारणमेयं वयणं सुण नरिंद ! ॥ ७६ ॥ जं न हु संभाविज्जइ तं पि हु दीसेइ इत्थ संसारे । नियपुव्वकम्मजोगा दिट्ठंतो एस इह बालो ॥ ७७ ॥ एगंमि गोयलंमी चंडपयंडा सहोयरा दुन्नि । निवसंति पियथमाओ चंडिपयंडीउ ताण कमा ॥ ७८ ॥ चंडस्स अत्थि पुत्तो सुपयंडो नाम अन्नसमयंमि । मरिऊण खीरिथालं उववट्टिा चंडसुपयंडा ॥ ७९ ॥ ता पत्तं मुणिजुयलं चंडो वियरेइ ताण तं खीरिं । एवं सुपयंडो वि हु पडिलाहइ भावणासहिओ ॥ ८० ॥ नियनाहस्स सुयस्स य दाणं दट्ठूण निरुवमं ज्झत्ति । चंडी वि हु पडिलाहइ खीरिं गुरुभत्तिसंजुत्ता ॥ ८१ ॥ तं किं पि तेहिं पुन्नं समज्जियं तत्थ सुद्धभावेण । देवत्तरज्जरिद्धी न दुल्लहा ताण दुण्हं पि ॥८२॥ तं दट्ठूण पयंडो पयंडिभज्जा य भणइ अन्नुन्नं । अम्हाण किं हविस्सइ दिन्ना सव्वा वरा खीरी ॥ ८३ ॥ आउक्खयंमि मरिउं चंडो चंडी अ जंति सुरलोए । कालीदेवीए पिउ सुपयंडो वंतरो जाओ ॥८४॥ भमिऊणं संसारे पयंडजीवो य कंथओ जाओ । न हु अत्थि दाणसत्ती पुव्वभवे ज्जि हु न जं दिन्नं ॥ ८५ ॥ चविऊण चंडजीवो धम्मरहो नाम नरवई तुमयं । चंडी वि हु धम्मवई संजाया कंथयस्स पिया ॥ ८६ ॥ भमिऊण भवं जाया पयंडि जसवई य सेट्ठिपिया । कालीदइओ चविउं संजाओ अंबनामसुओ ॥ ८७ ॥ पुव्वसिणेहवसेणं अहिट्ठिओ कालियाइ देवीए । तस्सत्तीए एसो अउव्वचरिउ व्व दीसेइ ॥ ८८ ॥ नरवर ! दाणपहावा जं न घडइ कहवि तं पि संघडइ । अंबकुमारो रज्जं काउं गिण्हिस्सए दिक्खं ॥ ८९ ॥

पुव्वभवम्मि अभावो संजाओ जसवईइ मुणिदाणे । तेणेस रम्मपुत्तो पढमो एयाइ न हु हूओ ॥ ९० ॥ धम्मवईए दाणं दिन्नं तेणेस रम्मपुत्तो य । संभूओ दाणाओ तं नत्थि न जं हवइ इट्ठं ॥ ९१ ॥ इअ केवलिणो वयणं सोऊणं ताण तत्थ संजायं । जाईसरणं तत्तो नियचरियं पंच वि मुणंति ॥ ९२ ॥ अह पभणइ नरनाहो मज्झ अपुत्तस्स पुव्वभवपुत्तं । नियरज्जे ठविऊणं गिण्हिस्सामी अहं दिक्खं ॥ ९३ ॥ पभणेइ मुणिवरिंदो अविलंबं कुणसु चिंतियं अत्थं । तं नमिउं नरनाहो लोयजुओ जाइ नियठाणं ॥ ९४ ॥ सव्वजणसम्मएणं सविसेसं पुच्छिऊण पुण सेट्ठिं । अंबकुमारं निवए ठवेइ रज्जंमि नरनाहो ॥ ९५ ॥ धम्मरहो कयकिच्चो होऊणं जाइ केवलिसयासे । गिण्हिय पव्वज्जभरं पालिय पत्तो य सुरलोए ॥९६॥ सिरिविजयसेणरन्नो धूयं परिणेइ कुसलवइनामं । अंबकुमारो रज्जं पालइ नाएण संपन्नं ॥ ९७ ॥ जाओ कमेण पुत्तो कुसलवईए तओ विभूईए । देवकुमारो नामं तस्स य दिन्नं सुहमुहुत्ते ॥ ९८ ॥ कंथयजणयसमेओ धम्मवईजसवईए संजुत्तो । कुसलवईए सहिओ नरनाहो गमइ दियहाइं ॥९९॥ अंबकुमारो निवई देवकुमारं ठवित्तु नियरज्जे । सव्वजणं खामेउं दाणं दाऊण सविसेसं॥१००॥ कंथयधम्मवईए जसवइजणणीइ कुसलवईए य । संजुत्तो गिण्हेइ पव्वज्जं मुणिवइसयासे ॥ १०१ ॥ पालेऊणं दिक्खं कमेण सव्वाइं ताइं मरिऊण । सुविसुद्धभावणाइं लहंति देवत्तरिद्धीओ ॥ १०२ ॥ इति दानविषये चंडगोवालकथानकं समाप्तम् ।

दानविषये कृपणश्रेष्ठिकथानकम्—जो वियरइ नियरिद्धिं सत्तसु खेत्तेसु सुद्धभावेण । इंदसमाणो देवो सुरलोए हवइ किविणो व ॥ १ ॥ लच्छिविलासं नामेण पुरवरं अत्थि लच्छिदुल्ललिअं । लच्छीनिलओ सेट्ठी नयरपहाणो वसइ तत्थ ॥ २ ॥ नवकोडीउ निहाणे नव जलमग्गंमि नव थलपहंमि । नव नियपुरस्स मज्झे वट्टंति सया वि सिद्धिस्स

॥ ३ ॥ छत्तीसं कोडीणं सामित्तं वहइ तस्स सो सेट्ठी। सीलवरालंकरणा लच्छी नामेण तस्स पिया ॥ ४ ॥ एवंविहे वि विहवे लच्छीनिलयस्स होइ न हु तित्ती। परिभमइ रयणिदिवसं अत्थो अत्थो त्ति कुणमाणो ॥५॥ न हु कस्स वि सो वियरइ दाणेण कवड्डियं पि कइया वि। कुट्टी वि तस्स हट्टे कुट्टियहिययं मुहं जाइ ॥ ६ ॥ सो रसवईए भुंजइ तिल्लं वल्ला य सह कुडुंबेण। न गिहे वि तस्स दीसइ नवरत्तं चीवरं कहवि ॥ ७ ॥ दाणभएण न गच्छइ देवकुले कहवि मुणिपासे। लच्छीनिलओ सेट्ठी न मिलेइ पंचजणमज्झे ॥ ८ ॥ दीवुच्छवे वि न हु तस्स दीसए कहवि मोययाईयं। कप्पडियतडियभिक्खायरा वि विहलासया जंति ॥९॥ लोओ जहत्थनामं लच्छीनिलयस्स देइ किविणो त्ति। तं सव्वत्थ पसिद्धिं संजायं किवणचरियस्स ॥१०॥ अन्नदिणे सो किवणो अइगाढं धरिय बाहुमूलंमि। मित्तेण कहवि नीओ देवउले उस्सवे कम्मि ॥११॥ उवविट्ठो पिच्छणए दिज्जंतं पिच्छिऊण तहिं दाणं। हिययंमि तस्स चडिया गंठी अह निवडइ महीए ॥ १२ ॥ तो को वि कुणइ वायं को वि हु मद्देइ तस्स पुण उयरं। अह लद्धचेयणो सो गेहं पइ चल्लिओ जाव ॥१३॥ तो पाउलेण भणियं बलाउ उववेसिओ पुणो सेट्ठी। वरनट्टगेयरंजियलोओ दाणं तहिं देइ ॥ १४ ॥ किवणो एगं पुप्फं कहकहवि हु देइ लोयलज्जाए। अह वित्ते पिच्छणए जा किवणो पइ गिहं चलिओ ॥ १५ ॥ पाउलएणं भणिओ पुप्फट्ठाणंमि देसु किं पि तुमं। किवणो भणेइ अन्नं मह पासे नत्थि पुण किं पि ॥ १६ ॥ पभणेइ य पाउलयं जइ किं पि हु अम्ह देसि न हु इत्थ। ता नियगेहे गंतुं नेव तुमं लहसि कहवि पुणो ॥ १७ ॥ पाउलएणं गहिओ किवणो पभणेइ लोयपच्चक्खं। सच्चं चिय संजायं धम्मस्स वि धरणयं एअं ॥ १८ ॥ अइसंकडंमि पडिओ किवणो अइकंपमाणहत्थेण। अप्पेइ तत्थ ताणं एगं चिय दद्धलोहडियं ॥ १९ ॥ अह कसिणमुहो किवणो सुन्नमणो

गच्छए निए गेहे । अब्भुक्खणं (?) विणा वि हु सो निवडइ ज्झत्ति खट्टलए ॥ २० ॥ तं पेच्छिऊण लच्छी पभणइ किं नाह ! दीससे दुहिओ । किं मुट्ठो केणावि हु ? किं वा तुह पवहणं फुट्टं ? ॥ २१ ॥ किं न निएसि निहाणं ? किं वा अवमन्निओ य केणावि ? । किं वा बलाउ केण वि किं पि तुमं मग्गिओ आसि ? ॥ २२ ॥ एवं सो भणिओ वि हु किं पि न वियरेइ उत्तरं तीए । अह सा पुणो वि जंपइ नाह ! तुमं भोयणं कुणसु ॥ २३ ॥ सो पभणइ कोवेणं झंखंती चिट्ठसे कहं नेव ? । जं अज्ज मज्झ जायं किं पि तुमं तं न हु मुणेसि ॥ २४ ॥ लच्छी भणेइ किं किं तुह जायं ? मज्झ पिययम ! कहेसु । सो भणइ पाउलेणं लोहडिओ अज्ज मह गहिओ ॥ २५ ॥ सा वज्जरेइ पिययम ! इह अत्थे किज्जए कहं दुक्खं ? । दाणेण इत्थ लोए पाविज्जइ नूण सुपसिद्धी ॥ २६ ॥ सो भणइ पसिद्धीए किं किज्जइ जा हवेइ दाणेण । ता अज्ज मज्झ दइए ! नत्थि छुहा नेव भुंजिस्सं ॥ २७ ॥ दाऊण तओ सवहे कुणावए भोयणं पियं लच्छी । कहकहवि कवलपंचयमह भुंजइ किवण-सिट्ठी वि ॥ २८ ॥ एवं वट्टंताणं ताणं जा जाइ कित्तिओ कालो । ता लच्छिसिट्ठिणीए जाया गब्भस्स संभूई ॥ २९ ॥ सा पडिपुन्ने काले पुत्तं पसवेइ पुन्नसंपुन्नं । लच्छी पभणइ पिय ! कुणसु पुत्तजम्मूसवं रम्मं ॥ ३० ॥ किविणो भासइ पिय-यमि ! तुज्झ हविस्संति नूण बहुपुत्ता । तो मज्झ नत्थि अत्थो वयजोग्गो को वि गंठीए ॥ ३१ ॥ लच्छी मोणेण ठिया नवरद्धं ओसहं घयाइजुयं । जह नो पिच्छइ सिट्ठी तं तह भक्खेइ सा सिग्घं ॥ ३२ ॥ संखेवेणं दिन्नं नामं पुत्तस्स पुन्नकलसु त्ति । सो वि हु कमेण वड्ढइ बालो जिणधम्मलीणमणो ॥ ३३ ॥ उववसिइ तओ हट्टे दव्वं च समुज्जए सया वि बहुं । निय-भुयअज्जिअदव्वं दाणे भोगंमि वियरेइ ॥ ३४ ॥ नियपुत्तं भक्खंतं तंबोलं पिच्छिऊण सहस त्ति । आरत्तवयणकमलो सिट्ठी पुणु

हवइ कोवेण ॥३५॥ अह अन्नदिणे किवणो रयणीअद्धंमि पिच्छए सुमिणं। पुन्नकलसेण बाहिं लोहडिओ भक्खिओ अज्ज ॥३६॥ इय पिच्छिऊण सुमिणं उट्ठइ किविणो समाउलीहूओ। पभणइ सुत्ता ? अहवा किं जग्गसि? पिययमे! तुमयं ॥ ३७ ॥ कहकहवि हु जा जग्गइ ता किवणो पभणइ सुणसु मह वयणं। तुह पुत्तेणं बाहिं लोहडिओ भक्खिओ अज्ज ॥ ३८ ॥ सा पभणइ किं झंखसि? किं कहिओ केण? किं सयं दिट्ठो ?। सो भणइ मए सेट्ठिणि! सुमिणे दिट्ठो इमो अत्थो ॥ ३९ ॥ लच्छी पभणइ पिययम ! सच्चविओ सो आहाणओ तुमए। जं सुमिणगपड्डीए मूढ! तुमं रउडयं देसि ॥ ४० ॥ किवणो जंपइ सेट्ठिणि ! ज्झत्ति तुमं कुणसु दीवयं इत्थ। सा वि हु मोणं कुणिउं सुत्ता नो उत्तरं देइ ॥ ४१ ॥ किवणो वि हु कुणिऊणं सयमवि दीवं बोहए पुत्तं। वियरेसु हट्टलेक्खं रे! रे! मह अज्ज सिग्घं पि ॥ ४२ ॥ अह कड्डिय संपुडयं पुत्तो वि हु हट्टलेक्खयं देइ। अनुलोमविलोमाओ न पुज्जए कहवि लोहडिओ ॥ ४३ ॥ तो पभणइ किवणो वि हु रे! रे! पाविट्ठ! मज्झ सव्वधणं। थोवेणं थोवेणं तए अहं भक्खियं मन्ने ॥ ४४ ॥ पुत्तो वि हु भणइ मए कम्मि दिणे ताय! भक्खियं दव्वं। उच्चसरेणं कलहंति जाव ता तत्थ किं जायं ? ॥ ४५ ॥ समयंमि तंमि तस्स उ भित्तिं खणिऊण जाव पविसेइ। एगो चोरो ता तत्थ निसुणए ताइं वयणाइं ॥४६॥ चिंतइ जइ गिण्हिस्सं दव्वं किवणस्स जीवियं गहियं। ता खलु एस मरिस्सइ पावेउं हिययसंघट्टं ॥४७॥ गिण्हिस्सइ गोहच्चं को खलु एयस्स चिंतिउं चोरो। गच्छइ सिग्घं पि तओ कत्थ वि अन्नत्थ ठाणंमि ॥ ४८ ॥ किवणो वि हु विवयंतो रयणिं सयलं पि चिट्ठए तत्थ। रे पुत्त! तुज्झ ठाणं मह गेहे नत्थि पभणेइ ॥ ४९ ॥ चिंतेइ पुन्नकलसो कायवमणेण किं न दव्वेण ?। जं न सगं नेव परो भुंजिस्सइ कहवि कइयात्ति ॥ ५० ॥ जइ इत्थेव बुभुक्खा

सहिज्जए नूण ता वरा दिक्खा । परलोए त्ति हु लोओ जीइ पहावा हवइ सुहिओ ॥ ५१ ॥ पिउपुत्ता अन्नोन्नं रिउणो खलु
हुंति जस्स कज्जेण । तं अत्थं चइऊणं धन्ना गिण्हंति पव्वज्जं ॥ ५२ ॥ अह माणधणो धम्मे दिन्नमणो नियगिहाउ नीहरिउं ।
एगंमि वरुज्जाणे संपत्तो पुन्नकलसो वि ॥ ५३ ॥ पिच्छेइ तत्थ साहुं पणमिय तस्सेव संनिहाणंमि । संसारविरत्तमणो पव्वज्जं
गिण्हए ज्झत्ति ॥ ५४ ॥ मुणिऊणं वुत्तंतं गच्छइ अन्नत्थ तेण सह साहू । एयं मुणिउं लच्छी सव्वं पि हु लोयवयणाओ
॥ ५५ ॥ विमणमणा सा त्ति पुणो नियनाहं पइ पयंपए एवं । पुन्नकलसेण दिक्खा गहिया किं कुणसि तुममिण्हिं ? ॥५६॥
किंकायव्वविमूढा लच्छी चिंतेइ गाढदुहियमणा । मह अज्ज पुत्तरयणं हत्थाओ निवडियं कह णु ॥ ५७ ॥ निब्भग्गिया अहं
खलु तव्विरहे फुट्टए न जं हिययं । पुन्नस्स पुणो कलसो सो च्चिय जेणं मुणी जाओ ॥ ५८ ॥ सिट्ठी पहायसमए खत्तं
दट्ठूण भणइ नियदइयं । चोरेण गिज्झमाणा कलहेण य रक्खिया लच्छी ॥ ५९ ॥ पढिऊण पुन्नकलसो थोवदिणेहिं पि बार-
संगाइं । लच्छिविलासे नयरे पुणो वि सो एइ उज्जाणे ॥ ६० ॥ तं आगयं मुणेउं लोओ सव्वो वि जाइ उज्जाणे । लच्छी-
सहिओ किवणो जाइ अह वंदए पुत्तं ॥ ६१ ॥ सो पुन्नकलससाहुं गहियवयं पिच्छिऊण लज्जाए । चिट्ठइ अहोमुह च्चिय तो तं
पभणेइ मुणिनाहो ॥ ६२ ॥ इह संसारे एक्को सुदुज्जओ [होइ] लोहगाढरिऊ । तेण विजियाण कहमवि न हु सोक्खं होइ
लोयाणं ॥६३॥ दिट्ठंतो इत्थ तुमं पुव्वभवे सुणसु तं समासेण । लच्छिविलासे नयरे एयंमि समिद्धिसंजुत्तो ॥६४॥ बाहडनामो
सेट्ठी तस्स पिया अत्थि रूविणी नाम । सेवंताणं ताणं विसयसुहं गाढनेहेण ॥ ६५ ॥ जाओ सि तुमं पुत्तो नामं धवलो त्ति
तेहिं तुह दिन्नं । कालक्कमेण बाहडसिट्ठी पंचत्तमावन्नो ॥ ६६ ॥ अह धवलो चिंतेइ जणएण समज्जिया इमा लच्छी ।

दुगुणी कुणेमि जइ कहवि तस्स तायस्स ता पुत्तो ॥ ६७ ॥ नो विअरइ दाणेणं सयं पि उवभुंजए न कइयावि । न य
सयणबंधवाणं लच्छी उवहुज्जए तस्स ॥ ६८ ॥ सीवणधोयणकम्मं कुणेइ सव्वं पि सो सयं चेव । तस्संगमज्जणं पि हु हवेइ
धणतेरसीदियहे ॥ ६९ ॥ सुक्को लुक्खो अइमलिणचीवरो भमइ रयणिदिवसं पि । कत्थ वि अत्थो होही इय चिंताए
सयाकालं ॥ ७० ॥ जो को वि तस्स पासे उवदिसई देइ तस्स पुण सिक्खं । चलरूवे संसारे दायव्वं दाणमिह निच्चं ॥ ७१ ॥
इय भणिऊणं धवलो अवरजणं दावए सया दाणं । परलोयंतरजोग्गं तेणेव उवज्जए पुन्नं ॥ ७२ ॥ इय सो गमेइ
कालं सयं पुणो देइ कहवि न हु दाणं । अन्नं लोयं दिंतं पिच्छिय अइनिव्वुई होइ ॥ ७३ ॥ नियआउं पालेउं धवलो
मरिऊण सो तुमं जाओ । चइऊणं सव्वं पि हु नियदव्वं भूमिमज्झंमि ॥ ७४ ॥ पुव्वभवे वि हु तुमए दाणं दिन्नं कयावि न हु
जेणं । तेण तुह दाणसत्ती न हु जाया इत्थ वि भवंमि ॥७५॥ दाणे वा ज्झाणे वा अज्झयणे वा तहेव अन्ने वि । पुव्वभवब्भा-
साओ सिग्घं पि पयट्टए लोओ ॥ ७६ ॥ जेणं अवरजणाओ दाणं निच्चं पि दावियं तुमए । तप्पुन्नप्पहावाओ तुह इह जाया
गरुयरिद्धी ॥ ७७ ॥ लच्छीए उवओगो न कओ कइयावि जेण पुव्वभवे । इत्थभवे तुह तेणं तीए फलं किं पि नो जायं
॥ ७८ ॥ इय मुणिऊणं दाणं देयं निच्चं पि लच्छिसंजणणं । अहवा दाणपहावा तं नत्थि न जं हवइ लोए ॥ ७९ ॥ इय
सुणिऊणं किवणो जाइं सरिऊण नियइ पुव्वभवं । पच्चक्खं चिय सव्वं अह मुणिनाहं पयंपेइ ॥ ८० ॥ दम्माण लक्खमेगं
परिग्गहो हवउ मज्झ आजम्मं । अन्नं सव्वं धम्मे वियरिस्सं अज्जदियहाओ ॥ ८१ ॥ अह पुन्नकलससाहुं किवणो नमिऊण

१ उवजुज्जए B ।

जाइ नियगेहे । जिणभवणवसहिवरपुत्थएसु वियरेइ नियदव्वं ॥ ८२ ॥ साहम्मियवच्छल्लं संघस्स य पूयणं कुणइ निच्चं । दीणाणाहजणाणं सुवण्णटंके पुणो देइ ॥ ८३ ॥ कप्पडियतडियभिक्खायराण रयणाइं देइ अणवरयं । भट्टनगारियपाउल-लोयं सो कुणइ अदरिद्दं ॥ ८४ ॥ रयणीए भंडारो दाणपहावेण वड्ढए तस्स । दुइयदिणे तं वियरइ जहिच्छियं पइदिणं सेट्ठी ॥ ८५ ॥ दाणपहावा तेणं तंमि भवे महीयलंमि सयलंमि । निम्मलकित्ती पत्ता मणसंतोसेण संजुत्ता ॥ ८६ ॥ अह मुणिय अंतसमयं सत्तसु खित्तेसु वियरए दाणं । लच्छीपियाए सहिओ सविसेसं धम्मलीणाए ॥ ८७ ॥ नियआउं पालेउं अंते सुविसुद्धभावणपराइं । मरिऊण देवलोए इंदसमाणा सुरा जाया ॥८८॥ इति दानविषये कृपणश्रेष्ठिकथानकं समाप्तम् ।

शीलप्रभावे जयलक्ष्मीदेवीकथा—दुस्सज्झं पि हु सिज्झइ सीलपहावेण ज्झत्ति लोयाण । जयलच्छीदेवीए दिट्ठंतं सुणह सुहजणयं ॥ १ ॥ भारहखित्ते खित्ते विजयउरं अत्थि लच्छिदुल्ललियं । नामेण विजयसेणो नरनाहो तत्थ बल-कलिओ ॥ २ ॥ तस्संतेउरसारा विजया नामेण पिययमा अत्थि । अइपिम्मपासबद्धाइं दो वि न सहंति विच्छोहं ॥ ३ ॥ अह भद्दवए मासे एगेणं धीवरेण नइमज्झे । मच्छग्गहणनिमित्तं वित्थारिय घल्लियं जालं ॥ ४ ॥ तत्थ जलपूरखिविया पडिया सहस त्ति पाउया एगा । मणिरयणकणयघडियं तं पिच्छिय धीवरो हिट्ठो ॥ ५ ॥ चिंतइ रम्मत्तणओ एसा नरनाह-पिययमाजुग्गा । अह सो गच्छइ सिग्घं पाउयहत्थो निवसयासे ॥ ६ ॥ तम्मि समयम्मि कत्थ वि नरनाहो जाइ रायवाडीए । उद्धुरपाउयं पिच्छिऊण तं पुच्छए सिग्घं ॥ ७ ॥ भो ! भो ! तुमए एसा लद्धा अइरम्मपाउया कत्थ ? । कहिऊण सो वि

सव्वं समप्पए पुहइनाहस्स ॥ ८ ॥ नरनाहो दाऊणं उचियं किं पि हु विसज्जए तं पि। कुणिऊण रायवाडिं धवलगिहे झत्ति संपत्तो ॥ ९ ॥ विजयाइ पिअयमाए सो तं अप्पेइ पाउयं एगं। तं नियचरणपमाणं पिच्छिय सा भणइ हिट्ठमणा ॥ १० ॥ पिययम ! जइ मह जोग्गं दुइयं आणेसि पाउयं कहवि। ता हं करेमि भोयणमह नो नियमो महं असणे ॥ ११ ॥ पभ– णेइ सुत्तहारे नरनाहो नयरमंडणसमाणे। एयसरिच्छं दुइयं सिग्घं पि हु पाउयं घडह ॥ १२ ॥ तं पिच्छिऊण ते वि हु अइदुग्घडपाउयं अपडिरूवं। पभणंति अम्ह पिउणो वि नत्थि पहु ! एरिसा सत्ती ॥ १३ ॥ सुणिऊण ताण वयणं कमसलायं व दुक्खिओ निवई। किंकायव्वविमूढो तो पडहं दावए नयरे ॥ १४ ॥ एयसरिच्छं जो कहवि आणए इत्थ पाउयं दुइयं। सो लहइ दम्मलक्खं वियक्खणो नेव संदेहो ॥ १५ ॥ अह मगरदाढनामा तं छिविउं कुट्टिणी भणइ निवइं। इह पाउय- माणेमी तस्सामिणिसंगयं अहयं ॥ १६ ॥ इय भणिय अद्धलक्खं पढमं मग्गेइ देइ निवई वि। उड्ढमुहा निग्गच्छइ नयराओ कुट्टिणी तत्तो ॥१७॥ भुंजइ विजयादेवी निव्वुअहियया निवेण सह तत्तो। जीविज्जइ आसाए पंचा(हया)साए पुणो नेव ॥१८॥ सुहसउणसूइउच्छाहकहियहिययइट्ठसिद्धिसंतुट्ठा। गामे पुरंमि वरपट्टणंमि खेडे मडंबे य ॥ १९ ॥ परिभमइ रयणिदियहं दसमासं जाव कुट्टिणी मयरा। हियइच्छियस्स सिद्धिं कहवि हु कत्थवि न पावेइ ॥ २० ॥ अह सा विलक्खहियया चिंतइ सउणा वि निप्फला मज्झ। ता कह भट्ठपइन्ना नियनयरं जामि निल्लज्जा ॥ २१ ॥ कयउच्छाहा जा पुण वि भमइ ता नियइ नयरमेगं सा। कत्थवि जत्थ न दीसइ दुपयं व चउप्पयं वा वि ॥ २२ ॥ सुन्नं हट्टस्सेणिं गिहपंतीओ य तह नियच्छंती। जा गच्छइ धवलगिहे विचित्तचित्ताइसंजुत्ते ॥ २३ ॥ सोहग्गरूवनिज्जियसुरंगणं पढमजुव्वणसमेयं। ता नियइ

तत्थ कन्नं कामोवमकुमरसंजुत्तं ॥ २४ ॥ ताइं वि तं पिच्छेउं अब्भुट्ठाणं कुणंति सहस त्ति । उववेसिय पुच्छंती किमत्थमिह तुज्झ आगमणं ? ॥ २५ ॥ दाऊणं समओचियमुत्तरमह सा वि खिवइ जा दिट्ठिं । ता नियइ एगकोणे एगं चिय पाउयं रम्मं ॥ २६ ॥ तं पिच्छिऊण चिंतइ एसा दीसेइ तस्स सारिच्छा । एयाए एस च्चिय हविस्सई सामिणी मन्ने ॥ २७ ॥ ता अज्ज मज्झ चिंतियमणोरहा सहलभावमावन्ना । एसा कह नेयव्वा सपाउया तम्मि नियनयरे ॥ २८ ॥ अह तेहिं सा भणिया अम्मो ! अम्हाण होसु पाहुणिया । आमं ति भणिय भुंजिय चिट्ठइ सा तं दिणं तत्थ ॥ २९ ॥ अह एगंते जाए मयरा पुच्छेइ सुद्धवयणेण । वच्छि ! कहं उव्वसियं नयरं ? को एस ? का य तुमं ? ॥ ३० ॥ सा वीसत्था पभणेइ सुण अंब ! समत्थि जयउरं नयरं । तत्थ निवो जयसूरो पाणपिया जयसिरी तस्स ॥ ३१ ॥ जयलच्छी नामेणं तणया ताणं समुप्पन्ना । सिक्खिअकलाकलावा कमेण अह जुव्वणं पत्ता ॥ ३२ ॥ अम्हाण आसि रज्जे दिन्नं कुलदेवयाइ कमपत्तं । बहुसो दिव्वपहावं अइरम्मं पाउआजुयलं ॥ ३३ ॥ देवो व वंतरो वा रोगायंको व अहव दुब्भिक्खं । परचक्कं च सचक्कं तस्स पहावा न पूरेइ ॥ ३४ ॥ ताणं मज्झा एगा पुव्वच्छेएण कहवि कत्थ गया । खेयपरो मह जणओ तत्तो पालेइ रज्जभरं ॥ ३५ ॥ अह कित्तियंमि समए गयंमि पासाय-सिहरपत्ताए । मह रूवं दट्ठूणं अइलुद्धो वंतरो एगो ॥ ३६ ॥ मह जणयं जयसूरं अह सो पभणेइ नियधुया तुमए । दायव्वा कस्सावि हु ता मह देवस्स वियरेसु ॥ ३७ ॥ अह भणइ मज्झ जणओ वंतरमणुयाण मिलइ न कया वि । इय पडिसिद्धो सो वि हु गाढं कोवेण संजुत्तो ॥ ३८ ॥ निहणेइ मज्झ जणयं जणणिं अह सव्वनयरलोयं पि । मं इक्कं मुत्तूणं सो दुट्ठो वंतरो रुट्ठो ॥ ३९ ॥ अज्ज अहं नियदइयं कुणिस्समिय भणिय सो गओ ण्हाउं । ता सहस च्चिय एसो कुमरो कत्तो वि संपत्तो ॥ ४० ॥

तो वुत्तंते पुट्ठे तेणं कहिए मए कुमारेण । आगच्छंतो नीओ पंचत्तं एस खग्गेण ॥ ४१ ॥ तस्समए तस्सावि हु पडिपुन्नो अत्थि आउसमउ त्ति । कुमरवरखग्गघाओ निमित्तमित्तं पुणो जाओ ॥ ४२ ॥ मज्झ मणं मुणिऊणं परिणीया हं अणेण कुमरेण । कल्लदिणे संझाए गंधव्वेणं विवाहेण ॥ ४३ ॥ अह एसो रयणीए सुत्तो मिल्हेइ उण्हनीसासे । तो अंब ! मए पुट्ठो कहेसु किं तुज्झ पिय ! दुक्खं ? ॥ ४४ ॥ इय भणिए कहकहवि हु एसो पभणेइ पिययमे ! सुणसु । गंधव्वपुरे नयरे नरसीहो अत्थि नरनाहो ॥ ४५ ॥ संजाओ तस्स सुओ सूरो नामेण सो पुणो अहयं । मह अत्थि दुवे मित्ता परोप्परं नेहसंजुत्ता ॥ ४६ ॥ एगो अमच्चपुत्तो सुबुद्धिनामो सुबुद्धिसंजुत्तो । धारडनामा तणओ दुइओ उण सुत्तहारस्स ॥ ४७ ॥ देसाण दंसणत्थं पच्छन्नं निग्गया सगेहाओ । महिमंडलं नियंता पत्ता अह पव्वए एगे ॥ ४८ ॥ तत्थ अघोरो नामा जोगिंदो अत्थि मंततंतविऊ । मं पिच्छिऊण पभणइ सो गाढं भत्तिसंजुत्तो ॥ ४९ ॥ तुह साहिज्जा विज्जं कुमार ! नहगामिणिं पसाहेमि । सूरो धीरो उवयारसंजुओ दीससे जेण ॥ ५० ॥ इय भणिए जोगिंदं अहं पि पभणेमि तत्थ पाणपिए ! । जं किं पि मए सिज्झइ तं साहसु नूणं सहस त्ति ॥ ५१ ॥ जोगिंदेणं सव्वं पूओवगरणं समाणियं तत्थ । पत्ते रयणीसमए उवविट्ठो निच्चले ज्झाणे ॥ ५२ ॥ आयड्ढियकरवालो अहं पि चिट्ठेमि जाव ताव पुणो । अइभीसणरूवधरो संपत्तो रक्खसो एगो ॥ ५३ ॥ सो भणइ मज्झ सम्मुहं रे ! गच्छ तुमं सजीविअं गहिउं । जोगिंदं पुण दुट्ठं पाविट्ठमहं हणिस्सामि ॥ ५४ ॥ मइ जीवंते नो कहवि मरइ रे ! अहम ! एस जोगिंदो । इय भणिए मह सम्मुहो कोवेणं ज्झत्ति जा पत्तो ॥ ५५ ॥ ताव मए सो हियए पायपहारेण निहणिओ बाढं । जीवियसेसो नट्ठो पाविट्ठो ज्झत्ति दूरंमि ॥ ५६ ॥ जोगिंदस्स वि विज्जा सिद्धा तेणं तओ अहं भणिओ ।

पच्चुवयारं काउं न समत्थो कुमर ! तुज्झ अहं ॥ ५७ ॥ तहवि हु एयं खग्गं दिव्वपहावं कुमार ! गिण्हेसु । एयस्स पहावेणं सुरा वि जिप्पंति निच्चं पि ॥ ५८ ॥ अब्भिडइ कहवि महिला जइ पुण एयस्स खग्गरयणस्स । तो तस्सामी होही अचेयणो जाव छम्मासे ॥ ५९ ॥ असिईसयदीहाणं मज्झे जइ को वि नियसत्तीए। जीवावइ ता जीवइ अह नो सो मरइ पुण पच्छा ॥ ६० ॥ ता महिलाए फंसो रक्खेयव्वो कुमार ! जत्तेण । इय कहिय तेण खग्गं समप्पियं गिण्हिअं च मए ॥ ६१ ॥ अह कहवि रमणिकरकमलच्छित्तखग्गाउ वेअणा तुज्झ । गच्छइ ता तुह मित्तो आणि(हरि)स्सइ एस मंतिसुओ ॥ ६२ ॥ रक्खडिया मह एगा समप्पिया तेण कहिय माहप्पं । तिसछुहसीउण्हदुहं पासठिया हरइ खलु एसा ॥ ६३ ॥ एगो मंतो तेणं दिन्नो कहिऊण मंतिपुत्तस्स। एयपहावा जीवइ चेयणरहिओ वि जीवजुओ ॥ ६४ ॥ जत्थ लिहिज्जइ एसो नहेण तं जाइ चिंतियं ठाणं। इय भणिय मंतमेगं समप्पए सुत्तहारस्स ॥ ६५ ॥ कुणिऊणं पिए ! एवं जोगिंदो अम्ह गरुयमुवयारं । अन्नत्थ नहेण गओ तत्तो अम्हे वि संचलिया ॥ ६६ ॥ मग्गे गच्छंताणं कहकहमवि दिव्वपरिणइवसेणं । भुल्ला परुप्परेणं ते कत्थ गया न जाणेमि ॥ ६७ ॥ मग्गंमि ताण सुद्धिं मग्गंतो हं इह समायाओ । मित्तविओओ एवं दुक्खनियाणं पिए ! मज्झ ॥ ६८ ॥ एयं अणेण गुज्झं कहिअं अम्मो ! मए वि इह तुज्झ । इय सुणिय विम्हियमणा मयरा एवं विचिंतेइ ॥ ६९ ॥ कुमरंमि विज्ञ-माणे नो मह भणियं कुणिस्सई एसा । ता खग्गप्फंसेणं अचेयणं कुणिय इह एयं ॥७०॥ दावेऊणं किं पि हु लोहं एयं अहं तहिं नेमि । इय चिंतिऊण सिग्घं जा पविसइ ज्झत्ति अववरए ॥ ७१ ॥ अइरम्मं अइरम्मं खग्गं कस्सेरिसं ति पुण भणिरी । फंसइ दुट्ठा मयरा वारंतस्सावि कुमरस्स ॥ ७२ ॥ अह कुमरो नियदेहे दाहं अइदुस्सहं मुणेऊणं । जयलच्छी (जयलच्छि)

एगंते हक्कारिय भणइ ससिणेहं ॥ ७३ ॥ जो साहिओ मए तुह एगंते खग्गरयणवुत्तंतो। मूढमणाए तुमए सो कहिओ दुट्ठ-मयराए ॥ ७४ ॥ जो पुरिसो महिलाणं हिययाभिप्पायमप्पए कहवि। सो नूणं मूढमई अप्पाणं खिवइ दुहजलणे ॥ ७५ ॥ मयराए मह खग्गं फरिसियमेयं अणाए दुट्ठाए। इय मुणिऊणं दइए! तुमए वि न वीससियव्वं ॥ ७६ ॥ ता हं चेयणरहिओ हविस्समग्गी पुणो न दायव्वो। जइ पुण कहमवि एवं मुणिअ इह एइ मंतिसुओ ॥ ७७ ॥ ता मह जीअं दइए! छम्मासं जाव तो परं मरणं। इय कहइ जाव तीए ता नट्ठा चेयणा तस्स ॥७८॥ अह पभणइ जयलच्छी अंब! मओ मज्झ पिययमो कहवि। अइदुक्खदुक्खिया वि व तं मुणिउं भमइ(भणइ) मयरा वि ॥७९॥ सच्चं चिय जइ वच्छे! तुज्झ पिओ एस मरणमावन्नो। मा तहवि कुणसु दुक्खं दाही अन्नस्स नियपुत्तिं ॥ ८० ॥ विजयपुरे नरनाहो नामेणं अत्थि विजयसेणु त्ति। सुहयसिरोमणिमज्झे रेहा तस्स चिय जयम्मि ॥ ८१ ॥ तं पाणपियं काउं भुंजसु भोए जहिच्छिए निच्चं। तं नयरं पइ संपइ ता चलसु मए समं वच्छि! ॥ ८२ ॥ इय सुणिऊणं चिंतइ किं किं एसा कुणेइ पाविट्ठा?। सव्वं पिच्छेमि दढं तत्तो सा जंपए मयरं ॥ ८३ ॥ अंब! तए अइरम्मं भणियं ता चलसु मं गहेऊणं। पाउअजुत्ताउ तओ विजयपुरे दो वि पत्ताओ ॥ ८४ ॥ एगम्मि पुरुज्जाणे जयलच्छिं ठाविऊण सा भणइ। नरनाहं तुह समुहं वच्छे! सिग्घं समाणेमि ॥ ८५ ॥ विहसियवयणा मयरा रायउले जाइ नमइ नरनाहं। पुट्ठा तेणं साहइ चरियं सव्वं पि वित्थरओ ॥ ८६ ॥ मयरा पाउयमप्पिअ पभणइ एयाइ सामिणी वि मए। आणीया उज्जाणे चिट्ठइ संपइ चलसु समुहं ॥ ८७ ॥ तं पाउयं समप्पइ तुट्ठो देवीए ज्झत्ति नरनाहो। कइवयजणसंजुत्तो

१ अहं B।

संपत्तो तंमि उज्जाणे ॥ ८८ ॥ विजिअसुरंगणरूवं तं पिच्छिय पंचबाणकरभल्लिं । ईसाए वित्र विद्धो मयणेण सरेहिं नरनाहो ॥ ८९ ॥ ससिणेहं सो जंपइ सहलं मह कुणसु जीवियं दइए ! । जइ सुपसन्ना सि तुमं ता अंतेउरमलंकुणसु ॥ ९० ॥ सा भणइ तओ एगं नरनाह ! सुणेसु वयण मज्झमिणं । नियपियममयकिच्चं कायव्वं जाव छम्मासं ॥ ९१ ॥ सत्तागारे दाणं तस्स निमित्तं मए सया देयं । जं भणसि तुमं पच्छा तं चेव अहं कुणिस्सामि ॥ ९२ ॥ इय सुणिए नरनाहो पभणइ एवं हवेउ सो तत्थो । कारिय सत्तागारं पूरइ सव्वं पि सो तीए ॥ ९३ ॥ सा वि हु सत्तागारे विअरइ पहियाण भोयणं निच्चं । सविसेसं परिपुच्छइ नामं ठाणं पि ताण पुणो ॥ ९४ ॥ एवं चिय सा चिंतइ सीलपहावो समत्थि जइ मज्झ । आगच्छिज्जा सिग्घं मंतिसुओ ता मह सयासे ॥ ९५ ॥ जयलच्छिसीलमंतप्पहावआगरिसिअं व संपत्तं । पहियदुगं अन्नदिणे सा ताणं पुच्छए वत्तं ॥ ९६ ॥ ताणं एगो पभणइ गंधव्वपुराउ तिन्नि मित्तवरा । देसाण दंसणत्थं संचलिया कोउअक्खित्ता ॥ ९७ ॥ नरनाहसुओ सूरो मंतिसुओ हं सुबुद्धिनामेण । वरसुत्तहारपुत्तो विक्खाओ धारडो एसो ॥ ९८ ॥ सूरस्स पुणो मग्गे भुल्ला इत्थेव तं निरक्खंता । छुहिया भोयणहेउं समागया तुज्झ पासंमि ॥ ९९ ॥ अह विहसियमुहकमला जयलच्छी कहइ मंति-तणयस्स । कुमरस्स वित्थरेणं निअपाणपियस्स वुत्तंतं ॥ १०० ॥ ता मंतिपुत्त ! गच्छसु गहिऊणं मं पि जयउरपुरंमि । जीवावसु तं कुमरं नहेण गंतूण सिग्घं पि ॥ १०१ ॥ तो घडइ धारडो वि हु विमाणमेगं लिहेइ तहिं मंतं । अह पभणइ जयलच्छी अच्छरिअं किं पि हु कुणिस्सं ॥ १०२ ॥ नरनाहो निच्चं पि हु आगच्छइ इत्थ पिययमासहिओ । ता तस्स पियं घित्तुं नहेण गच्छिज्जए सिग्घं ॥ १०३ ॥ इय जा कुणंति वत्तं समागओ नरवई पियासहिओ । दट्ठूण वरविमाणं विजया उव-

विसइ तत्थेव ॥ १०४ ॥ जयलच्छी वि हु उवविसइ मंतिपुत्तो य धारडो य तहिं। हुं गच्छइ य भणेउं विमाणमणुपिल्लिअं गयणे ॥ १०५ ॥ खणमेत्तेणं पत्तं जयउरनयरंमि तत्थ तं कुमरं। मंतिसुओ जीवावइ हत्थप्फंसप्पहावेण ॥ १०६ ॥ पुट्ठाइं विहसिएणं पाउब्भुयचेयणेण कुमरेण। नियवुत्तंतं ताइं कहंति सव्वं पि दुहियाइं ॥ १०७ ॥ मंतिसुएणं रज्जंमि तम्मि अहिसिंचिओ तओ कुमरो। अह सूरमहीवइणा तं नयरं वासियं सव्वं ॥ १०८ ॥ विजया वि तत्थ चिट्ठइ सव्वो वि हु कुणइ तीए बहुभत्तिं। सिरिविजयसेणपिअयमविरहे सा चिंतए दुहिया ॥ १०९ ॥ फलमेयं संजायं मज्झं परपाउयाइ लोहेण। जो भक्खेइ करंबं विडंबणं सहइ सो अहवा ॥ ११० ॥ अह विजयसेणनिवई अच्छरियं पिच्छिऊण तं सयलं। सो दिन्नगल्लहत्थो अहोमुहो चिंतए दीणो ॥ १११ ॥ दुट्ठाइ तीइ नीया कत्थ वि मह पिअयमा न हु मुणेमि। विरहानलतवियंगी सा कह जीविस्सइ वराई ! ॥ ११२ ॥ इअ सो झंखइ निच्चं गहिलमणो मुक्करज्जवावारो। पभणेइ मयरदाढं मह दंससु पाउयाठाणं ॥ ११३ ॥ जंपेइ मयरदाढा जयउरनयराउ पाउया एसा। आणीया इत्थ मए भमिऊणं सयलमहिवलयं ॥ ११४ ॥ कइवयनिअलोअजुओ कुट्टिणिसहिओ य जयउरे चलिओ। वीसंभट्ठाणेसुं मंतीसुं अप्पिउं रज्जं ॥ ११५ ॥ सो तत्थ गओ कमसो ओलक्खेऊण ज्झत्ति जयलच्छी। नियपइणो तं साहइ सो वि कुणइ तस्स पडिवत्तिं ॥ ११६ ॥ अह पभणइ जयलच्छी नरनाह ! कयावि हवइ न हु सुक्खं। पररमणीलुद्धाणं तस्संगमवावडमणाणं ॥ ११७ ॥ जयलच्छीए विजया समप्पिया तस्स कुणिय सम्माणं। तं गहिउं नियनयरे सो तेहिं विसज्जिओ पत्तो ॥ ११८ ॥ अह कुणिअ रज्जसुत्थं जयउरनयरंमि

---

१ विमाणमणुपिल्लिउं A ।

मित्तसंजुत्तो । सपिओ य सूरनिवई गंधव्वपुरंमि संपत्तो ॥ ११९ ॥ नियजणणीजणयाणं दुहिअमणाणं मिलंति ते सव्वे । अपुव्वं किं पि सुहं संजायं संगमे ताणं ॥ १२० ॥ अह तत्थ मंतिपुत्तेण साहिअं सयलमवि नियं चरियं । नववहुयं जयलच्छि पाडइ चलणेसु ससुराणं ॥ १२१ ॥ अंतसमयंमि तेहिं रज्जंमि निवेसिओ निओ कुमरो । अह सूरनिवो पालइ रज्जदुगं नायसंपन्नो ॥ १२२ ॥ जयलच्छी नियनाहं देवयमिव ज्झायए सया हियए । सीलपरा धम्मजुया दियहाइं गमेइ सोक्खेणं ॥ १२३ ॥ जयसेणनिवेणेसा लोहं भत्तिं पि दंसिउं भणिया । जयलच्छीए तह वि हु मणसा वि न खंडियं सीलं ॥ १२४ ॥ नियआउं पालेउं पत्ता मरिऊण देवलोगंमि । सिरिजयलच्छीदेवी निरुवमसीलप्पहावेण ॥ १२५ ॥

इति शीलप्रभावे जयलक्ष्मीदेवीकथानकं समाप्तम् ।

शीलप्रभावे सुन्दरिदेवीकथानकम्—[सो] मणवंछियसिद्धी(द्धिं) देवाणं सुदुल्लहा(हं) वि पावेइ । जो पावइ(पालइ) वरसीलं सुंदरिदेवीए नाएण ॥ १ ॥ ××××××× व्वे वडणयं हवइ खंडगुलयंमि । सारिरमणंमि मारो उवसग्गो सद्सत्थेसु ॥ २ ॥ पीलिज्जइ तह उच्छू जुन्नेसुं देउलेसु उद्धारो । दंडो छत्ते दीसइ न उणो लोयस्स कइयावि ॥ ३ ॥ अमरसु(पु)रीए समाणं नामेणं अत्थि रयणउरं नयरं । घणकंतिरयणनिम्मियगयणग्गविलग्गदेवउलं ॥ ४ ॥ निच्चं दुहिओ लोओ मणवंछियविहवसारजुत्तो वि । दाणसमयंमि को वि हु न दीसए मग्गणो जत्थ ॥ ५ ॥ उज्जमबुद्धिपरक्कमधीरिमउवयारनायगुणकलिओ । तं पालइ अरिदमणो अरिदमणो नाम पुहइवई ॥ ६ ॥ सोहग्गपिम्मलायन्नरूवसीलगुणभूसिया निच्चं । तस्सं-

तेउरसारा कमला कमल व्व पाणपिया ॥ ७ ॥ घणउ व्व तत्थ निवसइ सेट्ठी नयरस्स मंडणं परमं। दाणोवयारदक्खिन्नसंजुओ नाम धणसारो ॥८॥ सीलुज्जमछेयत्तणलज्जाउवयारमंडणा निच्चं। तस्स पिया पिम्मवई पिम्मवई नाम धम्मपरा ॥ ९ ॥ नियइच्छाए ताणं सेवंताणं सया वि विसयसुहं। जाया कमेण पुत्ता सत्त सुसत्तेण संजुत्ता ॥ १० ॥ तहवि हु दीणमणा सा सेट्ठी पुच्छेइ तुज्झ किं दुक्खं ?। को तुह खंडइ आणं ? मइ साहीणे सयाकालं ॥ ११ ॥ अहवा मए तुह विहियं किं पि अणिट्ठं ! तओ भणइ एसा। मा नाह ! भाससु इमं किं मुयइ ससी वि जलणकणे ! ॥ १२ ॥ किं पुण धूया एक्का वि मज्झ उच्छंगवि(व)त्तिणी नेव। तो आराहइ सेट्ठी कुलदेविं ज्झत्ति भत्तिपरो ॥१३॥ पच्चक्खीहोऊणं धूयाजम्मं कहेइ देवी वि। किं चोज्जं ! देवा वि हु हवंति भत्तीए अप्पवसे ॥ १४ ॥ सिट्ठी पहिट्ठवयणो देवीचरियं पियाइ साहेइ। तीए च्चिय रयणीए संजाया गब्भसंभूई ॥ १५ ॥ संपुन्नदोहला सा पसवइ धूयं सुहेण सुमुहुत्ते। पुत्ताण वि अहिययरं सेट्ठी जंमूसवं कुणइ ॥ १६ ॥ पत्तंमि बारसाहे महाविभूईए सयणजणजुत्तो। सुंदररूवा जेणं सुंदरिनामं कयं तीए ॥ १७ ॥ चंदकल व्व कमेणं वड्ढइ लोयाण दिन्नसंतोसा। कलगहणजोग्गदियहे पढइ सया उज्जमा कुमरी ॥ १८ ॥ सद्दे तक्के छंदेऽलंकारे तह य उवनिबंधंमि। कव्वे नट्टे गीयंमि चित्तकम्मंमि अइनिउणा ॥ १९ ॥ कुसुमसरकेलिभुवणं पत्ता सा जोव्वणं तओ तीए। सिरिविक्कमनिवचरियं गिज्जंतं निसुणियं कहवि ॥ २० ॥ तो तद्दिणाउ हिययं विक्कमनिवनेहपाससंजमियं। नन्नत्थ रमइ कइयावि मयणसरिसे वि पुरिसंमि ॥ २१ ॥ विक्कमनिवई लग्गइ मह देहे अहव हुयवहो जलिरो। इय निच्छइयं हियए न दुक्करं अहव नेहस्स ॥ २२ ॥ सिंहलदीवसमागयनिवणागभिहाणसिद्धिपुत्तस्स। सुरसुंदररूवा सा दिन्ना जणएहिं जणसक्खं ॥ २३ ॥ लग्गदिणं सा सुणिउं जाया

हिययंमि दुक्खिया बाढं । चिंतइ किं हयविहिणा मज्झ कयं निक्किवमणेण ? ॥ २४ ॥ अह उज्जेणिपुरिं पइ सहोअरो तीए वयणसारो त्ति । ववहारेणं चलिओ तं जंपइ सुंदरी ज्झत्ति ॥ २५ ॥ चम्ममओ चित्तजुओ कीडाठाणं सुओ इमो भाय ! । नियपाहुडस्स उवरिं अप्पसु सिरिविक्कमनिवस्स ॥ २६ ॥ सो चलिओ संपत्तो कमेण उज्जेणिनयरिमज्झंमि । भरिऊण रयणथालं उवरिट्ठियकीररमणिज्जं ॥२७॥ गच्छेइ रायभुवणे विक्कमरायस्स नमइ पयकमले । अप्पेइ पाहुडं पि हु पिच्छइ राया तहिं कीरं ॥ २८ ॥ अहिणवपाहुडमेयं कोऊहलकारयं अइसुरम्मं । अवलोइऊण कीरं राया पुच्छेइ सिट्ठिसुयं ॥ २९ ॥ किं एस कीरराया ? सिट्ठिसुओ भणइ सामि ! निसुणेसु । रयणवई (सुन्दरिदेवी) भइणीए मज्झ इहं पेसिओ देव ! ॥ ३० ॥ हरिसपरो चिंतंतो राया नेमित्तिएण विन्नत्तो । कीरपहावा होही अप्पुव्वो कोइ तुह लाहो ॥ ३१ ॥ एगंतं काऊणं पुच्छइ नेमित्तियं स साहेइ । कीरोयरस्स मज्झे सामिय ! चिट्ठेइ किं पि फुडं ॥ ३२ ॥ दारेऊणं कुच्छिं एक्कं पिच्छेइ तत्थ वरहारं । कत्थूरियाउ लिहियं लेहं दुइया(यं) उ वाएइ ॥ ३३ ॥ सुहयसिरोमणि ! विक्कम ! तुम्ह गुणे निच्चमेव ज्झाएमि । सो होही को दियहो दीससि नयणेहिं जत्थ तुमं ॥ ३४ ॥ निवणागस्स विइन्ना जणणीजणएहिं सिट्ठिपुत्तस्स । वइसाहकसिणबारसि रविंमि वारिज्जयं होही ॥३५॥ मह देहं नाह ! तुमं जलणो वा छिवइ न उण इयरनरो । एयं मुणिउं पिययम ! जं उचियं कुणसु तं सिग्घं ॥ ३६ ॥ तो लेहत्थं नाउं हरिसविसाएहिं पूरिओ राया । कह जियइ सा वराई मह विरहे चिंतए दुहिओ ॥ ३७ ॥ रयणउरे गंतव्वं उज्जेणीए समुद्दमग्गेण । जोयणसयाइं वीसं लग्गं उण कल्लदियहंमि ॥ ३८ ॥ तो अग्गियवेयालं भिच्चं सुमरेइ सिग्घगमणत्थं । सो आगंतुं पभणइ न हु पहु ! जलहिंमि मह सत्ती ॥ ३९ ॥ आसाचुक्को राया चिंतइ पुरिसेण उज्जमो नेव । कइयावि हु

मोत्तव्वो उज्जमवंताण खलु सिद्धी ॥ ४० ॥ वेसपरावत्तेणं रयणीसमयंमि धवलगेहाओ। निग्गच्छइ असहाओ जाइ तओ रन्नमज्झंमि ॥ ४१ ॥ खिन्नंमि तत्थ पुरिसेणेगेण पयंपिओ महीनाहो। को सि तुमं ? पहिओ हं छुहिओ मह किं पि वियरेसु ॥ ४२ ॥ दिन्नासु कच्चरीसुं रन्ना गहियासु तो भणइ पुरिसो। रयणपुरं गंतूणं जावागच्छामि ता चिट्ठ ॥ ४३ ॥ हरिसपरो नरनाहो चिंतइ आहाणओ इमो सच्चो। जं पिच्छंतो वल्लिं स च्चिय चलणंमि मे लग्गा ॥ ४४ ॥ पभणइ दे(वे)संतरिओ सच्चं कह कहसु तत्थ तुह गमणं ?। सो भणइ जोगिणीओ वडउवरिं चडिय जंति तहिं ॥४५॥ तो हं वडवित्तरट्ठिओ जामि तहिं लहइ भोयणं पुरिसो। दे(वे)संतरिओ जंपइ अहमवि तत्थेव गच्छिस्सं ॥ ४६ ॥ तो दुन्नि वि सिद्धवडे संलुक्का रुद्धसास-नीसासा। मिलियाउ जोगिणीओ सिद्धवडो तत्थ उप्पडिओ ॥ ४७ ॥ खणमेत्तेणं पत्तो नहेण रयणउरपरिसरे एसो। उत्तरि-ऊणं राया संपत्तो नयरमज्झंमि ॥ ४८ ॥ अवलोयइ तं सयलं रयणीए विहरिसपूरियच्छाहो। ज्झायंतो एगमणो सुंदरिलाहो कहं होही ॥ ४९ ॥ रयणविणिम्मियदेवउलपंतिउज्जोयणेण रयणीए। न हु तत्थ अंधयारस्स होइ कइयावि अवयासो ॥ ५० ॥ कत्थ वि गायणलोयं गायंतं सुणइ विविहभंगीहिं। देवउले पिच्छणयं कत्थ वि बहुनाडए नियइ ॥ ५१ ॥ वद्धावणयमहूसव-मणहं पिच्छेइ कत्थ वि गिहंमि। तो पुट्ठेणं कहिओ नरेण केणावि वुत्तंतो ॥ ५२ ॥ धणसारो नामेणं सिट्ठी धूया य सुंदरी तस्स। पाणिग्गहणं होही कल्ले गोधूलिवेलाए ॥५३॥ इय सुणिउं सो चिंतइ किमिहागमणं निरत्थयं होही। अइदुक्खदुक्खिय-मणो तह वि हु नो धीरिमं चयइ ॥ ५४ ॥ उक्तं च-दुक्खं जणेइ गरुयं लहुयं पि पओयणं असिज्झंतं। अइदुहजणणं पि पुणो सिज्झंतं जणइ सुहमउलं ॥ ५५ ॥ जं किं पि हु पुव्वभवे समज्जियं अत्थि कह वि रे! हियय!। तं चिय हवइ अवस्सं मा

माणं मुयसु कइयावि ॥ ५६ ॥ एवं सो चिंतंतो पुन्नसहाओ भमेइ नयरंमि । रयणीए विविहकोऊहलेण अक्खित्तचित्तो सो ॥ ५७ ॥ तंमि समयंमि नयरे हत्थिवरो रायवल्लहो नाम । न हु ससइ नेव फंदइ मुय व्व चिट्ठेइ निचिट्ठो ॥ ५८ ॥ अइदुक्खपरो राया समागओ तत्थ विगलिउच्छाहो । पुच्छेइ हत्थिविज्जे कह जीवइ एस करिराओ ॥ ५९ ॥ तेहि वि सम्मं नाऊण निउणबुद्धीए रोयपरमत्थं । निद्दाविरहे एयस्स देव ! उयरंमि अप्फरओ ॥ ६० ॥ कच्चरिखट्टियतक्केण देव ! दिन्नेण जीवए एसो । सुणिऊण ताण वयणं नरनाहो भणइ हरिसपरो ॥ ६१ ॥ धणसेट्ठि ! नयरमंडण ! कओ वि आणेसु कच्चरिउ तुमं । सो लद्धनिवाएसो जोयावइ नयरमज्झंमि ॥ ६२ ॥ न उणो कत्थ वि पत्ताउ ताउ सविलक्खमाणसो सेट्ठी । अह पडहसद्दपुव्वं नयरंमि भणावए ज्झत्ति ॥ ६३ ॥ जो कच्चरीउ सिग्घं समप्पए कह व कोइ आणेउं । जं अत्थि मज्झ गेहे सो तं मणवंछियं लहइ ॥ ६४ ॥ एयं सुणिउं वयणं पहिओ हरिसेण तं छिवइ पडहं । धणसारसेट्ठिहत्थे समप्पए कच्चरीउ तओ ॥ ६५ ॥ हरिसपरो संजाओ सिट्ठी ताओ समप्पइ निवस्स । तक्केण समं दिन्ना करिणो जाओ विरेओ य ॥ ६६ ॥ गयरोगो सो हत्थी संजाओ नरवई वि मुणिऊण । पहियस्स तस्स चरियं नियधूयं देइ रयणवई ॥ ६७ ॥ सो निव्वूढपइन्नो मणिच्छियं सुंदरिं वि मग्गेइ । सेट्ठी चिंतइ इमा दिन्ना निवणागवणियस्स ॥ ६८ ॥ तो एयस्स अहं कह देमि ? तओ मुणियमाणसो राया । उवयारिणो य पहियस्स देइ सयमेव सेट्ठिधूयं ॥ ६९ ॥ पत्ता (त्ते) संज्झासमए पाणिग्गहणं हवेइ तिण्हं पि । तो निवणागो पत्तो कलहंतो सुंदरिकज्जे ॥ ७० ॥ मह दिन्ना खलु कन्ना पाणिग्गहणं कुणेइ पुण अन्नो । चक्खू पसारिय च्चिय वाएणं कज्जलं हरियं ॥ ७१ ॥ पभणइ सेट्ठी निसुणसु तुमं पि निवणाग ! मज्झ वयणमिणं । कच्चरियाउ विणा तुह थक्को एसो इह

विवाहो ॥ ७२ ॥ तो निवणागो गच्छइ पहिओ वि हु सुंदरीए सह रयणि । मणिमयपईवरम्मे चिट्ठइ सो वासभुवणंमि ॥ ७३ ॥ अह भज्जं मोत्तूणं सो तं रयणीए जाइ सिद्धवडे । राया नियधवलगिहे पुव्वविहाणेण संपत्तो ॥ ७४ ॥ खणनिद्दावि-गमेणं चिंतइ हिययंमि सुंदरी दुहिया । मणवंछियपाणपिओ न लग्गओ कह व मज्झ करे ॥ ७५ ॥ ता किं मह जीएणं ? किं वा भोगेहिं दुक्खजणगेहिं ? । एवं पत्ते काले मरणं चिय मज्झ वरि सरणं ॥७६॥ उक्तं च-किं भणिमो लोयाणं जणसा-मन्नेण विहवदाणेण । नूणं दिज्जंति सया नेहंमि सुहेण पाणा वि ॥ ७७ ॥ ताउ चिय धन्नाओ सव्वं चइऊण जाउ घिप्पंति । पंचमहव्वयसरणं सीलं पालंति सयकालं ॥ ७८ ॥ जाहिं न नाओ दइओ न य भोगा तह य नेव पेम्मं पि । धन्नाउ संजईओ ताउ चिय सुक्खखाणीओ ॥ ७९ ॥ उक्तं च-नूणं दुक्खसमेओ नेहो दिव्वेण निम्मिओ भुवणे । जाणं हवेइ नेहो हवइ न ताणं सुहं जेण ॥ ८० ॥ धन्नाउ संजईओ आबालाओ वि जाण हिययंमि । तव्वदहणेण विलीणो मयणो मयणु व्व लीलाए ॥ ८१ ॥ दुस्सज्झं पि हु सिज्झइ सीलपहावेण चिंतियं लोए । पाणच्चए वि एअं मोत्तव्वं नेव धीरेहिं ॥ ८२ ॥ अन्नभवे वि हु जीयं हवेइ मणवंछिओ वि पाणपिओ । न हु सीलखंडणाए हरियं पुन्नं हवइ कह वि ॥ ८३ ॥ मणवंछिओ न दइओ इहजम्मसुहाण भायणं मज्झ । वयगहणं पि हु काउं न खमा परलोयसुहजणणं ॥ ८४ ॥ एवं विणिच्छिऊणं पाणच्चायं मणंमि धरिऊणं । तत्थेव वासगेहे सज्जइ पासं निए कंठे ॥ ८५ ॥ जइ मणसा वि हु अन्नो न वंछिओ विक्कमाउ [मए] नरो । ता परभवे वि सो चिय हविज्ज सीलप्पहावेण ॥ ८६ ॥ इय भणिउं वत्थंचलमवलंबइ जाव कंठपासत्थं । ता नियइ अक्खराइं तंबोलरसेण लिहियाइं ॥ ८७ ॥ सिरिविक्कमनरनाहो तुह लेहेणं समागओ इत्थ । सो नियनयरंमि

मओ विवाहिउं पहियवेसेण ॥ ८८ ॥ नियजीवियअब्भहियाइं ताइं पेच्छित्तु अक्खराइं तहिं । वत्थंचलं पुणो पुण अवलोयइ हरिसपिम्मेण ॥ ८९ ॥ कहमेस च्चिय पहिओ जाओ सिरिविक्कमो महीनाहो । मणवंछियपाणपिओ निम्मलसीलप्पहावेण ॥ ९० ॥ सा एवं चिंतंती नियचरियं दुग्घडं हिययमज्झे । सिग्घं गमेइ रयणी हरिसेणं विहसियसरीरा ॥ ९१ ॥ तो जामिणीविरामे सेट्ठी पुच्छेइ पिययमो कत्थ ? । सा दंसइ वत्थंचलमह सो सव्वं पि हु मुणेइ ॥ ९२ ॥ अरिदमणमहीवइणो रयणवईए य कहइ सव्वं पि । तत्तो सयलं नयरं हरिसपरं झत्ति संजायं ॥ ९३ ॥ उज्जेणीनयरीए रयणवई सुंदरिं पि पेसेइ । सिरिअरिदमणो राया महाविभूईए सिग्घं पि ॥ ९४ ॥ अह ताण समागमणं नाऊणं उच्छवं कुणइ रम्मं । उज्जेणीनयरीए पवेसए विक्कमाइच्चो ॥ ९५ ॥ सेवंताइं ताइं विसयसुहं पुव्वपुन्नभावेण । सविसेसं धम्मपराइं निंति दियहाइं देव व्व ॥९६॥ सयलपुहईइ दाणं दाऊणं कुणिय ऊरिणं लोयं । संवच्छरो निओ जेणं अंकिओ विक्कमनिवेण ॥ ९७ ॥ सिरिविक्कममहिवइणो वट्टइ संवच्छरो पुहइमज्झे । अज्जवि दाणपहावा ता नूणं उत्तमं दाणं ॥९८॥ वियरंति ताइं दाणं भावंति सुभावणं च हिययंमि । दुच्चरतवं तवंति य सीलं पालंति सयकालं ॥९९॥ निअआउं पालेउं दाणं दाऊण सीलिउं सीलं । तिन्नि वि ताइं कमेणं लहंति देवत्तरिद्धीओ ॥१००॥ अज्जवि दाणपहावो सीलपहावो य दीसए लोए। एयं चिय मुणिऊणं ता धम्मे आयरं कुणह ॥१०१॥

। इति शीलव्यावर्णने सुन्दरिदेवीकथानकम् ।

नवकारफले सौभाग्यसुन्दरकथानकम्—नवकारपहावेणं तं नत्थि जं न हवेइ लोयाणं । सोहग्गसुंदरेण व जह पत्ता सयलरिद्धीओ ॥ १ ॥ मुत्तिपईनामेणं नयरीए धणधन्नरिद्धिसुहियजणा । तं पालइ नरनाहो जहत्थनामा मही-

पालो ॥ २ ॥ तस्स पिया महलच्छी ताणं सोहग्गसुंदरभिहाणो । पुत्तो कयत्थनामो सव्वकलापारसंपत्तो ॥ ३ ॥ कयवय-
मित्तसमेओ कुमरो कीलाइ अन्नदियहंमि । धवलगिहाउ पहाए विणिग्गओ चरणचारेण ॥ ४ ॥ पिच्छइ वंदणमालापडाय-
ज्झयपंतिचित्तहट्टीओ । कुमरो चउक्कतियचच्चरेसु हट्टेसु गेहेसु ॥ ५ ॥ पुच्छइ सावयमेगं सिट्ठिसुयं धम्मदासनामाणं । को
इत्थ अज्ज दीसइ महूसवो ? सो वि हु कहेइ ॥ ६ ॥ एगदिणे कुमर ! मए मुत्तिमईए नईए पत्तेणं । दिट्ठं गग्गरितुल्लं तरमाणं
एगबीजउरं ॥ ७ ॥ तं गहिउं नरवइणो समप्पियं तेण नियदइयाए । महलच्छीए तीइ वि आहारिय रंजियमणाए ॥ ८ ॥
भणियं नाह ! अउव्वो एयस्स रसो न तीरए कहिउं । ता मज्झं पइदियहं देसु फलं एरिसं एगं ॥ ९ ॥ अह जइ न देसि
एयं भोयणमवि कह वि नो कुणिस्सामि । तो दुहिएणं रन्ना तव्वुत्तं पुच्छिओ अहयं ॥ १० ॥ कहियं मए वि लद्धं मुत्ति-
मईए नईए तरमाणं । तत्तो जंपइ निवई असग्गहं चयसु देवि ! इमं ॥ ११ ॥ न मुणिज्जइ नइमज्झे कओ वि एयं समागयं
कह वि । मह वयणेणं दइए ! तेण तुमं भोयणं कुणसु ॥ १२ ॥ तहवि हु तीए वु(च)त्तं भोयणतंबोलकीलियाईयं । नरनाहो
वि न भुंजइ दुहिओ लोओ तओ सव्वो ॥१३॥ अह मइसारो मंती चउद्दिसं पेसए निए पुरिसे । गग्गरिसमबीजउरं कओ वि
आणह निएऊण ॥ १४ ॥ एगो नइमुत्तरिउं जा किं पि हु जाइ दूरमल्लवणे । गग्गरिसमबीजउरे निएइ ता सुन्नवाडीए ॥ १५ ॥
आहरहि(इ) जहिच्छाए एगं गहिऊण ताण मज्झाओ । मइसारमंतिहत्थे समप्पए सो वि महिवइणो ॥ १६ ॥ निवई वि नियपि-
याए आहरियं तीइ हिट्ठहिययाए । आणीयफलो पुरिसो रयणीए मरणमावन्नो ॥ १७ ॥ दुइयदिणे दुइएणं समाण(णि)ए मरइ
सो वि रयणीए । पइदियहं एयंमि य(एव मए)अह को वि न तं समाणेइ ॥ १८ ॥ नरनाहेणं भणिया दइए ! न हु को वि

जाइ कह वि तहिं । जीवियलुद्धो ता तं इत्थीगाहं परिच्चयसु ॥१९॥ सा भणइ भोयणेण वि पओयणं नेव देव ! तेण विणा । उववासदुयं तीए संजायं नरवइस्सावि ॥ २० ॥ अह मंती अनियंतो अन्नमुवायं कहिं पि(कहं पि) बुद्धीए । लहिऊण चिट्ठि-यासु पइगेहं लोयनामाइं ॥ २१ ॥ कलसे निक्खिवियाणं मज्झाओ नीहरेइ जस्सेसा । सो पुरिसो तंमि दिणे समाणए एगबी-जउरं ॥ २२ ॥ तस्स पुरिसस्स तुट्ठो राया वियरेइ दम्मसोलसयं । सो पावइ पंचत्तं आणीए तम्मि रयणीए ॥ २३ ॥ एवं पइदियहं चिय नयरं सव्वं पि दुक्खियं तत्तो । नीसरमाणं धरियं नरवइणा गहिय संकलिए ॥२४॥ कल्लदिणे मह वारो समागओ तं मए समाणीयं । न मओ अज्जप्पभिइं न मरिस्सइ को वि इह कुमर ! ॥ २५ ॥ तं कहियं इत्थ मए हरिसियचित्तो तओ जणो सव्वो । नयरीए उच्छाहं(च्छवं) कुणेइ पुणलद्धजम्मु व्व ॥ २६ ॥ एएण कारणेणं महूसवो इत्थ अज्ज संजाओ । भणियं कुमरेण तओ विहसियमुहकमलहियएण ॥ २७ ॥ जं कहियं सिट्ठि ! तए तमहं सव्वं मुणेमि पुव्विं पि । जं पुण न मओ तुमयं तं चिय मह कारणं कहसु ॥२८॥ अह भणइ धम्मदासो रयणिं सव्वं पि एगचित्तेण । पंचपरमिट्ठिमंतो ज्झाओ जिणधम्म-निरएण ॥ २९ ॥ जाए पहायसमए गंतूणं वाडियाइ सुन्नाए । अणुजाणेमि भणित्ता नवकारं सुमरियं हियए ॥३०॥ बिज्जउरीए गहियं फलमेगं जाव ताव सहस त्ति । पच्चक्खीहोऊणं भणियं केणावि देवेण ॥ ३१ ॥ सिट्ठि ! अहं नयरीए पुव्विं एयाए आसि भोजनिवो । एसो रम्मो रामो कीलाठाणं सया मज्झ ॥ ३२ ॥ सयमेव मए एए बिज्जउरीकेलिचूयदक्खाओ । सिंचिय जलेण फलफुल्लसंजुया विद्धिमुवणीया ॥३३॥ मह एसो आरामो नियपाणाओ वल्लहो अहियं । एयस्स फलं फुल्लं जो गिण्हइ तं हणेमि अहं ॥ ३४ ॥ पुव्वभवसिणेहेणं मरिउं इत्थेव वंतरो जाओ । तमहं हणेमि जो खलु गिण्हइ एयस्स फलफुल्लं

।। ३५ ।। सिरिमहिवालनराहिवमहलच्छीए न किं पि कुणिउमहं । जिणधम्मपुन्नभाव्वा सावय ! सक्केमि कइयावि ।। ३६ ।।
नवकारपहावेणं तुज्झ वि काउं न किं पि पारेमि । ता वरसु वरं सिग्घं ? देवाण न दंसणं विहलं ।। ३७ ।। अज्जप्पभिइं लोओ
न हणेयव्वो फले वि गहियंमि । इय मह वियरसु भणिए आमं ति पयंपियं तेण ।। ३८ ।। तं गहिय निवइहत्थे समप्पियं
कहिय सव्ववुत्तंतं । एयं मुणिउं लोएण ऊसवो एस अज्ज कओ ।।३९।। कहियं कुमर ! मए तुह जं न मओ तत्थ कारणं एयं ।
अह सो वि भणइ मज्झं सिट्ठि ! तुमं देसु तं मंतं ।। ४० ।। जस्स पहावा देवा वि हुंति वसवत्तिणो इह जणाण । सिट्ठी भणेइ
मंतं गुरुणो च्चिय देंति न हु अन्नो ।। ४१ ।। ता अत्थि संतिसूरी इत्थ गुरू गच्छ ताण पासंमि । सो पत्तो गुरुपासे नमिऊणं
मग्गिओ मंतो ।। ४२ ।। भणियं गुरूहिं जिणगुरुसुतत्तसम्मत्तसंजुओ एसो । वंछियफलं पयच्छइ सविसेसं जिणमयजुयाणं ।।४३।।
संमत्तं गहिऊणं नवकारं गिण्हए तओ कुमरो । सव्वं पि विहिं पुच्छइ भत्तिब्भरनमियसिरकमलो ।। ४४ ।। कहियं गुरूहिं जिण-
वरपडिमाण तिकालपूयणं काउं। अट्ठुत्तरसयवारं जावो एयस्स कायव्वो ।। ४५ ।। छम्मासछद्दिणाइं जाव तओ अक्खराण
संखाए । कायव्वो चित्ततवो उववासई(साइ) निययसत्तीए ।। ४६ ।। दियहाइं अट्ठसट्ठी पयपज्जंते कुणित्तु पारणयं । तत्तो
कयउज्जमणो लोयाण मणिच्छियं देइ ।। ४७ ।। वसिकरणसमुच्चाडणरूवपरावत्तनहपहपयाणं । लच्छि तणयं रज्जं एसो साहेइ
सव्वं पि ।। ४८ ।। कुमरो कयप्पणामो पत्तो गेहंमि धम्मकयचित्तो । पडिमाणं पूयाई कुणेइ मंतस्स तह ज्झाणं ।। ४९ ।।
छम्मासं जाव तओ सुद्धमणो अट्ठसट्ठिदियहाइं । पयपज्जंते पारणपुव्वं अंबिलतवं कुणइ ।। ५० ।। गुरुकहियविहाणेणं उज्जमणे
संघपूयणं काउं । जिणपडिमाए ण्हवणं विलेवणं अच्चणं तह य ।। ५१ ।। कणयविणिम्मियनवकारवन्नरुप्पमयपट्टियं एगं ।

बिज्जउरक(व)रुणदाडिमउच्छूनारंगअंबाइं ॥ ५२ ॥ वरनालिकेरवायमउतितिय(?)पभिइरम्मवत्थूणि । दहिथरमंडीमोयगसोहा-
लियगरुयखज्जाइं ॥ ५३ ॥ सव्वाइं वि ठाणाइं अट्ठुत्तरसट्ठिसंखजुत्ताइं । उज्जमणे जिणपुरओ ढोयइ कुमरो ससत्तीए ॥ ५४ ॥
एवं कयउज्जमणो जिणगुरुचलणे सया वि सो नमइ । नवकारं अट्ठुत्तरसयवारं गुणइ एगमणो ॥ ५५ ॥ अन्नदिणे अत्थाणे
कुमरो चिट्ठइ जाव उवविट्ठो । ताव य एगो पत्तो जोगिंदो बहुकलाकलिओ ॥ ५६ ॥ आसीवायं दाउं भणियं तेणं कुमार !
साहेमि । नहगामिणिबहुरूविणिविज्जं तुम्हाण साहिज्जा ॥ ५७ ॥ भणियं कुमारेणं जो हवेइ परपत्थणाइदीणमणो । पुरिसस्स
तस्स जम्मो भूमीभारावहो नूणं ॥५८॥ जोगिंद ! हवउ एयं तेण वि भणियं तुमं मसाणंमि । आगच्छसु रयणीए इय कहिउं
तत्थ सो पत्तो ॥ ५९ ॥ कुमरो तंमि मसाणे पओससमयंमि ज्झचि संपत्तो । उवविट्ठो एगमणो जोगिंदो निच्चले ज्झाणे
॥६०॥ पंचपरमेट्ठिमंतं ज्झायंतो चिट्ठए कुमारो वि । आयड्ढियकरवालो दिसाउ सव्वा निरिक्खंतो ॥ ६१ ॥ खणमित्तेणं पत्तो
भयजणओ तत्थ रक्खसो एगो । कुमराभिमुहो न हु तस्स तीरए किं पि सो काउं ॥ ६२ ॥ नवकारमंतकवयाहिट्ठियदेहं इमं
मुणेऊण । असमत्थो उवसग्गं काउं कुमरं तओ भणइ ॥ ६३ ॥ नवकारपहावेणं तुट्ठो तुह देमि दो वि विज्जाओ । तं जंपेइ
कुमारो परोवयारिक्कदिन्नमणो ॥ ६४ ॥ एयस्स चिय विज्जा दुन्नि वि वियरेसु पत्थमाणस्स । सो भणइ तुमं जोगिंद ! हवसि
कुमरस्स जइ भिच्चो ॥ ६५ ॥ ता देमि तुज्झ विज्जं सो वि तओ जंपए हवउ एयं । विज्जाजुयलं वियरइ दुण्हं पि हु तत्थ सो
असुरो ॥ ६६ ॥ सो पत्तो अद्दंसणमह कुमरो वि हु गओ निए गेहे । मित्तीभावगएण वि चिट्ठइ सह जोगिणा निच्चं ॥६७॥
आयासेणं गमणागमणं इच्छाइ दुन्नि वि कुणंति । अन्नदिणे रायगिहे पत्ता सुहसउणसंजुत्ता ॥ ६८ ॥ एगंमि जाव गोरी-

भुवणे ओयरिय ठंति खणमेगं । सहीसमेया एगा तात्र कुमारी तहिं पत्ता ॥ ६९ ॥ अवलोइयंमि कुमरे तीए ससिणिद्धवंक-
दिट्ठीए । ईसारोसभरेण व मयणेणं ताडिया एसा ॥ ७० ॥ गउरीए कुणइ पूयं सुन्नमणा विसरिसीए रयणाए । मुणियमणा
तं पभणइ कुडिला नामा सही एगा ॥७१॥ जइ सहि ! मह कहणिज्जं ता कहसु तुमं किमित्थ सुन्नमणा ? । सा भणइ परित्ताणं
न होइ कहियंमि केणावि ॥ ७२ ॥ जंपइ कुडिला पियसहि ! कहिए दुहकारणंमि कुणइ जणो । साहिज्जं सयलो वि हु अहयं
पुण तुज्झ एमेव ॥७३॥ गहिऊण तीए हत्था कुसुमाइं गुंफिऊण वरमालं । सा गंतूण कुमारं भणइ तुमं नूण चोरो सि ॥७४॥
मज्झ सहीए हिययं तुज्झ हरंतस्स एस इह दंडो । नियमणसमप्पणेणं नूणं एयाए छुट्टेसि ॥ ७५ ॥ इय भणिय तस्स
माला खित्ता कंठंमि विहसियमणस्स । भणियं जोगिंदेणं अहोऽवराहोचिओ दंडो ॥ ७६ ॥ कुडिला जंपइ निसुणसु दुग्घड-
मेयं कुमार ! वयणमिणं । नामेण जयतचंदो इह नयरे अत्थि नरनाहो ॥ ७७ ॥ जयतलदेवीनामा पाणपिया तस्स गुणगण-
निहाणं । ताणं सुहागदेवी एसा धूया समुप्पन्ना ॥ ७८ ॥ नवजोव्वणमावन्ना दिन्ना जणएहिं संपइनिवस्स । अज्ज हविस्सइ
वरणं लग्गं वि हु रयणिपहरदुगे ॥ ७९ ॥ केणावि कारणेणं एयाए तम्मि नेव रमइ मणो । सुन्नमणा संजाया अवलोइय
कुमर ! तुममिण्हिं ॥८०॥ इह समए जं उचियं विहेसु तं किं भणिज्जए तुज्झ । अह पभणइ जोगिंदो कुमर ! तुमं कुणसु मह
वयणं ॥ ८१ ॥ गहिउं सुहागदेविं चिट्ठिस्समहं गिरिम्मि वेयड्ढे । तुमयं पुण एयाए रूवं वेउव्वियं तत्थ ॥ ८२ ॥ गंतुं
कुडिलासहिओ संपइनिवई(इं) विवाहिय गिरिम्मि । आगच्छसु वेयड्ढे इय सुणिउ पभणए कुडिला ॥ ८३ ॥ जइ कुमर !
सुप्पसन्नो ता तुमयं कहसु अप्पणो चरियं । तत्तो जोगिंदेणं सव्वं पि हु तीए परिकहियं ॥ ८४ ॥ गउरीपूयणनिरया

सुहागदेवी सुणित्तु तं सयलं । हरिसियचित्ता जाया सविसेसं कुमरलाहेण ॥ ८५ ॥ जह नो पिच्छइ को वि हु तीए सरिच्छं कुणेत्तु तहरूवं । कुडिलाए समं कुमरो गओ गिहे मुणियचरियाए ॥ ८६ ॥ तं चिय सुहागदेविं मुणेइ सयलो वि तत्थ तं कुमरो । अह तीए संजायं वरणं तह पाणिगहणं पि ॥ ८७ ॥ तं गहिय संपइनिवो नियआवासंमि ज्झत्ति संपत्तो । रयणीए वासभुवणे चिट्ठंति विसज्जिउं लोयं ॥ ८८ ॥ हसियहिययाइ दुन्नि वि मोणेणं ठंति जाव खणमेगं । दक्खत्तणेण मुणिउं तच्चरियं भणइ नववहुया ॥ ८९ ॥ नाह ! कहं इह समए तुमयं चिंताउरु व दीसेसि ? । जइ नत्थि अकहणिज्जं सुपसन्नो कहसु ता मज्झ ॥ ९० ॥ सो भणइ विसन्नमणो किं इत्थ कहिज्जए पिए ! तुज्झ ? । अम्हं तुम्ह वि जम्मो निरत्थओ नूण संजाओ ॥ ९१ ॥ सा वि हु भणेइ हसिउं मा पिययम ! भणसु एरिसं वयणं । जह दुण्हं पि हु जम्मो होही सहलो तह जइस्सं ॥ ९२ ॥ नरनाहो भणइ तओ कोऊहलकारयं सुणसु किं पि । चंपाए नयरीए आसि निवो धम्मनामो त्ति ॥ ९३ ॥ धम्मवई तस्स पिया अह जाओ गब्भसंभवो ताण । तत्तो निवो अपुत्तो पंचत्तं देवि ! संपत्तो ॥ ९४ ॥ कुसलेण अमच्चेणं पसवदिणं जाव रक्खियं रज्जं । धम्मवईए जाया तणया तत्तो सबुद्धीए ॥ ९५ ॥ लोयाण पुत्तजम्मं कहिऊण महूसवो पुरीमज्झे । रिद्धीए कारवियं संपइ नामं पि से दिन्नं ॥ ९६ ॥ अंतेउरस्स मज्झे वुड्ढिं पत्तो कमेण समयंमि । नरवेसेणं तीए कलाउ सवाउ गहियाओ ॥ ९७ ॥ तत्तो अज्ज निसाए वीवाहो से तए समं जाओ । तेणम्ह अम्ह दुण्ह वि महिलाणं केरिसा भोया ॥ ९८ ॥ तो हसिउं नववहुया तं पभणइ तह वि कुणसु मा दुक्खं । जह दुण्हं पि हु जम्मो हवेइ सहलो तह जइस्सं ॥ ९९ ॥ जह दिव्वेण महेला कया तुमं तह अहं पुरिसदेवो । ता देवि ! मा विसायं धरेसु

हियyंमि क पि तुमं ॥ १०० ॥ इय भणिऊणं विज्जापहावओ कुणइ सो वि नररूवं । निवई महिलारूवं पयडइ हरिसेण संजुत्तो ॥ १०१ ॥ संपइदेवीए तओ कहिओ जणणीइ सयलवुत्तंतो । तीए पुट्ठो कुमरो वि साहए अप्पणो चरियं ॥ १०२ ॥ इत्तो सुहागदेविं गहिउं जोगी गओ य वेयड्ढे । अह कुमरो वुत्तंतं कहिऊणं संपइपियाए ॥ १०३ ॥ संपत्तो वेयड्ढे नहेण जोगिंद-रक्खिउं(अं) कुमरिं । परिणिय गंधव्वेणं ताइं पत्ताइं रायगिहं ॥ १०४ ॥ तो तत्थ तक्खण च्चिय महल्ललोओवलद्धवुत्तंतो । नव-जामाउयलाहं कहेइ सिरिजयतचंदस्स ॥ १०५ ॥ अह सो पहट्ठचित्तो सम्मं मुणिऊण ताण वुत्तंतं । संपइ लोयाणुमओ रज्जंमि निवेसए कुमरं ॥ १०६ ॥ सोहग्गसुंदरनिवो ताइं विन्नवइ गंतुमहमिण्हिं । साहिय वुत्तं गोसे जणयाण समागमिस्सामि ॥ १०७ ॥ संपइ सुहागदेवीजोगिंदजुओ नहेण रयणीए । नियधवलगिहे पत्तो सो तेहिं विसज्जिओ संतो ॥ १०८ ॥ सव्वाइं ताइं रयणिं गमिंति अन्नुन्नपिच्छिरमुहाइं । नवसंगमसुहनिव्वुयअहरीकयसग्गसुक्खाइं ॥ १०९ ॥ जाए पहायसमए कुमरो पणमेइ नव-वहूसहिओ । अम्मापियरपयाइं जोगिंदो कहइ वुत्तंतं ॥ ११० ॥ पभणइ कुमरो रज्जे अहिसित्तो तेहिं गंमिह(हि)ई । चंपाए नयरीए तुम्हाणं अणुमइं लहिउं ॥ १११ ॥ ताइं वि तुट्ठमणाइं नववहुयादंसणेण जायाइं । रायगिहे संपत्तो जणएहिं विस-ज्जिओ कुमरो ॥ ११२ ॥ सम्माणिउं विसज्जिय तत्तो तं जयतचंदनरनाहो (?) । मज्जादुगेण सहिओ सपरियणो एस चंपाए ॥ ११३ ॥ संपत्तो नरनाहो कमेण सोहग्गसुंदरभिहाणो । मुणिऊणं वुत्तंतं कुणइ जणो ऊसवं तत्थ ॥ ११४ ॥ पविसेइ पुरीमज्झे निवइ(°ई) करिरयणखंधमारूढो । धवलगिहे संपत्तो नमिओ लोएहिं भत्तीए ॥ ११५ ॥ सम्माणिऊण लोयं पसायवयणेहिं सो विसज्जेइ । धम्मुज्जमकयचित्तो पालइ रज्जं सुनीईए ॥ ११६ ॥ जोगिंदेण समेओ नहेण गंतूण निययनयरंमि ।

नमिऊण जणयवलये चंपाए एइ सो पुणवि ॥ ११७ ॥ देवीओ जिणधम्मं कुणंति ज्झायंति दो वि नवकारं । पालंति बहुं कालं रज्जं भोए य भुंजंति ॥ ११८ ॥ जिणभवणवसहिवरपुत्थएसु वियरंति चंचलं लच्छि । पंचपरमेट्ठिमंतं ज्झायंति विसेसओ ताइं ॥ ११९ ॥ नियआउं पालेउं अंते नवकारसुमरणपराइं । तिन्नि वि ताइं कमेणं सुरलोए सुरवरा जाया ॥ १२० ॥

इति नवकारफले सौभाग्यसुन्दरकथानकम् ॥

तपोविषये मृगाङ्करेखाकथानकम्—अइनिविडं पि हु कम्मं विलयं गच्छइ तवपहावेण । गाढपजलंतजलणेण मयणपडिबिंब(पिंड विव) लोयाणं ॥ १ ॥ तं नत्थि जं न जायइ तवप्पहावेण भवलोयाण । खयरी मयंकरेहा दिट्ठंते इत्थ नायव्वा ॥ २ ॥ उज्जेणी अत्थि पुरी सुरजदुल्ललियलोयरमणिज्जा । परिपालइ तहिं रज्जं महिंदसीहो महीनाहो ॥ ३ ॥ पंचसयाणं मज्झे अंतेउरियाणं वल्लहा एगा । पीइमई नामेणं सीलुज्जमधम्मगुणकलिया ॥ ४ ॥ अन्नदिणे नरनाहो उवविट्ठो चिट्ठए नियसहाए । पडिहारेणं नमिउं विन्नत्तो पिहियवयणेण ॥ ५ ॥ अप्पुव्वसुत्तहारो वंछइ देवस्स दंसणं सामि ! । पभणइ महिंदसीहो सिग्घं पविसेसु तं इत्थ ॥६॥ पडिहारेणं मुक्को नरनाहं पणमिउं समप्पेइ । कट्ठमयमोरमेगं सो साहिय (°हइ) तस्स वुत्तंतं ॥ ७ ॥ कीलियसंचाराओ उप्पयइ नहेण एस नरनाह ! । इय सुणिय तेण दिन्नो वरहारो सुत्तहारस्स ॥ ८ ॥ नरनाहो अत्थाणं विसज्जए ज्झत्ति कोउहल्लेण । उववेसिय मोरपिट्ठिं संचारइ कीलिउं एसो ॥ ९ ॥ आयासेणं भमिउं सयलदिणं जत्थ तत्थ वि सुहेण । रयणीए नियनयरे महिंदसीहो समेइ तओ ॥ १० ॥ मोरपहावेण सया उप्पयइ नहेण जेण तेणेसो । लोय-

कयदुइयनामो विक्खाओ मोरनरनाहो ॥ ११ ॥ अन्नसमयंमि पत्तो आयासेणं समुद्दमज्झंमि । मोरनिवेणं दिट्ठो तत्थेगो पव्वओ रम्मो ॥१२॥ ओयरिऊणं कोऊहलेण पिच्छेइ कन्नगं तत्थ । खामसरीरं अइतेयसंजुयं पढमवयकलियं ॥१३॥ सहस त्ति तओ हियए निज्जियदुज्जयरिओ वि मोरनिवो । भिन्नो समयं पंचहिं बाणेहिं पंचबाणेणं ॥ १४ ॥ कहकहवि तेण भणिया नियवुत्तंतं कहेसु कुमरि ! तुमं । मज्झ मणे अच्छरियं दीससि एगागिणी इत्थ ॥ १५ ॥ तं पिच्छिऊण जाया पिम्मपराहीणमाणसा सा वि । कहकहमवि लज्जाए तीए कहियं नियं चरियं ॥ १६ ॥ वेयड्ढपव्वयंदे(इंदे) नामेणं गयणवल्लहं नयरं । तत्थत्थि गयण-सेहरभिहाणओ खेयराहिवई ॥ १७ ॥ तस्सत्थि सीलकलिया भज्जा नामेण चंदरेह त्ति । ताण अहं संजाया मयंकरेहा सुया जाया ॥ १८ ॥ अह अन्नदिणंमि मए विमाणमज्झट्ठियाए आयासे । गच्छंतीए मुक्को मुहतंबोलो अहोभाए ॥ १९ ॥ सवणे मज्झ पविट्ठो तत्तसलाय व्व दुस्सहो सद्दो । एत्थ भवे अन्नभवे न हविस्सइ तुज्झ पाणपिओ ॥ २० ॥ इय तं वयणं सुणिउं दिन्ना दिट्ठी मए महीसमुहा । तंबोलरसविलित्तो दिट्ठो एगो मुणिवरिंदो ॥ २१ ॥ ओयरिय महीवीढे मुणिनाहो जंपिओ मए नमिउं । सामिय ! मह अवराहं खमिऊण अणुग्गहं देसु ॥ २२ ॥ उवसमधणेण तेणं दिन्नं पच्चुत्तरं न मह कहवि । पच्चक्खीहोऊणं सासणदेवीए भणिया हं ॥ २३ ॥ किं मुद्धि ! मुणिवरिंदो सावं कस्सावि देइ कइया वि । सिक्खाकरणनिमित्तं सविया सि मइ च्चिय इयाणिं ॥ २४ ॥ तुह उण पच्छायावा मुणिवरपयखामणं निएऊण । वियरेमि इममणुग्गहमह परिचत्त-कोवभरा ॥ २५ ॥ वरिसचउक्कं आयंबिलाणि परिहरियसयलवावारा । कुणसु तुमं रयणायरमज्झट्ठियउसहकूडंमि ॥ २६ ॥ अन्नभवे तुह होही सुंदररूवो पिओ तवपहावा । इत्थ भवे नेव पुणो सावो न हु निप्फलो जेण ॥ २७ ॥ तत्तो विसन्नचित्ता

तं नमिउं ज्झत्ति नियपुरे पत्ता । सयलो वि मए कहिओ वुत्तंतो जणणिजणयाण ॥ २८ ॥ दुहियमणेहिं तेहिं मुक्का हं इत्थ सहिदुगसमेया । आणेऊणं निच्चं ताओ मह भोयणं दिंति ॥ २९ ॥ चउवरिसअंबिलाणं अंतो मज्झं हविस्सई अज्ज । पारणयं नियनयरे तत्थ इयाणिं गमिस्सामि ॥ ३० ॥ जं तुम्हेहिं पुट्ठं तं कहिय(यं) मुद्धमाणसाइ मए । तुम्हाणं पि हु चरिअं सुणिउं इच्छामि अहमिण्हिं ॥ ३१ ॥ अह तीए तेण सव्वं सवित्थरं कहियमप्पणो चरियं । सुणिऊण धरानाहं मोरं सा हरिसिया जाया ॥ ३२ ॥ चिंतइ य इत्थ अहवा कयंमि (भवंमि) अन्ने वि हवउ मज्झ पिओ । एसो च्चिय अत्थि फलं एयस्स तवस्स जइ कहवि ॥ ३३ ॥ इय जा कुणंति वत्तं आयाउ सहि(ही)उ चल्लिया कुमरी । मोरेण गहियहियया सुन्ना पत्ता निए नयरे ॥ ३४ ॥ कुणिऊण संघवच्छल्लमणुवमं पारणं कयं तीए । सुन्नमण च्चिय चिट्ठइ निच्चं पि हु मुक्कवावारा ॥ ३५ ॥ अन्नदिणे सहिवग्गेण पुच्छिया दुक्खकारणं कुमरी । तं साहिऊण सव्वं पभणइ सा दीणमुहकमला ॥ ३६ ॥ उज्जेणीए सामी सो च्चिय मोरो महीवई मज्झ । लग्गइ देहे अहवा जालामालाउलो जलणो ॥ ३७ ॥ तं सव्वं सहिवग्गेण साहियं तीए जणणिजणयाण । मोरनिव्वरणकज्जेण पेसिओ तेहिं नियमंती ॥ ३८ ॥ खणमित्तेण नहेणं गच्छंतो परिसरे विसालाए । नयरीए संपत्तो सुहसउणविवज्जिओ सचिवो ॥ ३९ ॥ नइतीरे बहुयाओ चियाउ कट्ठेहिं सज्जमाणाओ । पिच्छिय एगो पुरिसो पुट्ठो दुहिएणऽमच्चेण ॥ ४० ॥ सो भणइ इत्थ रज्जं पालइ नाएण मोरनरनाहो । आयासेणं भमिओ सो निच्चं एइ संज्झाए ॥ ४१ ॥ अज्ज पुणो संजायं मासदुगं तस्स कत्थ वि गयस्स । न हु आगच्छइ जेणं मउ त्ति मन्निज्जए तेण ॥ ४२ ॥ न हु दुइअदिणं कहमवि चिट्ठइ कयावि मोरनिवो । तव्विरहे अंतेउरमियाणि साहिस्सए जलणं ॥ ४३ ॥ इय वुत्तंतं मुणिउं मंती

वलिउं गओ निए नयरे । तं सव्वं पि हु कहिअं कुमरीजुत्तस्स महिवइणो ॥ ४४ ॥ कुमरीए निवो भणिओ तुम्हाएसेण जामि तत्थ अहं । पिक्खेऊण सयं पि हु सिग्घं इह आगमिस्सामि ॥ ४५ ॥ मंतिजुयं नरनाहो उज्जेणिं पेसए तओ कुमरिं । सा पत्ता वेगेणं अक्कंदे सुणइ अइदुसहे ॥ ४६ ॥ कत्थ गओ नाह ! तुमं ? को अम्ह कुणिस्सई परित्ताणं ? । नियमुहकमलं दंससु एगं वेलं विलक्खाणं ॥ ४७ ॥ अंतेउरियालोयं इय विलवंतं सुणित्तु सा कुमरी । चिंतेइ तस्स विरहे कुणेमि किं जीविउमहं पि ॥ ४८ ॥ ओयरिउं भूमीए लिहिओ एगो सिलोगओ जाव । सहस त्ति तीए हिययं ता फुट्टं विरहदुहभरियं ॥ ४९ ॥ तं पिच्छिय अच्छरियं लोओ दुहिओ वि गाढदुहजुत्तो । संजाओ सयलो वि हु तं चेव सिलोगयं पढइ ॥ ५० ॥ 'मयूरो नररूपेण विधिना प्रेषितो ह्यसौ । तेनैव नीयमानाऽस्मि हहा ! सख्यौ ! यमान्तिकम्' ॥ ५१ ॥ सुणिऊण तीए वत्तं खेयरवग्गो समागओ तत्थ । अच्छरियजुओ सयलो वि लिहइ तं पढइ य सिलोयं ॥ ५२ ॥ खयरो एगो लिहिऊण तं सिलोगं गओ पिवासाए । सलिलासयस्स तीरे पत्तं मोत्तुं पिअइ सलिलं ॥ ५३ ॥ सो तं विम्हरिऊणं गंतूणं किं पि आगओ तत्थ । दिट्ठो तेणेगनरो वायंतो हत्थट्ठिअपत्तं ॥ ५४ ॥ सो भणिओ खयरेणं भो ! भो ! अप्पेसु मज्झ पत्तमिणं । पुरिसो भणेइ केणं एसो लिहिओ इह सिलोगो ॥ ५५ ॥ सो जंपइ मोरनिवो कहवि मओ तस्स विरहदुक्खेण । विज्जाहरनिवदुहिया मयंकलेहा मुया तत्तो ॥ ५६ ॥ लिहियंमि सिलोगंमी महीए तीए दुहागयं हिययं । कोऊहलेण एसो पढिओ आबालवुड्ढीए ॥५७॥ इय सुणिउं पहियनरो झूरइ हिययंमि दुक्खिओ बाढं । हा ! हा ! मयंकलेहा पंचत्तं निप्फलं पत्ता ॥५८॥ सच्चं मुणेमि सव्वं विज्जाहर ! सुणसु निवइवुत्तंतं । सो जलनिहिंमि पत्तो मोरेणं कीलियपहावा ॥५९॥ तत्थ तवसोसियंगी दिट्ठा विज्जाहरिंदवरधूया । पारणदियहे तेणं तत्तो सा

नियपुरे पत्ता ॥६०॥ तव्विरहे मोरनिवो सुन्नमणो भमइ पव्वए तत्थ । किंकायव्वविमूढो विलवंतो बहुपयारेहिं ॥ ६१ ॥ सुन्नम-णेणं तेणं गच्छंतेणं न कीलिया गाढा । दिन्ना तेण समुद्दे सा पडिया मोरनिवजुत्ता ॥ ६२ ॥ लहिऊणं दिव्वरसा फलाइं जलहिं तरित्तुमिह पत्तो । मग्गं अयाणमाणो परिब्भमंतो अहं एसो ॥ ६३ ॥ तो किं मह जीएण विरहे तीए मयंकरेहाए । इय बहु-पयारचिंतासंतत्तमणस्स तहिं समए ॥६४॥ तव्विरहदुक्खभरियं हियय फुट्टं तड त्ति मोरस्स । विज्जाहरो निएउं तं सव्वं चिंतए दुहिओ ॥ ६५ ॥ मह वत्तं सुणिऊणं पत्तो पंचत्तमेस सहस त्ति । एयस्स मरणहेऊ जाओ हं कह णु पाविट्ठो ॥ ६६ ॥ इय खेयं काऊणं मयं पि तं कुणिय नियविमाणंमि । उज्जेणीए बाहिं चिआसमीवम्मि मुत्तूण ॥ ६७ ॥ अंतेउरियालोयं पभणइ सो खिन्नमाणसो तत्थ । इत्थीहच्चापावस्स मूलमेयस्स हं जाओ ॥ ६८ ॥ जेण मए मयवत्ता कहिया विज्जाहरीकुमारीए । हिययं तड त्ति फुट्टं एयस्स तओ इहाणीओ ॥ ६९ ॥ अह अंतेउरलोओ नियदइयं मुणिय मरणमावन्नं । हरिसपरो तं गहिउं खयरिं पि हु विसइ जलणंमि ॥ ७० ॥ अह गयणसेहरनिवो दुहिओ दुहियाइ कुणइ मयकिच्चं । मरिउं उववन्नाइं ताइं दुवे जत्थ तं सुणसु ॥ ७१ ॥ नामेण विलासपुरं अत्थि पुरं महीयलंमि विक्खायं । चंदजसो तत्थ निवो चंदमुही पिययमा तस्स ॥ ७२ ॥ मोरनिवो मरिऊणं संभूओ ताण पुत्तभावेण । पुरिसुत्तमकयनामो जाओ बालो वि नरनाहो ॥ ७३ ॥ सुणिऊण तं सिलोयं पढिज्जमाणं जणेहिं पुव्वुत्तं । चिंतेइ महीनाहो कहं पि निसुओ मए एसो ॥ ७४ ॥ ऊहापोहं सो कुणइ जाव ता ज्झत्ति तस्स संजायं । जाइस्सरणं अह तेण पिच्छए पुव्वभवचरियं ॥ ७५ ॥ मह कज्जे परिचत्तं नियजीयं जीए पच्छिमभवंमि । कत्थुप्पन्ना होही मयंकरेहा पिया सा मे ॥ ७६ ॥ तीए विणा पज्जत्तं भोएहिं मज्झ जावजीवं पि । इय चिंतिय न हु परिणइ अन्नं सो

कं पि निवकुमरिं ॥ ७७॥ अह पमुहमंतिलोओ पभणइ नरनाह! बंभचेरवयं। जुत्तं साहूण सया पुहइवईणं पुणो नेव ॥ ७८॥ मोणेणं चिय चिट्ठइ सो ताण न किं पि उत्तरं देइ। परिपालइ रज्जभरं सत्तहिं वसणेहिं परिचत्तो ॥ ७९॥ पच्चक्खीहोऊणं संज्झाए कहइ अन्नदियहंमि। पुरिसोत्तमस्स रण्णो पूयानिरयस्स कुलदेवी ॥ ८०॥ पउमावइनयरीए पत्राहि(इ)याहिहिट्ठिओ समत्थि मढो। पुव्वभवपिया तुज्झं तहिं चिट्ठइ कुसुमसिरिनामा ॥ ८१॥ गच्छसु तत्थेव तुमं इयाणिमवि कुणिय महिलियारूवं। सा(तं)परिणिय वलिऊणं रयणीइ वि आगमिज्जासु॥ ८२॥ सुणिऊण तीए वयणं संतुट्ठो चिंतए पुहइनाहो। सा लद्धा नूण मए मयंकरेहा हियइट्ठा॥ ८३॥ अह निवई लिहइ पडे सवित्थरं अप्पणो वि तीए वि। पुव्वभवं ससिलोयं नामजुयं मोरनहगमणं ॥ ८४॥ तस्सत्थि पुणो सिद्धो आबालाओ वि एगवेयालो। चिंतियमित्तं पत्तं महिनाहो तं पयंपेइ ॥ ८५॥ गंतव्वं अम्हेहिं इयाणि पउमावईए वेयाल!। उत्तवेसइ नियखंधे ते तत्थ गया दुवे तत्तो ॥ ८६॥ एक्कम्मि उज्जाणे विस्समिओ चिंतए महीनाहो। इत्थीरूवं अहयं कुणेमि अह तत्थ गमणत्थं॥ ८७॥ खणमित्तं संजाया निद्दा चिंतापरस्स नरवइणो। अह विज्जाहरजुयलं कीलाहेउं तहिं पत्तं ॥ ८८॥ भममाणो सच्छंदं उज्जाणे खेयरो तहिं ठाणे। संपत्तो जहिं चिट्ठइ पुरिसोत्तमनरवई सुत्तो ॥ ८९॥ निरुवमरूवं तं पिच्छिऊण विज्जाहरो वि चिंतेइ। जइ नियइ इमं कहमवि परिभमंती पिया मज्झ ॥ ९०॥ एयंमि रत्तचित्ता विगलियनेहा ममोवरिं होही। तस्स चरणंमि तत्तो सो बंधइ ओसहिं एगं ॥ ९१॥ सो गच्छइ अन्नत्तो जग्गइ पुरिसुत्तमो तओ निवई। अप्पाणं पुण पिच्छइ इत्थीरूवं तओ हिट्ठो ॥ ९२॥ हरिसभरनिब्भरंगो जायं कह मज्झ महिलियारूवं। इय जा चिंतइ चरणे बद्धं ता ओसहिं नियइ ॥ ९३॥ एयाइ पहावाओ मह जायं नूण रमणियारूवं। गच्छामि अहमि-

याणिं अविसंकं तस्स पासंमि ॥ ९४ ॥ लोयाओ मुणिऊणं सो गच्छइ तत्थ चइय वेयालं । नमइ पवाइयचलणे तं पुच्छइ सागयं सा वि ॥ ९५ ॥ कक्खाहि पडो पडिओ पणामसमए निवस्स सहस त्ति । गहिओ कुसुमसिरीए अवलोयइ नियय-पुवभवं ॥ ९६ ॥ कयमुणिवरोवसग्गो कुणेमि एसा अहं तवं इत्थ । लिहियसिलोगा य सुया एसो सो मोरमहिनाहो ॥ ९७ ॥ एयं मुणेमि मवं सो चिट्ठइ जत्थ तं पुणो नेय । तेणं चिय एस पडो लिहिओ अन्नस्स न हु सत्ती ॥ ९८ ॥ एयं चिय पुच्छेमी मुणिस्सए नूण सवमवि एसा । हत्थट्ठियकंकणे णं किं किज्जइ दप्पणेणहवा ॥ ९९ ॥ सा हरिसमणा पभणइ नव-महिलं केणिमो पडो लिहिओ ? । सा कहइ विलासपुरे पुरिसुत्तमपुहइनाहेण ॥ १०० ॥ इय कहियं तुज्झ मए तुमं पि मह कहसु भणइ नवमहिला । नियवुत्तंतं सवं कुसुमसिरी साहए तीए ॥ १०१ ॥ पउमावइनामेणं एसा नयरी सुनीइसंपन्ना । इह पउममहीनाहो पउमसिरी पिययमा तस्स ॥ १०२ ॥ कुसुमसिरी संजाया ताण सुया विसयसेवणपराण । सा लोयाउ सिलोयं मयूरपयलंछियं सुणिउं ॥ १०३ ॥ कत्थ वि एस सिलोओ सुणिओ पुविं मए इह सुरम्मो । ऊहापोहं सा कुणइ जाव ता तीए संजायं ॥ १०४ ॥ जाईसरणं सहसा सवित्थरं मुणइ अप्पपुवभवं । स च्चिय मयंकरेहा मरिऊणं इत्थ उववन्ना ॥ १०५ ॥ मोरनिवं पुवपियं कत्थुववन्नं अयाणमाणा सा । कुणइ पइन्नं लग्गइ मह देहे सो व जलणो वा ॥ १०६ ॥ अन्नं पुरिसं दिट्ठीए पिच्छई नेव कहवि कइयावि । अह पउममहीनाहो मुणिउं नवजोवणं दुहिओ ॥ १०७ ॥ सो नेमित्ति-यमेगं पुच्छइ एयाइ मज्झ तणयाए । मणइट्ठो को होही पाणपिओ ? कहसु मुणिऊण ॥ १०८ ॥ सो भणइ मढे चिट्ठउ इमंमि एसा लहिस्सई ज्झत्ति । मणवंछियपाणपियं पुरिसुत्तमनामनरनाहं ॥ १०९ ॥ सा य अहं इह मुक्का पवाइयाओ

सुणेमि धम्मकहं । नयणेहिं नन्नपुरिसं पिच्छेमि सुरूवकलियं पि ॥ ११० ॥ इय सहि ! सव्वो कहिओ नियवुत्तंतो मए तुहं
इहइं । ता चलसु मज्झ जणयाण संनिहाणंमि सिग्घं पि ॥ १११ ॥ तं नेइ बलाउ तओ कुसुमसिरी कहइ जणणिजणयाण ।
मह पुव्वपिओ चिट्ठइ विलासनयरे तहिं गमिस्सं ॥ ११२ ॥ तत्तो पुराउ एसा समागया मह सही पडं गहिउं ।
साहिन्नाणं लिहियं पियचरियं तत्थ वित्थरओ ॥ ११३ ॥ जणएहिं सा भणिया गच्छसु वच्छे ! सयंवरा तत्थ ।
अहिणवसहीए सद्धिं अमच्चवग्गेण य इयाणिं ॥ ११४ ॥ तो नवमहिला पभणइ गमणकिलेसेण तुज्झ किं इमिणा ? । आणेमि
इत्थ जइ तं ता किं दाही तुमं मज्झ ? ॥ ११५ ॥ तं जंपइ कुसुमसिरी दइयं आणेसि जइ तुमं इत्थ । ता मग्गसि जं तुमयं
मणिच्छियं तं अहं देमि ॥ ११६ ॥ नवमहिला तो पभणइ जइ एवं पिच्छ ता समाणीयं । तो छोडिऊण ओसहिमेसा
दंसेइ नररूवं ॥ ११७ ॥ तं पिच्छिय अच्छरियं भयहरिससमाउला तओ बाला । पुव्वभवाभिन्नाणे सपच्चए कहइ सो तीए
॥ ११८ ॥ उल्लसियपिम्मनवपुलयअंकुरा तक्खणंमि सा जाया । सो तं पभणइ बाले ! यार्णि चिय तत्थ गंतव्वं ॥ ११९ ॥
जेणं अकहियवत्तो वेयालपहावओ इहं पत्तो । सामंतपमुहलोओ कुणिस्सई मज्झ अवसेरिं (?) ॥ १२० ॥ तं सव्वं मुणिऊणं
हरिसभरुब्भिन्नपुलयललियंगो । पउमनिवो दुण्हं पि हु सुमुहुत्ते कुणइ वीवाहं ॥ १२१ ॥ पउमनिवेणं सम्माणिऊण पुरि-
सुत्तमो महीनाहो । कुसुमसिरीए समेओ विसज्जिओ नियपुराभिमुहं ॥ १२२ ॥ सुमरियमित्तो तेणं वेयालो आगओ चडावेइ ।
एगे खंधे पुरिसुत्तमं च दुइए य कुसुमसिरिं ॥ १२३ ॥ अह तेण तक्खण च्चिय सुहेण नीओ निवो नीए ठाणे । अहिणवपियाए
सहिए विलासभुवणे ठिओ रम्मे ॥ १२४ ॥ कुसुमसिरीए पुट्ठं पिअयम ! कज्जेण केण नयरीए । पउमावईए पत्तो अह सव्वं

साहियं तेण ॥ १२५ ॥ जंपइ पहायसमए दट्ठुं सपियं निवं पयइवग्गो । अज्ज रयणीए जायं सामिअ ! एयं किमच्छेरं ? ॥ १२६ ॥ सव्वो वि तस्स कहिओ तेणं कुलदेवयाए वुत्तंतो । निव्वुयहियओ तत्तो पालइ पुरिसुत्तमो रज्जं ॥ १२७ ॥ सो मणवंछियभोए तीए समं भुंजई बहुं कालं । अन्नदिणे उज्जाणे समागयं मुणिय मुणिनाहं ॥ १२८ ॥ कुसुमसिरीए समेओ पत्तो पुरिसुत्तमो महीनाहो । नमिऊण साहुचलणे उवविट्ठो उचियठाणंमि ॥ १२९ ॥ मुणिणा वि समारद्धा गंभीरसरेण देसणा पवरा । धम्मो चउप्पयारो सारो च्चिय इत्थ संसारे ॥ १३० ॥ तत्थ वि तवे विसेसो दुच्छिन्नाइं पि नूण कम्माइं । जस्स पहावा विलयं गच्छंति जणाण मयण व्व ॥ १३१ ॥ तवमाहप्पवसेणं कूरमणो वि हु न पारए काउं । लोयाणं उवसग्गं तम्हा तत्थेव जइयव्वं ॥ १३२ ॥ इय देसणं सुणेउं मुणिनाहं पणमिऊण नियठाणे । संपत्तो नरनाहो सुहेण सो गमइ दियहाइं ॥ १३३ ॥ सिरिकुसुमसिरीदेवीसहिओ पुरिसुत्तमो कुणइ धम्मं । सम्मं जिणभणियं दाणसीलतवभावणारूवं ॥ १३४ ॥ नियआउसमत्तीए मरिऊण गयाइं देवलोगंमि । मिहुणत्तणेण तत्थ वि भुंजंति जहिच्छिए भोए ॥ १३५ ॥ पावेइ तवपहावा मयंकरेहा भवंतरे पत्ते । मणइट्ठं पाणपियं तं चिय मोरं महीनाहं ॥ १३६ ॥

इति तपोविषये मृगाङ्करेखाकथानकं समाप्तम् ।

तपोविषये अघटकथानकम्—तं किं पि नत्थि जं न हु सिज्झइ लोए तवप्पहावेण । अघडेण जहा पत्तं दासी-पुत्तेण वि सुरज्जं ॥ १ ॥ इंदपुरीए समाणा भारहखेत्ते अवंतिदेसंमि । अत्थि विसाला नयरी नामेणं सिरिविसाल त्ति

॥ २ ॥ बुद्धिपरक्कमदाणोवयारदक्खिक्कगुणगणसमेओ । तत्थऽत्थि महीनाहो सुवक्खियनामेण नायपरो ॥ ३ ॥ सीलजुया पाणपिया नामेणं मयणमंजरी तस्स । पंचप्पयारविसए दुन्नि वि भुंजंति अणवरयं ॥ ४ ॥ विक्कमसीहो पुत्तो उप्पन्नो ताण गुणगणनिवासो । तणया य रयणसुंदरिनामा जियअच्छरारूवा ॥ ५ ॥ तस्सत्थि महीवइणो पुरोहिओ नाणगब्भ नामेण । पसिणाओलग्गाओ भूयमविस्सं मुणइ सवं ॥ ६ ॥ अन्नदिणे नरनाहो अत्थाणं पूरिऊण उवविट्ठो । सामंतदंडनायगमंति-पुरोहिअपराउत्तो ॥ ७ ॥ अह एगो कम्मयरो आगंतूणं गिहाउ वेगेणं । कहिऊणं किं पि पुरोहिअस्स सवणे गओ सिग्घं ॥ ८ ॥ तं सुणिय विम्हियमणो दाउं नहछोडियं धुणियसीसं । तं पिच्छिऊण निवई पुच्छइ अच्छरियअक्खित्तो ॥ ९ ॥ किं तुह विम्हयठाणं ? कहेसु मह नाणगब्भ ! सिग्घं पि । सो भणइ देव ! एयं न कहिज्जइ कहवि कस्सावि ॥ १० ॥ इय भणिए नरनाहो निब्बंधेणं पुणो वि पुच्छेइ । अमयाउ वि महुरतरा अद्धं कहिआ हवइ वत्ता ॥ ११ ॥ जंपेइ नाणगब्भो हविस्सई तुज्झ दुक्खमइगरुयं । तहवि कहिज्जइ अइआगहु त्ति नरनाह ! सुण इण्हीं ॥ १२ ॥ मज्झ घरे कम्मयरी समत्थि एगा सुयं पसूया सा । संपइ सरूवकलियं इय सुणिउं भणइ नरनाहो ॥ १३ ॥ किमणेण कारणेणं निरत्थयं मत्थयं विहूणेसि ? । जंपइ य नाणगब्भो न निप्फला देव ! मह चिट्ठा ॥ १४ ॥ तो नरनाहो पभणइ सच्चं चिय कहसु सवमवि एयं । वज्जरइ नाणगब्भो नाणेण मुणियपरमत्थो ॥ १५ ॥ जीवंतंमि वि देवे एसो दासीसुओ सुकयपुन्नो । इह नयरीए रज्जं करिस्सई नेह संदेहो ॥ १६ ॥ इय मुणिउं नरनाहो विसज्जए तत्थ झत्ति अत्थाणं । तो पत्तो नियगेहे पुरोहिओ पिच्छए बालं ॥ १७ ॥ देहपहाउज्जोइयदिसिवलयं चक्कवालकरचरणं । दासीपुत्तं नरवइवरलक्खणकलियसवंगं ॥ १८ ॥ अह सुघडियनर-

नाहो चिंतइ हिययंमि दुक्खिओ अहियं । नेह पुरोहियवयणं वितहं कइयावि खलु जायं ॥ १९ ॥ ता जाव एस अज्ज वि बालो निहणेमि ताव सिग्घं पि । इय चिंतिऊण पुरिसाण जुयलमेगं समाइट्ठं ॥ २० ॥ गंतुं पुरोहियगिहे पच्छन्नं दासिदारयं हणह । इअ निवइसमाएसं लहिऊण गया णिसीहंमि ॥ २१ ॥ विसिउं पुरोहियगिहे सुत्ताणं ताण गहिय तं पुत्तं । नीह-रिऊण पुरीए जुन्नुज्जाणे गया पुरिसा ॥ २२ ॥ अन्नोन्नं ते दुन्नि वि भणंति बालो अईवसुकुमालो । न वहंति अम्ह हत्था हणमाणाणं इमं कहवि ॥ २३ ॥ इय चिंतिअ उज्जाणे बालं मुत्तूण तत्थ जीवंतं । सुघडियरायसमीवे गंतूण भणंति ते एवं ॥ २४ ॥ अम्हेहिं देव ! बालो हणिओ सो जत्थ केण वि ण दिट्ठो । तं सुणिय ताण वयणं नरनाहो निव्वुओ जाओ ॥ २५ ॥ अह तणयं अनियंती अक्कंदंती निवारिया दासी । पुत्तस्स भाविरज्जं कहिऊणं नाणगब्भेण ॥ २६ ॥ पुन्नवसेण विभाया बालस्स विभावरी सुहेणं सा । उज्जाणपालओ तत्थ ज्झत्ति पत्तो पियासहिओ ॥ २७ ॥ सो जंपिउं पउत्तो पिययमि ! सुक्को वि एस आरामो । रम्मफलकुसुममंजरीजुत्तो दीसइ अगाले वि ॥ २८ ॥ सा जंपइ पिय ! बालो पुन्ननिही दीसए बउलमूले । एयस्स पहावेणं फुल्लियफलिओ इमो नूणं ॥ २९ ॥ गंतूण तत्थ सिग्घं गहिओ तीए करेहि सो बालो । मालागारो तं पिच्छिऊण लग्गो पयंपेउं ॥ ३० ॥ सव्वंगलक्खणधरो बालो एसो सिरीइ आवासो । पुन्नरहिएण केण वि निक्करुणेणं इहं मुक्को ॥ ३१ ॥ धन्नेण विणा रयणीए जीविओ एस अज्ज कह बालो । अघडियचरियं एयस्स तेणिमो अघडनामो त्ति ॥ ३२ ॥ इण्हिं हवेउ पिययमि ! तुज्झ अपुत्ताइ पुत्तओ एस । अहिणवपसूयवेसा चिट्ठसु एत्थेव उज्जाणे ॥ ३३ ॥ लोए पयासियव्वं एयं चिय गूढगब्भसंजुत्ता । अज्ज पसूया एसा तणयं उज्जाणगयमत्ता ॥ ३४ ॥ इय भणिऊणं मालागारो पत्तो नियंमि ठाणंमि ।

जहमंतिअवुत्तंतो पयासिओ लोयमज्झंमि ॥ ३५ ॥ जहवुत्तं वुत्तंतं सव्वं कहिऊण तेण पच्छन्नं । वीसंभठाणमेगा मुक्का धाई पिआपासे ॥ ३६ ॥ मालागारस्स पिया कइवयदियहेहिं आगया सगिहं । अघडकुमारो वड्ढइ कीलंतो विविहकीलाहिं ॥ ३७ ॥ अह सो मालागारो ओलगकुसुमाइं अप्पए तत्थ । सुघडियभिहाणरन्नो पहायसमयंमि पइदियहं ॥ ३८ ॥ अन्नम्मि दिणे तणयं अघडं गहिऊण मालिणी एसा । गच्छइ निवइसयासे अप्पइ कुसुमाइं अत्थाणे ॥ ३९ ॥ पुहईवइणा दाउं पसायदाणं विसज्जिया एसा । अह भणइ नाणगब्भो सुणेसु नरनाह ! मह वयणं ॥ ४० ॥ गिण्हिस्सइ तुह रज्जं पुत्तो एयाए मालिणीए फुडं । इय सुणिउं नरनाहो अइदुहिओ चिंतए हियए ॥ ४१ ॥ न हु हणिओ तेहिं तया मुक्को कत्थ वि हविस्सई बालो । तो पत्तो एयाए अहवा ति चेय पोच्छामि ॥ ४२ ॥ सद्दाविऊण ते वि हु अभयं दाऊण बालवुत्तंतं । पुच्छेइ महीनाहो कहंति ते सच्चमेगंते ॥ ४३ ॥ तो नरनाहो अन्नं पुरिसं पभणेइ झत्ति एगंते । मालिणिबालो जो इत्थ आगओ हणिअ तं सिग्घं ॥ ४४ ॥ तक्कंठठियाभरणं आणसु गहिऊण मह सयासंमि । इह लद्धसमाएसो सो पत्तो तत्थ ठाणंमि ॥ ४५ ॥ मग्गे तं पिरमंतं दट्ठुं काऊण खंधदेसंमि । केण वि अदिस्समाणो संपत्तो बाहिरुज्जाणे ॥ ४६ ॥ अघडो वि तस्स कुच्चं गिण्हंतो भणइ ताय ! ताय ! त्ति । सो वि हु करुणारसिओ संजाओ सुणिय तं वयणं ॥ ४७ ॥ बालेण इत्थ ताओ भणिओ ता हं हणेमि कह णु इमं । इय चिंतिऊण मुक्को भवणे जक्खस्स एगंमि ॥ ४८ ॥ कंठाभरणं गहिउं पुरिसो पत्तो निवस्स पासंमि । तं अप्पिऊण पभणइ देवाएसो मए विहिओ ॥ ४९ ॥ तो सुघडियनरनाहो अहिनाणं पिच्छिऊण चिंतेइ । हणिओ अणेण बालो हरिसियचित्तो तओ जाओ ॥ ५० ॥ मालागारो अह मालिणी अ पिच्छंति नेव नियपुत्तं । दाऊण उवालंभे विहिणो चिट्ठंति

दुहियाइं ॥ ५१ ॥ अह सो अघडकुमारो कीलाए भमइ तंमि देवउले । पिच्छेइ जक्खपडिमं आलिंगइ झत्ति तं सो वि ॥ ५२ ॥ कुच्चं पि परामुसई बालसहावेण ताय ! ताय ! त्ति । पभणंतो जंघोवरि उववसई हसिरमुहकमलो ॥ ५३ ॥ एवं तव्वयणाइं विविहाइं जक्खवंतरो सुणिउं । पिम्मपरायणहियओ करुणाभरमंथरो जाओ ॥ ५४ ॥ तं पिच्छिऊण बालं जक्खो चिंतेइ ओहिनाणेण । कत्थ ट्ठिओ पुन्ननिही चिट्ठिस्सइ एस सोक्खेण ॥ ५५ ॥ अह तंमि पुणो समए उज्जाणे तत्थ देवधरनामा । आवासिओ समंता लच्छिसमिद्धो वणियपुत्तो ॥ ५६ ॥ बालस्स एयमुचियं ठाणं नाऊण देवरूवेण । जंपइ निसाइ जक्खो वणिसुय ! जग्गेसि अह सुत्तो ? ॥ ५७ ॥ तं वयणं सुणिऊणं अब्भुट्ठाणं कयं तओ तेण । जग्गामि अहं सामिय ! तं पभणइ देवधरसेट्ठी ॥ ५८ ॥ तो जंपइ तं जक्खो वंतरदेवं मुणेसु मं सोम ! । मह एयं उज्जाणं कुणेमि कीडं सया इत्थ ॥ ५९ ॥ देवधरसेट्ठि ! पुत्तय ! आवाससि इत्थ मज्झ उज्जाणे । ववहारबुद्धिगमणागमणेणं सव्वकालं पि ॥ ६० ॥ कइयावि तए न कओ उवद्दवो कुसुमफलदलाणित्थ । एएण कारणेणं तुट्ठो हं तुज्झ वरसु वरं ॥ ६१ ॥ तो पभणइ देवधरो लच्छीना(रा)माइं मज्झ गेहंमि । नो अत्थि पुणो पुत्तो तं चिय मह देसु जइ तुट्ठो ॥ ६२ ॥ इय सुणिउं जक्खो वि हु पभणइ मह देउले पभायंमि । उच्छंगे उवविट्ठं गिण्हसु बालं अघडनामं ॥ ६३ ॥ इय भणिउं सो देवो पत्तो अद्दंसणं तओ सेट्ठी । चिंतेइ सुमिणमेयं मइमोहो अहव किं सच्चं ? ॥ ६४ ॥ गमिऊण सयलरयणिं पहायसमयंमि हिट्ठचित्तेण । पत्तेण जक्खभुवणे दिट्ठो बालो गुणनिवासो ॥ ६५ ॥ संपूइऊण जक्खं बालं गहिउं गओ निए ठाणे । देवइभज्जाइ तओ समप्पिओ कहिय वुत्तंतं ॥ ६६ ॥ पुत्तरहियाए तीए गहिओ बालो अबालचरिओ सो । देउलवाडयगामे पुत्ताइं ताइं निययंमि ॥ ६७ ॥ अघडकुमारो एसो

संजाओ अट्ठवरिसपरिआओ । सव्वकलापारगओ थोवदिणेहिं [1]पिअभिओगो ॥ ६८ ॥ सा का वि हु नत्थि कला तं नाणं नेव नेव विन्नाणं । जं सो न मुणइ अघडो बालो वि अबालबुद्धीए ॥ ६९ ॥ अह अन्नया कयाई देवधरो अघडपुत्तसंजुत्तो । ववहारेणं पत्तो नयरीए सिरिविसालाए ॥ ७० ॥ आवासिऊण बाहिं थालं गहिऊण रयणपडिपुन्नं । संपत्तो धवलगिहे पुत्तजुओ नमइ नरनाहं ॥ ७१ ॥ वररयणाइं पिच्छिय हरिसियचित्तो पयंपए निवई । सिट्ठिसुय ! तुज्झ दाणं सव्वं मुक्कं पसाएण ॥ ७२ ॥ तो वीडिअं पयाउं निययावासंमि पेसिओ सेट्ठी । अह एगंते जाए पयंपियं नाणगब्भेणं ॥ ७३ ॥ सामिय ! एयस्स सुओ करिस्सई रज्जमित्थ नयरीए । जीवंतंमि वि देवे तं सुणिउं चिंतए निवई ॥ ७४ ॥ दुट्ठमणेणं तेण वि किं मह वेरी न मारिओ होज्ज । मारेयव्वो बालो संपइ वि कयावि जुत्तीए ॥ ७५ ॥ अह अत्थाणे पत्तो देवधरो अघडपुत्तपरियरिओ । नरनाहेणं पुट्ठो ससिणेहं कूडहियएण ॥ ७६ ॥ देवधर ! तुज्झ पुत्तो दीसइ एसो सुलक्खणो सूरो । ता रम्ममेगदेसं देमि पसाएण एयस्स ॥ ७७ ॥ नमिऊण भणिय(भणइ) सेट्ठी सामिय ! अम्हाण नेव वंसंमि । जाओ कस्स वि देसो अइभयभीया वणियजाई ॥ ७८ ॥ तो अघडो वि हु पभणइ किं ताय ! भणेसि एरिसं वयणं ? । किं चक्कवट्टिपिउणा पत्तं कइयावि चक्कित्तं ? ॥ ७९ ॥ सोऊणं तव्वयणं निउणं सपरक्कमं सउच्छाहं । रन्नो दिन्ना नयरी महुरा महुरं चवंतेणं ॥ ८० ॥ पत्तलयं गहिऊणं अघडेण गएण तीए नयरीए । देउलवाडयगामे नियजणओ पेसिओ ज्झत्ति ॥ ८१ ॥ देवधरो वि कमेणं गच्छंतो नियपुरंमि संपत्तो । हरिसियचित्तो लोयाण कहइ पुत्तस्स वुत्तंतं ॥ ८२ ॥ सयलजणो वुत्तंतं सुणिऊणं गओ पुरीए महुराए । अघडपहुणा वि

---

१ पिअभिहोगो A ।

दिन्नो जहजोग्गं तस्स अहिगारो ॥ ८३ ॥ अह सुघडियनरनाहो कुडिलमणो चिंतए नियमणंमि । कहमेसो हणियव्वो अघडो सुघडियसुकयपुंजो ॥ ८४ ॥ अहवा अत्थि उवाओ विक्कमसिंहस्स मइगुणिजुत्तस्स । जियसत्तुविग्गहत्थं गयस्स पेसेमि तत्थ इमं ॥ ८५ ॥ इय चिंतिऊण लिहिअं जुयलं लेहाण तेण सयमेव । विक्कमसिंहसुयस्स य एगो एगो य अघडस्स ॥ ८६ ॥ एयं लेहाण जुयं अघडकुमारस्स सिग्घमप्पेसु । इय भणिय लेहहारो विसज्जिओ झत्ति महुराए ॥ ८७ ॥ गंतूण तेण सिग्घं समप्पियं तस्स लेहजुयलं तं । नियनामंकियमेगं दट्ठूणं वायए अघडो ॥ ८८ ॥ उज्जेणीए विक्कमसिंहस्स गयस्स सत्तु-जिणणत्थं । दुइअं लेहं गिण्हिअ गंतव्वं तत्थ तुमए वि ॥ ८९ ॥ तक्कालं तं लेहं गिण्हिय चउरंगविउलदलकलिओ । संपत्तो सो कमसो रयणीए कुमरकडयंमि ॥ ९० ॥ जक्खो वि तंमि समए संपत्तो तत्थ अघडपुण्णेण । लेहत्थो नाणेणं जहट्ठिओ तेण्णिमो नाओ ॥ ९१ ॥ विक्कमसिंह ! तुमं खलु देसु विसं झत्ति अघडकुमरस्स । एयाणमक्खराणं ठाणे जक्खो लिहइ एयं ॥ ९२ ॥ कुमरीए रयणसुंदरिनामाए तह य अघडकुमरस्स । कारेयव्वं सिग्घं पाणिग्गहणं तए वच्छ ! ॥९३॥ सुरसत्तीए लिहिउं जक्खो वि गओ पभायसमयंमि । मिलिऊणं अघडेणं कुमरस्स समप्पिओ लेहो ॥ ९४ ॥ वाएइ तओ कुमरो मुणिऊणं भणइ जोइसियं । कुमरीए अघडस्स य विवाहलग्गं कहसु सिग्घं ॥ ९५ ॥ जोइसिओ तं पभणइ सुज्झइ अज्जेव अहव वरिसदुगे । कुमरो चिंतइ ताएण पेसिओ तेण इह एसो ॥ ९६ ॥ संखेवेणं जाओ तम्मि दिणे ताण दुण्ह वि विवाहो । एयं कहमवि मुणिउं सुघडियराया वि चिंतेइ ॥ ९७ ॥ सच्चं चिय भणइ जणो जं कुणइ विही हवेइ तं चेव । जं न घडइ कइयावि हु तं घडियं तेण अघडस्स ॥ ९८ ॥ अह रत्तिजागराओ जायाइ विसूइयाइ वियणत्तो । पंचत्तं संपत्तो विक्कमसिंहो मिहिरसेण ॥९९॥

अघडेण कयं सव्वं मयकिच्चं तस्स दुक्खियमणेण। जाणाविओ य एयं सिग्घं सुघडियपुहइनाहो ॥ १०० ॥ नियपुत्तमरण-
सवणे हियए सुघडियनिवस्स सहस्स त्ति। तं उप्पन्नं दुक्खं जं न हु तीरेइ कहिउं पि ॥ १०१ ॥ अह तम्मि चेव समए
केवलनाणी समोसढो तत्थ। सुणिऊण सुघडियनिवो तस्स गओ वंदणनिमित्तं ॥ १०२ ॥ तिपयाहिणं करेउं वंदिय उवविसइ
उचियभूमीए। तं केवली वि पभणइ मुंचसु खेयं सुणसु एयं ॥ १०३ ॥ तुह नयरीए सेट्ठी धणओ नामेण आसि धणयसमो।
नियजाइमएण पुणो न हु अन्नं मन्नए किं पि ॥ १०४ ॥ थोवदिणेहिं वि नट्ठा लच्छी विउला वि तस्स कम्मवसा। तेणं
चिय वेरग्गेण तेण गहियं वयं ज्झत्ति ॥ १०५ ॥ मासस्स य मासस्स य एगंमि दिणंमि कुणइ पारणयं। चम्मट्ठिसिरादेहो
अइउग्गतवेण सो जाओ ॥ १०६ ॥ अह अन्नदिणंमि तए गच्छंतेणेस रायवाडीए। दिट्ठो तमेव वलिओ तुमं पि भणिऊण
अवसउणं ॥ १०७ ॥ सुणिऊण तुज्झ वयणं चिंतइ हिययंमि कोवपज्जलिओ। उत्तमकुलंमि जम्मो दिक्खा वि हु उत्तमा मज्झ
॥ १०८ ॥ एसो वि हु पाविट्ठो अवसउणपयंमि गणइ मं समणं। मारेमि इममिआणिं दयावरा अहव मुणिपवरा ॥ १०९ ॥
मह उण जइ अत्थि फलं एयस्स तवस्स तेण अन्नभवे। इत्थेव हुज्ज रज्जं जीवंते सुघडियनिवंमि ॥ ११० ॥ बहुमुल्लं नवरयणं
विक्किणियं तेण कागिणीए वि। मरिउं जाइमएणं दासीपुत्तो इमो जाओ ॥ १११ ॥ जं चिंतियं अणेणं मारेमि इमं निवं
तओ तुह वि। जाया मारणबुद्धी एयंमि गयावराहे वि ॥ ११२ ॥ तेण मओ न हु एसो इमिणावि तुमं न मारिओ जेण। तुह
रज्जं पुण एसो करिस्सई कयनियाणु त्ति ॥ ११३ ॥ इय सुणिऊण सवित्थरमघडकुमारस्स निरुवमं चरियं। पणमिय गुरुणो
चलणे नियभुवणे नरवई पत्तो ॥ ११४ ॥ चिंतइ य इमं सयमवि रज्जं वियरेमि तस्स जेण पुणो। हसमाणाणं अहवा रूय-

माणाणं पि पाहुणओ ॥ ११५ ॥ रज्जाएसं पेसिय हक्कारइ सो वि झत्ति संपत्तो । दाऊण नियं रज्जं अवराहं खामए सव्वं ॥ ११६ ॥ मुणिवरकहियं सयलं साहइ अघडस्स पुव्वभवचरियं । तं सुणिउं संजायं जाईसरणं तओ तस्स ॥ ११७ ॥ तो सुघडियनरनाहो गहियवओ झत्ति सो दिवं पत्तो । अघडचरिएण तत्थ य जाओ अघडो महीनाहो ॥ ११८ ॥ नियजणणी मालियमालिणी य सिद्धिं च अन्नसुयणं च । हक्कारइ नियपासे सिग्घं अघडो महीनाहो ॥ ११९ ॥ बहुकालं रज्जभरं पालेउं सो वि धम्मसंजुत्तो । सिरिरयणसुंदरीए दुग्घडपुत्तं ठविय रज्जे ॥ १२० ॥ गहिऊण साहुदिक्खं मग्गिय भिक्खं पबोहिउं लोयं । दुच्चरतवं तविता अकलंकं पालियं नियमं ॥ १२१ ॥ भावणभावियचित्तो समाहिजुत्तो इमो मुणियतत्तो । आउक्खयंमि मरिउं जाओ देवो महिड्ढीओ ॥ १२२ ॥

इति तपोविषये अघटकथानकं समाप्तम् ।

भावनाप्रभावे धर्मदत्तकथानकम्—दाणं वा सीलं वा तवोविहाणं पि तह य अन्नं पि । सव्वं निप्फलमेयं जाण मणे भावणा नत्थि ॥ १ ॥ जं एगो फलमउलं पावइ किरियं सया वि कुणमाणो । तं चिय लहेइ अन्नो भावेन्तो भावणं एकं ॥ २ ॥ रहियाण भावणाए सव्वं पि हु नूण निप्फलं हवइ । सहियाण भावणाए थोवं पि बहुप्फलं भणियं ॥ ३ ॥ किं किज्जइ विहवेणं ? किं वा पढिएण ? किं व अन्नेण ? । जाव न हियए भावो सुनिम्मलो होइ लोयाणं ॥ ४ ॥ तं नत्थि जं न वियरइ एक्क चिय भावणा विदईण (?) । जह धम्मदत्तसेट्ठी सुहाइं भुंजेइ सुरलोए ॥ ५ ॥ गयउरनामेण पुरं गयतुरयसमाउलं

स(सु)हावासं । परिवसइ तत्थ सिट्ठी जसधवलो धम्मधुरधवलो ॥ ६ ॥ जिणमयभावियचित्ता जसदेवी अत्थि तस्स पाण-पिया । लच्छिललियाण ताणं को वि हु कालो अइक्कंतो ॥ ७ ॥ अन्नदिणे जसदेवी दुहियमणा पभणए नियं नाहं । पुत्तेण विणा लच्छीए किज्जए किमिह विउलाए ॥ ८ ॥ जा न हु उच्छंगठियं सुयरयणं नियइ मम्मणुल्लावं । महिलाए तीए जम्मो निरत्थओ नूण लोयंमि ॥ ९ ॥ पिययम ! धम्मपहावा मणिच्छियं हवइ सव्वलोयाण । निबिडंतरायकम्मं पि जाइ दूरं खणे-णावि ॥ १० ॥ सविसेसं अट्ठाहियमहिमं ताइं कुणंति भत्तीए । नियगिहदेवालयसंठियस्स सिरिसंतिनाहस्स ॥ ११ ॥ अट्ठम-दिणंमि सेट्ठी चिट्ठइ ज्झाणंमि जाव उवविट्ठो । पच्चक्खीहोऊणं सासणदेवी भणइ ताव ॥ १२ ॥ जसधवल ! संतिजिणवर-भत्तीए अंतरायविगमेणं । तुज्झ हविस्सइ पुत्तो कहिऊण तिरोहिया देवी ॥ १३ ॥ जसधवलो तं रयणिं धम्मज्झाणेण गमइ सविसेसं । जाए पहायसमए जसदेवीए कहइ सव्वं ॥ १४ ॥ दाणंमि वावडाए संतिजिणिंदस्स पूयणपराए । रिउण्हायाए तीए गब्भो जाओ अह अन्नदिणे ॥ १५ ॥ गब्भपहावा जाओ विसेसओ तीइ डोहलो धम्मे । तित्थयराणं पूयं कुणेइ वियरेइ तह दाणं ॥ १६ ॥ नवमाससड्ढसट्ठमदिणेसु अइएसु सुक्खभावेणं । जिणधम्मभावियमणा पसवइ पुत्तं दिणयरं व ॥ १७ ॥ सुहमइनामा दासी वद्धावइ पुत्तजम्मणा सेट्ठी । सो वियरइ बहुदव्वं हरिसपरो तीए सहस त्ति ॥ १८ ॥ रिद्धिभरेणं सेट्ठी सम्माणेऊण सयलसयणजणं । जम्ममहं कुणइ पुरे नामं पि हु बारसे दियहे ॥ १९ ॥ जणणीए डोहलओ जाओ धम्मंमि गब्भपढमदिणे । तेणेस हवउ कुमरो नामेणं धम्मदत्तो त्ति ॥ २० ॥ अह सो परिवड्ढंतो संजाओ अट्ठवरिसदेसीओ । सुग-हियकलाकलावो कमेण नवजोव्वणं पत्तो ॥ २१ ॥ तंमि पुरे सिट्ठिवरो जसहडनामो वसेइ बहुविहवो । तस्सऽत्थि तिहुणदेवी

नवजोव्वणसंगया दुहिया ॥ २२ ॥ तीए समं जसधवलो वीवाहं कारवेइ पुत्तस्स । अह ताण जाइ कालो परोप्परं नेहकलियाणं ॥ २३ ॥ अन्नदिणे नियजणयं भत्तिब्भरनिब्भरो पणमिऊण । पभणेइ धम्मदत्तो साहसउच्छाहबुद्धिजुओ ॥ २४ ॥ जो जणअऽज्जियलच्छि भुंजइ निल्लज्जसेहरो लोए । सो पुरिसो काउरिसो निंदाठाणं सुपुरिसाणं ॥ २५ ॥ नियभुयदंडसमज्जियलच्छीए कुणइ जो जणुवयारं । एक्केण पुरिसरयणेण तेण पुहई खलु सणाहा ॥ २६ ॥ ताय ! अहं देसंतरगमणं कुणिऊण अज्जिउं दव्वं । जिणभवणे संघे तह दुत्थियलोयाण वियरिस्सं ॥ २७ ॥ जसधवलो भणइ तओ नियपुत्तं वच्छ ! गाढदुक्खकरं । देसंतरंमि गमणं तुमं पि सुहलालिओ निच्चं ॥ २८ ॥ जंपेइ धम्मदत्तो जणयं गाढग्गहेण नमिऊणं । सयमज्जिऊण लच्छि भुंजिस्सं ताय ! न हु अन्नं ॥ २९ ॥ तस्सग्गहं मुणेउं पभणइ पुत्तं विसेसओ सिट्ठी । परदेसंमि नरेणं एरिसरूवेण होयव्वं ॥ ३० ॥ मुद्धत्तं दक्खत्तं मोणममोणं धणित्तमधणत्तं । पंडिच्चमपंडिच्चं सभयत्तं निब्भयत्तं च ॥ ३१ ॥ कुवियत्तमकोवित्तं निल्लज्जत्तं सलज्जं च । देसकालाणुमाणा धारेयव्वं सुपुरिसेणं ॥ ३२ ॥ सेसं व जणयसिक्खं पडिच्छियं गाढभत्तिसंजुत्तो । गहिउं कयाणगाइं चलिओ सो पिययमासहिओ ॥ ३३ ॥ कयविक्कयं कुणंतस्स तस्स मग्गम्मि गच्छमाणस्स । मिलिओ मग्गे कूडो नामेणं बंभणो एगो ॥ ३४ ॥ तं भणइ धम्मदत्तो कहेसु किं पि हु कहाणयं रम्मं । जेणं गच्छइ रयणी सोक्खेणं अज्ज इह मज्झं ॥ ३५ ॥ वज्जरइ तओ कूडो अणुहवसिद्धं कहेमि अक्खाणं । पंचसयं दम्माणं पढमं चिय देसि जइ मज्झ ॥ ३६ ॥ चिंतेइ सिट्ठिपुत्तो केरिसमक्खाणयं इमं होही । एगं वेलं लब्भइ जं सोउं बहुयमोल्लेण ॥ ३७ ॥ तं नूण सुणेयव्वं अच्छरियं जेण जणइ मह हियए । अत्थो(अत्थं) पुणो वि अहयं समुवज्जिस्सामि लीलाए ॥ ३८ ॥ तो देइ तस्स

मोल्लं गिण्हइ विप्पो कहं परिकहेइ । नीयजणेणं मित्ती कायव्वा नेव पुरिसेण ॥ ३९ ॥ इय सिट्ठि ! तुज्झ कहियं कहाणयं सो भणेइ हसिऊणं । किं कहियं विप्प ! तए मुहियाए गिण्हिओ अत्थो ॥ ४० ॥ कूडो भणेइ निसुणसु अन्नं पि कहाणयं अइसुरम्मं । जइ अत्थि तुज्झ पासे दम्माणं दससयं पुण वि ॥ ४१ ॥ चिंतेइ धम्मदत्तो दव्वं दाउं इमं पि नायव्वं । सच्चं हवेउ जेणं जत्थ सयं तत्थ पंचासा ॥ ४२ ॥ सो अप्पेइ सहस्सं कहेइ अक्खाणयं पुण वि विप्पो । महिलाए विस्सासो कायव्वो नेव कइया वि ॥ ४३ ॥ मज्झ कहाणयजुयलं सया वि जइ धरिसि हियमज्झंमि । ता कत्थ वि नेव तुमं पराहवं कह वि पाविहिसि ॥ ४४ ॥ हरिसविसायसमेओ पारसकूले कमेण सिट्ठिसुओ । संपत्तो तं पुच्छइ कत्थ तुमं दियवर ! वसेसि ? ॥ ४५ ॥ सो भणइ इत्थ अहयं सया वि निवसेमि मज्झ गिहमेयं । जं किं पि तुज्झ होही पओ-यणं तं कहेयव्वं ॥ ४६ ॥ मंतेणं अभिमंतिय जवमुट्ठिं तस्स बंभणो देइ । कहइ य वावियमित्ता खणेण भिण्हंति फलमेए ॥ ४७ ॥ ते गिण्हिय सिट्ठिसुओ पुरीए आवासिओ परिसरंमि । अह संपत्तो सिग्घं सिरिसेणनिवस्स पासंमि ॥ ४८ ॥ वररयणभरियथालं पाहुडमप्पिय तओ निवेणावि । रंजियचित्तेणद्धं मुक्कं सुकं वणिसुयस्स ॥ ४९ ॥ संपत्तो नियगेहे सेट्ठी कयविक्कयं तओ कुणइ । अज्जंतो बहुदव्वं गमइ समज्जो तहिं कालं ॥ ५० ॥ जं किं पि तिहुणदेवी पभणइ तं चिय कुणेइ सो सेट्ठी । रागंधाणं अहवा एस चिय होइ नूण गई ॥ ५१ ॥ एगो परिवसइ विडो सयज्झए तस्स धम्मदत्तस्स । नामेण गंगदत्तो मित्तत्तं ताण संजायं ॥ ५२ ॥ अइसच्छमणो सेट्ठी भोयणतंबोलखज्जपिज्जाइं । मित्तत्तणेण निच्चं सो वियरइ गंगदत्तस्स ॥ ५३ ॥ सो तं विडं सया वि हु पिच्छइ नियबंधवं व नेहेण । अक्खलिओ सिट्ठिगिहे गमणागमणं कुणइ एसो

॥ ५४ ॥ जइ वि हु न हवइ गेहे सेट्ठी तह वि हु रमेइ सो तत्थ। अइदुट्ठमणो हासं कुणेइ सह तिहुणदेवीए ॥ ५५ ॥
अइपरिचयाउ तीए सिग्घं पि मणोवियारमावन्नं। किं बहुणा ? दुण्हं पि हु संजायं ताण अइपिम्मं ॥ ५६ ॥ एगाए महिलाए
पुरिसेणेगेण नेव वत्ता वि। कायव्वा चवलाणं विसमा खलु इंदियाण गई ॥ ५७ ॥ जह न हु इच्छइ सेट्ठी तह सा वियरेइ
तस्स भक्खाइं। नियपिययमाउ अहिओ महिलाणं उववई अहवा ॥ ५८ ॥ लुद्धो तीए सिट्ठिम्मि गंगदत्तो पओसमावहइ।
सो दुच्चरियं ताणं सच्चमणो नेव जाणेइ ॥ ५९ ॥ अन्नदिणे सो गच्छइ निवइसयासम्मि नमियमुववसिइ। वरमंतिपमुहलोओ
अत्थि तहिं गंगदत्तो वि ॥ ६० ॥ जंपेइ महीनाहो सेट्ठि ! तुमं कहसु किं पि अच्छरियं। दिट्ठं सुयं व कत्थ वि देसेसु जेण
परिभमसि ॥ ६१ ॥ सो वयइ मह सयासे एगमउव्वं समत्थि अच्छरियं। ओगच्छंति फलंति य वावियमित्ता जवा देवा !
॥ ६२ ॥ वज्जरइ महीनाहो तं धन्नं अत्थि किं पि जं लोए। गिण्हइ फलं खणेणं आमं ति पयंपए सेट्ठी ॥ ६३ ॥ भासेइ
गंगदत्तो दुट्ठमणो धम्मदत्त ! तुह सव्वं। अलियं पि इत्थ वयणं छाइज्जइ विउललच्छीए ॥ ६४ ॥ जइ एयं सच्चं चिय कहमवि
इह कुणसि सिट्ठि ! धिट्ठ ! तुमं। सव्वा वि मज्झ लच्छी गेण्हेयव्वा तए ताव ॥ ६५ ॥ अह जइ एयमलीयं होही ता तुज्झ
गेहमज्झम्मि। मह हत्थदुगे जं किं पि चडइ तं चिय तुमं देसु ॥ ६६ ॥ मन्नेइ धम्मदत्तो सव्वं पि तह त्ति सच्छसब्भावो।
महिनाहो संजाओ सक्खी उभयंमि पक्खंमि ॥ ६७ ॥ अत्थाणाओ लोओ सव्वो वि तओ गओ निए ठाणे। कयविक्कयस्स
कज्जे सेट्ठी वि हु [अट्ट]मज्झम्मि ॥ ६८ ॥ गंतुं जववुत्तंतं कहइ विडो ज्झत्ति तिहुणदेवीए। सा भणइ तक्खणेणं वावियमित्ता
फलंति जवा ॥ ६९ ॥ हारिज्जइ सव्वं चिय इत्थ विजयम्मि सिट्ठिणा समयं। ता गिण्ह ति चिय जवे जित्ते पुण एरिसं कुणसु

॥ ७० ॥ हत्थदुगेण ममं चिय उप्पाडसु सयललोयपच्चक्खं । अम्हाणं भोगसुहं हवेइ निक्कंटयं जेण ॥ ७१ ॥ अह मंतिए समप्पइ तस्स जवे खिवइ तत्थ आसन्ने (सा अन्ने) । कयकज्जो सो गच्छइ अह सेट्ठी आगओ गेहं ॥ ७२ ॥ सो दुइयदिणे पत्तो गहियजवो ज्झत्ति निवइअत्थाणे । उवविट्ठो सिरिसेणं पणमिय बहुलोयपरियरिए ॥ ७३ ॥ वावेइ मट्टियाए सिंचेइ जवे जलेण सिट्ठी वि । उग्गच्छंति न कहमवि विलक्खहियओ तओ जाओ ॥ ७४ ॥ चिंतेइ बंभणेणं किं तेणं विप्पयारिओ अहयं । किं वा तेसिं केण वि कओ जवाणं परावत्तो ॥ ७५ ॥ अह भणइ गंगदत्तो जं किं पि हु सिट्ठि ! चडइ हत्थदुगे । तं गिहसारं वियरसु सो भासइ नूण दायव्वं ॥ ७६ ॥ महिवइणा अत्थाणं विसज्जियं सिट्ठिणा वि कूडस्स । गंतूण तस्स गेहे निवेइओ सयलवुत्तंतो ॥ ७७ ॥ सो भणइ मए कहियं जं तं सव्वं पि तुज्झ वीसरियं । महिलाए विस्सासो अहमे मित्ती न कायव्वा ॥ ७८ ॥ सो अहमो जेण विडो तुह महिला वि हु न सीलसंजुत्ता । जीए हि मंतियजवे गहियं(उं) मुक्का पुणो अन्ने ॥ ७९ ॥ तं वयइ धम्मदत्तो मा मा एवं भणेसु मज्झ पिया । सीलालंकारजुया महोवरिं गाढनेहा य ॥ ८० ॥ सो जंपइ सिट्ठि ! तुमं चरियं न हु मुणसि किं पि महिलाणं । एयं सव्वं तुज्झं पच्चक्खमियाणि दंसिस्सं ॥ ८१ ॥ तत्तो बंभणजुत्तो समागओ नियगिहम्मि सो सेट्ठी । हक्कारइ नरनाहं उववेसइ आसणे पवरे ॥ ८२ ॥ कूडो कहेइ कन्ने तुह भज्जा अत्थि मालउवरंमि । उस्सारसु निस्सेणिं सिग्घं तं चिय कुणइ सिट्ठी ॥ ८३ ॥ नरनाहस्स समक्खं हक्कारेऊण गंगदत्त-विडं । पभणइ गिण्हेसु तुमं हत्थदुगे चडइ जं किं पि ॥ ८४ ॥ सो चंचलनयणेहिं पिच्छइ बहुदम्मरम्मरयणाइं । न हु किं पि पुणो गिण्हइ सुन्नमणो तं अपिच्छंतो ॥ ८५ ॥ जाणावणत्थमह तस्स खासए छिक्कए तिहुणदेवी । सुणिऊण तीए सद्दं सो

वेगेणं तहिं पत्तो ॥ ८६ ॥ न हु नियइ चडणमग्गं गच्छइ निस्सेणिसंनिहाणम्मि । हत्थदुगेणं तं गिण्हिऊण मोएइ जाव तहिं ॥ ८७ ॥ ता बंभणेण भणिओ मा मुंचसु हत्थ अहम! निस्सेणिं । जं हत्थदुगेणं चिय गहियं तं चेव तुह होउ ॥ ८८ ॥ न हु किं पि पुणो अन्नं लहेसि निल्लज्ज! कह वि कइयावि । सो वि हु विलक्खहियओ अहोमुहो जाव चिट्ठेइ ॥ ८९ ॥ तं परिपुच्छइ राया संकियहियओ किमित्थ दवाइं । चईऊणं निस्सेणी गहिया तुमए पढममेव ॥ ९० ॥ तो सो विलक्खहियओ न किं पि जंपेइ जाव ताव तहिं । गाढो कओ कहेई वुत्तंतं जं जहावुत्तं ॥ ९१ ॥ नायपरेणं रन्ना कुविएण पिओ वि गंगदत्तविडो । निव्विसओ आणत्तो अन्नायपरायणो काउं ॥ ९२ ॥ अह मरइ तिहुणदेवी भयभीया दंतगहियनियजीहा । संमाणिय तं सिट्ठिं गओ निवो ज्झत्ति धवलहरे ॥९३॥ पभणइ कूडो सेट्ठिं छलिओ सि इमेहिं कहसु सच्छ! तुमं । पनरहसयदम्मेहिं पढिओ वि न पंडिओ जाओ ॥ ९४ ॥ सो जंपइ महिलाए चरियं धुत्तस्स मुणइ न विही वि । जायं सुतेयमम्हं तहवि पुणो तुम्ह साहिज्जा ॥ ९५ ॥ तस्सुवयारं मुणिउं सम्माणेउं विसज्जिओ कूडो । संखेवेणेव कयं मयकिच्चं तिहुणदेवीए ॥ ९६ ॥ तं पिच्छिऊण सव्वं सो मुणइ पलीवणं व गिहवासं । पारसकूलाउ तओ गयउरनयरे निए पत्तो ॥ ९७ ॥ जणयाणं सो चलणे नमिउं सव्वं पि कहइ वुत्तंतं । भणइ य वेरग्गजुओ महिला दुक्खाण खलु खाणी ॥ ९८ ॥ उक्तं च निजसुभाषितगाथाकोशे—
दीसंति वइरितुल्ला जणणी जणया उ जाण कज्जंमि । ता उवविहडंति जओ ही! जम्मो ताण महिलाण ॥ ९९ ॥ पुरिसो महिलाण कए नाणादुक्खाइं सहइ अणवरयं । ताउ पुणो न हु केण वि कुडिलसहावाउ घिप्पंति ॥ १०० ॥ लोहवसेणं नेहं दंसंति सया वि जइ वि महिलाओ । तह वि हु विमूढहियओ बहुमाणं मुणइ ताण मरो ॥ १०१ ॥ मुहकंखिरो

समीहइ जो को वि हु रमणिसंगमं मूढो । सो सिसिरसमीहाए पविसइ पजलंतजलणंमि ॥ १०२ ॥ मोहंधो एस जणो विव-रीयं चिय सया वि पेक्खेइ । असुईण निहाणं पि हु रमणिं खलु मुणइ रमणीयं ॥ १०३ ॥ ता जणणिजणय ! अहयं विरत्त-चित्तो इयाणि गिहवासा । संसारजलहिबेडा गिण्हेयव्वा मए दिक्खा ॥ १०४ ॥ सुणिऊणं तं वयणं वज्जनिवायं व जणणि-जणया तं । पभणंति वच्छ ! तुमयं एकु चिय अम्ह पुत्तो सि ॥ १०५ ॥ जइ कहवि तुमं दिक्खं गिण्हिसि हियमं तउ त्ति अम्हाण । फुट्टिस्सइ ताव लहुं वच्छ ! तुमं कुणिय कारुन्नं ॥ १०६ ॥ गयसावज्जो चिट्ठसु गेहि चिय भावओ मुणीहोउं । जा अम्हे जीवामो तओ परं कुणसु जं उचियं ॥ १०७ ॥ सो पभणइ जणयाणं पडिउवयारो न विज्जए कहवि । जेहिं मणुस्स-जम्मो दिण्णो चिंतामणिसमाणो ॥ १०८ ॥ भावेण गहियदिक्खो चिट्ठइ गेहे वि मुक्कवावारो । सो निच्चलज्झाणमणो विरत्त-चित्तो गमइ कालं ॥ १०९ ॥ जे सव्वं चइऊणं तिणं व लीलाइ गिण्हियं(उं) दिक्खं । पालिंति निक्कलंकं ते च्चिय धन्ना जए मुणिणो ॥ ११० ॥ किं होही सो दियहो पव्वज्जमहं पि गिण्हिय सुहेण । चारित्तं पालित्ता नियकज्जं जेण साहिस्सं ॥१११॥ इय भावभावियमणो बहुपुन्नं अज्जिऊण सो धन्नो । सुरलोयं संपत्तो सुहसुक्खं भुंजए तत्थ ॥ ११२ ॥

इति भावनाप्रभावे धर्म्मदत्तकथानकं समाप्तम् ।

—————卐—————

भावनाप्रभावे बहुबुद्धिकथानकम्—दाणेणं सीलेणं तवेण लोओ विणा वि पावेइ । बहुबुद्धी विव भावणपहावओ देवरिद्धीओ ॥ १ ॥ चंपाइ पुरवरीए गयणग्गविलग्गजिणहरज्झुयाए । जियसत्तुनरनाहो जहत्थनामो सुधम्मपरो ॥ २ ॥

तस्सत्थि बुद्धिसागरमंती सुहबुद्धिविहवसंपन्नो । तस्स पिया सीलवई सीलवईगुणगणसमेया ॥ ३ ॥ सद्दरसरूवगंधफास-विसयाउ सेवमाणाणं । बहुबुद्धी नामेणं पुत्तो ताणं समुप्पन्नो ॥ ४ ॥ साहिच्चतक्कलक्खणलंकारनिघंटुसद्दकव्वाइं । जोइस-निमित्तसंगीयसउणसत्थाइं पढियाइं ॥ ५ ॥ तह वि न विरमइ कुमरो कओज्जमो गाढपाढविसयाओ । तं भणइ तओ मंती बहुविज्जाए अलं वच्छ ! ॥ ६ ॥ बहुपाढो साहूणं गुणावहो होइ चत्तसंगाण । न हु नियकुडंबचिंतापराण पुत्तय ! गिहत्थाण ॥ ७ ॥ ता कुणसु तुममियाणिं पुहईनाहस्स निच्चमोलग्गं । सो नेव तह वि विरमइ नाणब्भासाओ कइयावि ॥ ८ ॥ अन्नदिणे महिवइणो समागओ पाहुडम्मि परदेसा । एगो हारो तेणं समप्पिओ मंतिणो हत्थे ॥ ९ ॥ तं गहिउं नियगेहे समागओ बुद्धिसागरो मंती । ण्हाणम्मि वावडमणो अप्पइ बहुबुद्धिपुत्तस्स ॥ १० ॥ जियसत्तुमहीवइणा समप्पिओ एस संपयं मज्झ । रक्खेसु वच्छ ! हारं गरुयपयत्तेण इय भणिउं ॥ ११ ॥ गहिओ तेणं तत्थ वि विम्हरिओ पढणवावडमणस्स । कम्मयरेणं लद्धो गंगडनामेण सो हारो ॥ १२ ॥ अह दुइयदिणे मंती हारं पुत्ताउ मग्गए सो वि । चिट्ठइ अहोमुहो च्चिय न किं पि पच्चुत्तरं देइ ॥ १३ ॥ मुणियमणो सो मंती निब्भच्छइ गाढकोवरत्तच्छो । रे ! रे ! तुह विम्हरिओ हारो अइपढणगहिलस्स ॥ १४ ॥ अइपाढेणं लाहो चिट्ठउ दूरे गओ निओ हारो । अइ सव्वत्थ गरहिया विउसेहिं पढिज्जए अहवा ॥ १५ ॥ न हु दीसइ कम्मयरो अज्ज गिहे तेण गंगडेणेसो । नूणं गहिओ होही भण कस्स न वल्लहा लच्छी ॥ १६ ॥ जइ कहवि महीनाहो हारं मग्गिस्सए तओ तस्स । तं कहसु मज्झ निल्लज्ज ! उत्तरं जं मए देयं ॥ १७ ॥ रे ! रे ! तं चिय हारं कत्तो वि निरिक्खि-ऊण आणेसु । अप्पाणस्स इयाणिं अहवा ठाणं गवेसेसु ॥ १८ ॥ इय बुद्धिसागरेणं गाढं निब्भच्छिओ पकुविएण । अहिमाण-

धणो कुमरो विणिग्गओ ज्झत्ति गेहाओ ॥ १९ ॥ तं चिय हारं कहमवि लहेमि जइ नूण ता निए गेहे। आगच्छिस्सामि अहं न अन्नहा इय मणे धरिउं ॥ २० ॥ संपत्तो धीरमणो कमेण कुमरो जयंतिनयरीए। तं पालइ नरनाहो विजओ विजओ रणे निच्चं ॥ २१ ॥ निवसइ सुवन्नसिट्ठी धणावहो तत्थ तस्स हट्टम्मि। बहुबुद्धी उवविट्ठो परिक्खए सव्वरयणाणि ॥ २२ ॥ मोल्लं कहेइ दंसणमित्तेणं कणयहीरयाईणं। सेट्ठी चिंतेइ तओ एसो अइउत्तमो कोइ ॥ २३ ॥ मोल्लं मुणेमि कमवट्टयाउ नाऽऽरायओ य एयाण। कहकहमवि अहयं पि हु एसो उण दिट्ठमित्तेणं ॥ २४ ॥ सेट्ठी तं पडिपुच्छइ देसंतरिउ व वच्छ ! दीसेसि। कहसु महं इह नयरे अज्ज तुमं कस्स पाहुणओ ॥ २५ ॥ सो पभणइ तुम्हं चिय सेट्ठी तुट्ठो तओ मणे जाओ। तं गहिउं जाइ गिहे धणप्पियाए नियपियाए ॥ २६ ॥ कहइ य एसो उत्तमपुरिसो परदेसिओ समायाओ। तुह गेहे पाहुणओ पिक्खसु नियपुत्तनेहेण ॥ २७ ॥ जणणि व तस्स मज्जणभोयणतंबोलवत्थपभिईणि। वियरेइ गाढ-सम्माणसंजुया सा वि पइदियहं ॥ २८ ॥ अन्नदिणे एगंते धणावहो पुच्छइ सवहपुव्वं। सच्चं कहेसु मज्झं वच्छ ! तुमं अप्पणो चरियं ॥ २९ ॥ जणयस्स व बहुबुद्धी बहुमाणं पिक्खिऊण अइगाढं। आरंभिय मूलाओ सच्चं चिय कहइ सव्वं पि ॥ ३० ॥ मुणिऊण मंतिपुत्तं सिट्ठी हिययंमि हरिसिओ भणइ। वच्छ ! तुमं इत्थ च्चिय चिट्ठसु सुक्खं नियगेह व्व ॥ ३१ ॥ समुवज्जइ बहुदव्वं सिट्ठी हट्टंमि तस्स साहिज्जा। अन्नदिणे विहिवसओ कम्मयरो गंगडभिहाणो ॥ ३२ ॥ तं चिय हारं दंसइ विक्किणणत्थं धणावहो वि तह। वज्जरइ मज्झ पुत्तो इहागओ मोल्लमेयस्स ॥ ३३ ॥ सव्वं मुणिउं तुज्झं वियरिस्सइ सो पयंपए ज्झत्ति। हक्कारसु नियपुत्तं ता मो वि समागओ तत्थ ॥ ३४ ॥ ओलक्खिऊण पभणइ गंगड ! कम्मयर ! एम

मह हारो । सो जंपइ को तुमयं ? को हारो ? गंगडो को य ? ॥ ३५ ॥ मह तुज्झं दंसणमवि आजम्माओ वि नेव संजायं। तह वि जइ हारवंछा ता गिण्हसु निवइपच्चक्खं ॥ ३६ ॥ गंतूण दो वि तत्तो नमिऊणं नायसंजुयं विजयं । पभणेइ मंतिपुत्तो मज्झ गिहे एस कम्मयरो ॥ ३७ ॥ मह चोरिऊण हारं चंपानयरीओ आगओ इत्थ । सो पभणेई सामिय ! चंपं पि हु नेव जाणेमि ॥ ३८ ॥ चिट्ठउ दूरे एसो हारो गेहं च सव्वमलियमिणं । एवं ताण विवाए न निन्नयं देइ नरनाहो ॥ ३९ ॥ जंपेइ निवो तुम्हं दिव्वेण विणा हवेइ न हु सुद्धी । तं पुण इह नयरीए दिव्वपहावम्मि कूवम्मि ॥ ४० ॥ पक्खित्तो जो सुद्धो कूवाओ उब्भयाइ य जलाओ । पउमासणोवविट्ठो निस्सरई बुड्डए इयरो ॥ ४१ ॥ सुद्धमणो हरिसपरो तं दिव्वं मन्नए अमच्चसुओ । अवरो चिंतइ मज्झं जह जह वि समागयं मरणं ॥ ४२ ॥ तम्हा जणपच्चक्खं विगुप्पमाणाउ कूवपडणंमि । जं मरणं तं जुत्तं इय मन्नइ सो वि तं दिव्वं ॥ ४३ ॥ तं दट्ठूणं हारं अइरमणिज्जं विचिंतए निवई । जइ दो वि बुड्डिऊणं मरंति ता होइ मह हारो ॥ ४४ ॥ गच्छंति निवसमेया दो वि हु कूवंमि कुणिय वरपूयं । सासंको कम्मयरो पढमं चिय पडइ बुड्डइ य ॥ ४५ ॥ पभणइ लोओ सामिय ! हारो सुद्धस्स हवउ कुमरस्स । लोहेण पराभूयो जंपइ विजओ महीनाहो ॥ ४६ ॥ पडिऊणं जइ कूवे निग्गच्छइ ता इमस्स सुद्धस्स । एसो होही हारो न अन्नहा सो तओ पडिओ ॥ ४७ ॥ सच्चपहावा कंठप्पमाणवड्ढियजलस्स कूवस्स । सो बाहिं नीहरिओ कुमरो कमलासणासीणो ॥ ४८ ॥ सुद्धो सुद्धो त्ति तओ पयंपमाणं जणं भणइ निवई । मंतपहावेणेसो नीहरिओ नेव सच्चेण ॥ ४९ ॥ मुणियमणो नयरजणो पभणइ तुम्हं न एरिसं जुत्तं । अन्नायपरे निवइम्मि होउ लोओ कहं देव ! ॥ ५० ॥ सव्वं सत्तं नीइं जणाववायं कुलस्स य कलंकं । अगणिय सव्वं एवं लुद्धो अभणए कुमरं

॥ ५१ ॥ उक्तं च निजसुभाषितगाथाकोशे–सव्वो वि हु एस जणो निंदिय कम्मं कुणेइ खलु पच्छा। पढमं पि हु चइऊणं लज्जामाहप्पभयकिंचि ॥ ५२ ॥ सो भणइ हारमेयं जइ कहवि न लेमि तुह सयासाओ। ता न हु हवेमि नरवर! अमच्चपुत्तो अहं नूणं ॥ ५३ ॥ गाढपराहवजुत्तो विलक्खचित्तो गिहंमि सो पत्तो। सेट्ठी भणेइ मा कुणसु वच्छ! दुक्खं तुमं कहवि ॥ ५४ ॥ पुव्वभवे कह वि तए जइ परवत्थुं न गिण्हियं आसि। ता नूण एस हारो बहुय-दिणेहिं पि तुह होही ॥ ५५ ॥ सो तत्थ ठिओ चिट्ठइ पइन्ननिव्वहणदिन्नएक्कमणो। अन्नदिणे अच्छरियं संजायं तत्थ नयरम्मि ॥ ५६ ॥ निवसेइ तत्थ मंती सुधणू नामेण पिययमा तस्स। सोहग्गसीलकलिया नामेणं चंदरेह त्ति ॥ ५७ ॥ निरुवमरूवं दट्ठुं खुहियमणो तीए वंतरो एगो। सुधणूपरिच्छरूवं कुणिऊणं सरिसपरिवारो ॥ ५८ ॥ अमुणिज्जंतो थेवं वि सह्आयरणअंगवंगाओ। बाहिं गए अमच्चे समागओ तस्स गेहम्मि ॥ ५९ ॥ दुट्ठमणज्झवसाओ गच्छइ पासंमि चंदरेहाए। सीलपहावा तीए न किं पि सो पारए काउं ॥ ६० ॥ जइ वंतर एक्कं चिय हवेउ सीलं जयंमि लोयाण। जस्स पहावा काउं उवद्दवं तरइ न सुरो वि ॥ ६१ ॥ सव्वो वि तत्थ लोओ सुधणु त्ति पयंपए तओ सो वि। पभणेइ अज्ज नयरीए आगया के वि ठगपुरिसा ॥ ६२ ॥ पविसइ परस्स गेहे सरिच्छरूवेण मंततंताओ। तेणं अज्ज पवेसो इह दायव्वो न कस्सावि ॥ ६३ ॥ पाहरियपमिइलोओ एवं सव्वो वि वारिओ तच्चो। सच्चामच्चो गेहे पविसंतो तेहिं पडिसिद्धो ॥ ६४ ॥ चिट्ठइ मज्झे मंती ठगो तुमं इय कहंति ते तस्स। सो भणइ अहं मंती गिहमज्झे को वि धुत्तवरो ॥ ६५ ॥ ता सो विलक्खहियओ निवपासे जाइ कहइ सव्वं पि। मज्झ गिहम्मि पविट्ठो सरिच्छरूवो नरो को वि ॥ ६६ ॥ न लहेमि कह

वि सामिय ! तत्थ पवेसं अहं तओ निवई । हक्कारइ तं गेहा सपरियणं आगओ सो वि ॥ ६७ ॥ तं पिच्छिय विजयनिवो न मुणइ दुण्हं पि कहमवि विसेसं । पुट्ठेण परियणेण वि सो च्चिय कहिओ सुघणुमंती ॥ ६८ ॥ सच्चामच्चो पभणइ मं न मुणसि पियथमे ! कह तुमं पि । सा जंपइ मज्झ पिओ एसो च्चिय नेव धुत्त ! तुमं ॥ ६९ ॥ दुण्ह वि ताण विवाओ संजाओ गाढमच्छरुच्छाहो । सरिसाण ताण कहमवि न निन्नयं वियरए को वि ॥ ७० ॥ भणियं नरनाहेणं सुद्धी तुम्हाण कूवपडणाओ । तत्तो सच्चामच्चो निवडिय सिग्धं पि नीहरिओ ॥ ७१ ॥ जंपेइ महीनाहो सुद्धो सुद्धो त्ति एस खलु सचिवो । धुत्तामच्चेण तओ पयंपियं अहमवि पडेमि ॥ ७२ ॥ महिनाहेणं भणिओ मरसि तुमं तह वि निवडिओ ज्झत्ति । जलपउमाठिओ कूवाउ निग्गओ दिव्वसत्तीए ॥ ७३ ॥ सच्चामच्चो जाओ विच्छाओ विहसिओ पुणो अवरो । नरनाहो सासंको न कं पि ताणं पमाणेइ ॥७४॥ दो वि तओ एगमणा भणंति पहु ! किं पि निन्नयं देसु । तो निवई नयरीए भणावए पडहसद्देण ॥ ७५ ॥ जो एयाण विवायं हरेइ सो वंछियं लहइ पुरिसो । निव्वेउं असमत्थो एयं तो तं न को छिवइ ॥ ७६ ॥ तो बहुबुद्धी छिविओ कुणिऊणं सक्खिणं अमच्चजणं । निवई नियदत्तवयणो आणेइ सोवन्नभिंगारं ॥ ७७ ॥ तं पूइऊण पभणइ एयस्स मुहेण पविसिउं जो उ । निस्सरई नालेणं सो नूणं हवइ सचिववरो ॥ ७८ ॥ धुत्तो कलसमुहेणं पविसिय नालेण नीसरइ ज्झत्ति । दिव्वेण पहावेणं हरिसेणं विहसियसरीरो ॥ ७९ ॥ भणिओ वि णेगवारं मच्चो सत्तीए विरहिओ तत्थ । पविसेउं पि न तीरइ बहुबुद्धी भणइ तो निवइं ॥ ८० ॥ एसो च्चिय पहु ! सच्चो एयस्स न जेण एरिसा सत्ती । दुइओ उण नीसरिओ नूणं दिव्वाइ सत्तीए ॥ ८१ ॥ जंपेइ तओ धुत्तो जं भणियं किं पि तं मए विहियं । बहुबुद्धि ! सच्चभासय ! मंतिपयं देसु मह

इण्हिं ॥ ८२ ॥ जो सुज्झइ सो मंती हवेइ इय हवउ तुज्झ मंतित्तं । नियगेहि च्चिय न ऊणो इत्थ व अहवा वि अन्नत्थ ॥८३॥ जेण मए मंतित्ते सामन्न च्चिय कया इह विवक्खा । सुरनरनिच्छयणत्थं दिव्वं पि इमं मए विहियं ॥८४॥ नूण तुमं देवो च्चिय सव्वं सच्चं कहेसु मज्झ तुमं । बहुबुद्धिबुद्धिरंजियचित्तो सो कहइ सच्चमिणं ॥ ८५ ॥ दट्ठूण चंदरेहं समागओ भोगसुहसमीहाए । तीए सीलपहावा मणिच्छियं नेव मह जायं ॥ ८६ ॥ तहवि अहं अविरत्तो थक्को गेहंमि भोगआसाए । अन्नं सव्वं तुज्झं पि पच्चक्खं किं पि जं जायं ॥ ८७ ॥ सो देवो संपत्तो अदंसणं अह भणेइ मंतिसुओ । नरवर! वियरसु हारं मज्झं तं चेव अइरम्मं ॥ ८८ ॥ लुद्धमणो महिनाहो न समप्पइ कहवि तस्स तं हारं । सुधणुअमच्चेण तओ गाढं कुविएण सो भणिओ ॥ ८९ ॥ नो वियरइ तं तहवि हु मंती मेलित्तु नयरसव्वजणं । पभणइ नरवर! अम्हे न वसामो तुज्झ नयरंमि ॥९०॥ जेणं कस्स वि गेहे जं किं पि हविस्सइ अइसुरम्मं । तं गिण्हसि देव! तुमं ता लोओ हवउ कह इत्थ ॥ ९१ ॥ नीसरिओ नयरीए लोओ सयलो वि मिलिय एगत्थ । अह चिंतइ महिनाहो मह रज्जं केरिसमियाणिं ॥ ९२ ॥ लोएण विणा एगस्स निप्फलं इत्थ रन्नमज्झि व । महिनाहो पिट्ठीए गंतूण भणइ नियलोयं ॥ ९३ ॥ एगो मह अवराहो खमियव्वो नो कुणेमि पुण अन्नं । अप्पइ तं चिय हारं बहुबुद्धी गिण्हए झत्ति ॥ ९४ ॥ सयलो वि पुरीलोओ नियनियठाणंमि आगओ तत्तो । सिद्धिधणावहगेहे गंतूणं भत्तिसंजुत्तो ॥ ९५ ॥ सुधणुअमच्चो रंजियचित्तो कुमरस्स देइ नियधूयं । विजयवइं दुण्हं पि हु पाणिग्गहणं तओ जायं ॥ ९६ ॥ कइवयदिणावसाणे नियजणउक्कंठिओ अमच्चसुओ । सिद्धिधणावहधणपियपयकमले नमिय पभणेइ ॥ ९७ ॥ तुम्हाएसा नियदंसणेण सुहियं कुणेमि सयणजणं । चंपाए नयरीए गंतुमियाणिं कयकिच्चो ॥ ९८ ॥

ताइं वि मुणियमणाइं मम्माणं कुणिय परियणं दाउं । भत्तीइ कयपणामं दिन्नासीसं विसज्जंति ॥ ९९ ॥ सुवण्णुअमच्चं नमिउं विजयवईपियममं तहा गहियं (उं) । निग्गच्छइ नयरीए बहुबुद्धी बहुजणसमेओ ॥ १०० ॥ पत्तो कमेण रन्नंमि तत्थ पिक्खेइ मुणिवरं एगं । काउस्सग्गेण ठियं निम्मलचित्तो विचिंतेइ ॥ १०१ ॥ निम्ममनिरहंकारो गयलोहो चत्तसव्ववावारो । परिहरियगिहावासो धन्नो एसो च्चिय मुणिंदो ॥ १०२ ॥ गिहवासंमि वसंतो जं न कुणइ नत्थि किं पि तं लोए । जेणं विजयनरिंदो वि गंजिओ लोहसुहडेणं ॥ १०३ ॥ तह गिहवासाउ च्चिय जाओ देसंतरो दुहावासो । तम्हा मुणिणो धन्ना केण वि न पओयणं जाण ॥ १०४ ॥ इय भाविंतो भावणमणहं मग्गे कमेण गच्छंतो । संपत्तो नियगेहे जणयाण समप्पिउं हारं ॥ १०५ ॥ पणमेइ तायचलणे विजयवईभज्जसंजुओ कुमरो । निव्वूढनियपइन्नं जणओ तं कुणइ उच्छंगे ॥ १०६ ॥ अह तं भणंति ताइं हरिसभरुल्लसियअंसुनयणाइं । रूसंति उत्तमजणा गुरूण किं रुक्खसिक्खाए ? ॥ १०७ ॥ किं वच्छ ! तुमाउ च्चिय हारो अम्हाण वल्लहो एसो । जं देसंतरदुक्खं सहियं एमेय कुमर ! तए ॥ १०८ ॥ तुह विरहे जं दुक्खं सहियं अम्हेहिं एत्तियं कालं । तं वइरीण वि नूणं हवेउ मा कहवि कइयावि ॥ १०९ ॥ ता पुत्त ! कत्थ तुमए लद्धो एसो कहं वरो हारो ? । परिवारेणं कहिओ वित्थरओ सयलवुत्तंतो ॥ ११० ॥ बहुबुद्धिणा वि जियसत्तुनिवइणो कहिय सयलवुत्तंतं । हारो मुक्को चलणेसु तेण तस्सेव सो दिन्नो ॥ १११ ॥ नमिऊण महीनाहं समागओ नियगिहंमि सो सव्वं । सिद्धिधणावहलोयं विसज्जए कुणिय पडिवत्तिं ॥ ११२ ॥ विजयवईइ समेओ संसारसुहाइं सेवए निच्चं । गमइ य सो बहुकालं भाविंतो भावणं एयं ॥ ११३ ॥ अरसं विरसं रुक्खं भुंजित्तु सहंति विविहउवसग्गे । संसारवारिरासिं तरंति तारिंति अन्ने वि

॥ ११४ ॥ गयकोवा वि हु निज्जियअंतरअरिवग्गगाढमाहप्पा । सव्वंगमुवसमसिरीउवगूढा तह वि नीरागा ॥ ११५ ॥ ते च्चिय मुणिणो धन्ना अहं पि किं तारिसो हविस्सामि । कम्मि वि दिणंमि कल्लाणकारए चइय सव्वं पि ॥ ११६ ॥ इय भावणासमेओ चउविहधम्मे कउज्जमो अंते । आउक्खयंमि पत्तो सुरलोए भुंजइ सुहाइं ॥ ११७ ॥

इति भावनाप्रभावे बहुबुद्धिकथानकं समाप्तम् ।

अनित्यताविषये समुद्रदत्तकथानकम्—जीयं देहं पेम्मं पियसंगो जुव्वणं धणं चवलं । सिट्ठिसुओ दिट्ठंतो समुद्ददत्तो हवइ इत्थ ॥ १ ॥ रायगिहं नामेणं नयरं जिणधम्मभावियजणोहं । पालइ रज्जं निव्वई जियसत्तू तत्थ जियसत्तू ॥२॥ तत्थत्थि महीमंडणमणवरयं धम्मकम्मकयचित्तो । सागरदत्तो सेट्ठी धणउ व्व समिद्धिदुल्ललिओ ॥ ३ ॥ जिणचरणकमलभसली कमला नामेण पियय्मा तस्स । ताणं वच्चइ कालो परुप्परं मिलियचित्ताणं ॥ ४ ॥ सुहरसनिमग्गाण वि एगं निरवच्चयादुहं ताणं । किं वियरइ जीयाणं समं विही सव्वसामग्गिं ? ॥ ५ ॥ जोइसियअणुमयाइं दव्वव्वएणं कुणंति गहपूयं । अच्चंति मंडलाइं मंतियकहिएण मग्गेण ॥६॥ पुच्छंति तणयजम्मं दाणं नेमित्तियाण दाऊणं । रक्खाडियमूलियाओ पवाइयाओ विमग्गंति ॥ ७ ॥ ओवाइयाइं मन्नंति देवदेवीण दिट्ठमहिमाण । किं बहुणा ? धुत्ताणं भक्खट्ठाणाइं जायाइं ॥ ८ ॥ तह वि हु न होइ तणओ धम्मं ताइं कुणंति सविसेसं । तं नत्थि जं न वियरइ एसो सुविसुद्धचित्ताणं ॥ ९ ॥ अट्ठाहियमहिमाओ कुणंति ताइं जिणिंदबिंबाणं । पूयंति सयलसंघं दीणाणं दिंति दाणाइं ॥१०॥ पुत्तंतरायकम्मं धम्मपहावा खयं गयं ताणं । किच्चिय-

मेत्तं एयं ! मोक्खं पि हु वियरइ जमेसो ॥ ११ ॥ अन्नदिणे रिउण्हाया कमला हल्लंतबहलकल्लोलं । जलहिं पिच्छइ सुमिणे कहइ पहाए पिययमस्स ॥ १२ ॥ सो सुविणत्थं मुणिउं साहइ तीए पहाणसुयजम्मं । सेसं (?) धम्ममणा दिणाइं सा गमइ सुक्खेण ॥ १३ ॥ अह पडिपुन्ने समए पसवइ पुत्तं सुलक्खणं धीरं । वद्धावइ दासीओ सेट्ठि सो देइ बहुदव्वं ॥ १४ ॥ महयारिद्धिभरेणं सिट्ठी जम्मूसवं तओ कुणइ । सुमिणाणुसारओ से समुद्ददत्तो त्ति नामं पि ॥१५॥ वड्ढइ कमेण कुमरो समयं तेएण गिम्हदिवसु व्व । सुगहियकलाकलावो कमेण सो जुव्वणं पत्तो ॥ १६ ॥ कणयवईनामेणं कन्नं कणयप्पहस्स सिट्ठिस्स । परिणाविओ य कुमरो जणएहिं महाविभूईए ॥ १७ ॥ चिंतइ य निसासेसे समुद्ददत्तो अहन्नसमयंमि । जो जणयज्जियलच्छिं उवभुंजइ अहमचरिओ सो ॥ १८ ॥ किं पढिएणं ? बुद्धीए किं ? व किं तस्स गुणसमूहेण ? । जो पियरविढत्तधणं भुंजइ अज्जणसमत्थो वि ॥१९॥ जणणिजणयाण चलणे नमिउं विन्नवइ जोडियकरो सो । जणमग्गेणं अज्जिय बहुदव्वं आगमिस्सामि ॥२०॥ ताइं वि भणंति पुत्तय ! लच्छी विउला वि अत्थि अम्ह गिहे । एयं चिय वच्छ ! तुमं भुंजसु निच्चं सइच्छाए ॥२१॥ ओवाइयसयलद्धो एगो चिय अम्ह पुत्तो सि । तुम्हारिसाण सुहलालियाण दुग्गो जलहिमग्गो ॥ २२ ॥ उच्छाहुल्लसियतणू समुद्ददत्तो पयंपए तत्तो । सुगमं व दुग्गमं वा कुणेइ किं धीरपुरिसाण ? ॥ २३ ॥ पुव्वपुरिसज्जियाइं धणाइं विद्दवइ को न इच्छाए ? । जे समज्जिय भुंजंति हुंति ते उत्तमा के वि ॥ २४ ॥ किं बहुणा भणिएणं ? जह तह व मए अवस्सगंतव्वं । तं निच्छयं मुणेउं विसज्जिओ तेहिं कहकहवि ॥ २५ ॥ अह कणयवइं पभणइ दइए ! देसंतरे गमिस्सामि । बाहभरुल्लियनयणाए तीए अणुमन्निओ एसो ॥ २६ ॥ तुट्ठमणो सो तत्तो गहिऊण कयाणगाइं विविहाइं । मुणिऊण सुहमुहुत्तं अच्चिय पडिमं

जिणवराणं ॥ २७ ॥ काऊण जलहिपूयं चलणे नमिऊण जणणिजणयाण । दिन्नासीसो तेहिं चडिओ वहणंमि सेट्ठिसुओ ॥ २८ ॥ वणिउत्तेहिं समेओ सुवियक्खणणेयमित्तसंजुत्तो । पवणेणणुकूलेणं पत्तो दीवंमि एगंमि ॥ २९ ॥ मणइच्छियलाहेण विक्किणिय कयाणगाइं तत्थेव । गहिऊण अहिणवाइं तेण उप्पेलियं वहणं ॥ ३० ॥ जा किं पि गओ मग्गं उच्छलिओ ताव कालियावाओ । संजायं वद्दलयं खलु व खे गज्जिओ मेहो ॥ ३१ ॥ डुल्लेइ जाणवत्तं मण व दारिद्दपीडियजणस्स । जा निज्जामयलोओ खिवइ अहो नंगरे ज्झत्ति ॥ ३२ ॥ आउलवाउलहियओ उस्सारइ जाव सियवडे वियडे । संचारेइ य जाव य आउलयाइं सुबहुयाइं ॥ ३३ ॥ ता फुट्टं तं वहणं नारीहिं य (नारीहियं) इच्छियं रहस्सं व । को वि मओ को वि पुणो फलहं लहिऊण उत्तरिओ ॥ ३४ ॥ सिट्ठिसुओ वि हु फलहं अवलंबइ वल्लहं व लहिऊण । तरमाणो कहकहमवि गिरिंमि पत्तो गिरावत्ते ॥ ३५ ॥ तत्थ विसन्नो चिंतइ जणएहि निवारिओ वि जं अहयं । एयज्झवसायाओ न नियत्तो तं फलं एयं ॥ ३६ ॥ कत्थ गया ते मित्ता ? वणिउत्ता कत्थ ? कत्थ सा लच्छी ? । नियवयणं दंसिस्सं कहं अहं जणणिजणयाणं ॥ ३७ ॥ जे न करेंति गुरूणं सिक्खं दुहजलहितारणतरंडं । अम्हारिस व पच्छा ते पच्छायावदुहजुत्ता ॥ ३८ ॥ भवियव्वयाइ नासो कहिं पि नो हवइ नूण कइयावि । तत्तो सप्पुरिसेहिं सोगो हियए न कायव्वो ॥ ३९ ॥ पुरिसाण आवय च्चिय वहेइ कसवट्टए सतुल्लत्तं । एयाए निव्वडिओ जो खलु कणयं व सो जच्चो ॥ ४० ॥ इय दुहियमाणसो वि हु निरुवममवियंभमाणउच्छाहो । परिभमहिं (°मेहिं) जलहिमज्झं ठियंमि सेले गिरावत्ते ॥ ४१ ॥ विविहवणस्सइरम्मे अणेयगंभीरगुहसयाअन्ने (°इन्ने) । भयजणयसीह-चित्तयमित्तकरेणूहि दुल्ललिए ॥ ४२ ॥ जा पत्तो किं पि तओ नियइ सिलं सो कवाडियारूवं । तं उग्घाडिय दिट्ठा गच्छइ

सोवाणपंतीए ॥ ४३ ॥ तत्थ गएणं दिट्ठं धवलहरं कणयभित्तिनिम्मवियं । गयणग्गलग्गमाणिक्कपुत्तलीथंभतोरणयं ॥ ४४ ॥ दारंमि सन्निविट्ठं दुवारवालं भणेइ सिट्ठिसुओ । कस्सेसो आवासो रम्मो पडिपुन्नपुन्नस्स ॥ ४५ ॥ सो भणइ इमं ठाणं जलनिहिपहुणो समुद्ददेवस्स । निम्माणुसप्पयारे कह णु तुमं आगओ इत्थ ? ॥ ४६ ॥ वज्जरइ सिट्ठिपुत्तो तं मह दंसेसु देवयं भाय ! । तेणं भणियं चिट्ठसु इत्थेव तुमं खणं एगं ॥ ४७ ॥ विन्नविउं नियसामिं जावागच्छामि लद्धआएसो । गंतूण तस्स पासे कुणिउं पंचंगपणिवायं ॥ ४८ ॥ विन्नवइ नरो कत्तो वि आगओ को वि चिट्ठइ दुवारे । कोऊहलपडिपुन्नो सो जंपइ तं पवेसेसु ॥ ४९ ॥ लद्धाएसेणेसो पवेसिओ तेण ज्झत्ति सेट्ठिसुओ । अह पंचवन्नमणिमउडकिरणविच्छुरियसिरकमलं ॥ ५० ॥ आलम्बलयथूलमोत्तियहारविरायंतपिहुलवच्छयलं । रयणविणिम्मियकेऊरकिरणसोहंतभुयदंडं ॥ ५१ ॥ झणज्झणिररयणकंकणकलायअंकणयकडयपयजुयलं । निरुवमरूवं पिच्छिय समुद्ददेवं विचिंतेइ ॥५२॥ गच्छंति दिट्ठमग्गे नूणं एयारिसा सुपुन्नाणं । मह आवई वि जाया इह समए संपइसमाणा ॥ ५३ ॥ सुपसन्नो लोयाणं कहमवि एसो हवेइ जाण जए । मणवंछियअहियाओ लहंति ते नूण रिद्धीओ ॥५४॥ सिट्ठिसुएण पणामो तस्स कओ भत्तिनिब्भरमणेण । हरिसुल्लसिरसरीरो दिन्नासणयंमि उवविट्ठो ॥५५॥ पुट्ठो सुरेण कत्तो संजाओ इत्थ आगमो तुज्झ ? । वणिउत्तेणं सव्वो कहिओ मूलाउ वुत्तंतो ॥ ५६ ॥ सम्मं मुणिऊण सुरो पयंपए वच्छ ! नत्थि तुह लाहो । कइयावि हु जलमग्गे होही खलु आवय च्चेय ॥५७॥ तह वि हु विहलं मा हवइ दंसणं देवयाण तेण तुमं । वच्चसु सुवन्नदीवं होही लाहो तुह अउव्वो ॥ ५८ ॥ सो जंपइ जलमज्झे अमुणिय ठाणंमि जामि कहमिण्हिं । तस्साएसेण तओ उप्पाडिय किंकरेण लहुं ॥ ५९ ॥ मुक्को सुवन्नदीवे सो न हु रयणाइं नियइ नो

कणयं। न य दम्मे अन्नं वा न किं पि जं हरइ दारिद्दं ॥ ६० ॥ तत्तो विलक्खचित्तो समुद्ददत्तो विचिंतए दुहिओ। दिव्वंमि पराहुत्ते किं पुरिसो कुणइ धीरो वि? ॥ ६१ ॥ लोयाणं दारिद्दं हरेइ जं तुट्ठमाणसो सो वि। धिद्धी निक्करुणमणो भयठाणे इत्थ मं खिवइ ॥ ६२ ॥ रुट्ठेण तेण मुक्को लोहं दंसित्तु इत्थ ठाणंमि। कह अन्नह तत्थ चिय न किं पि दिन्नं मह सुरेण ॥ ६३ ॥ उत्तमजणा वि एवं कुणंति जं विप्पयारणं कहवि। ता कह पावउ सोक्खं खणं पि अम्हारिसो लोओ ॥ ६४ ॥ अहवा नो दायव्वो दोसो कस्सावि केण कइयावि। पुव्वज्जियकम्माओ हवंति जं सुक्खदुक्खाइं ॥ ६५ ॥ तं किं पि दुहं जायं समुद्ददत्तस्स तंमि समयंमि। जं न कहिउं न सहिउं तीरिज्जइ अन्नपुरिसेण ॥ ६६ ॥ अह कुणिय पाणवित्तिं फलेहिं सो तत्थ सीयभयभीओ। कट्ठेहिं पाडिऊणं जलणं जालेइ रयणीए ॥ ६७ ॥ भूमी सुवन्नरूवा संजाया तावभावओ तत्थ। सो हरिसपरो जाओ तं पिच्छियऽणक्खभविड्ढि व ॥ ६८ ॥ मुणिउं सुवन्नभूमिं खणिऊणं कुणइ इट्टियाओ तओ। दिन्ने जलणे ताओ सुवन्नरूवाओ पिच्छेइ ॥ ६९ ॥ तम्मि समयम्मि पत्तो माउलओ सोहडो कहवि तत्थ। अवतितिथयवहणाओ ओलक्खिय तं पयंपेइ ॥ ७० ॥ वच्छ! कहं इह पत्तो एगो चिय कह व कह व दीणमणो। तं पणमइ मुणिऊणं सिट्ठिसुओ विहसियसरीरो ॥ ७१ ॥ लज्जोण्णामियवयणो नियवुत्तंतं कहित्तु सव्वं पि। सव्वाउ इट्टियाओ तस्स चिय खिवइ वहणंमि ॥ ७२ ॥ आरुहिऊणं तेहिं वहणं तो पिच्छियं गिरावत्ते। संपत्तं निज्जामयलोओ दीणो पयंपेइ ॥ ७३ ॥ उम्मग्गेणं एयं संपत्तं जाणवत्तमइदुग्गे। न चलइ इह ठाणाओ कहमवि किं किज्जइयाणिं? ॥ ७४ ॥ एसो दीसइ जेणं अइदुग्गो पव्वओ गिरावत्तो। इह पत्तो नियठाणे जाइ जणो गरुयपुन्नेण ॥ ७५ ॥ आउलवाउलहियया जाया सव्वे वि मुक्कजीयासा। जलनिहिगमण-

विरत्तो समुद्ददत्तो पयंपेइ ॥ ७६ ॥ भग्गे वहणे लद्धेण फलहखंडेण इत्थ ठाणंमि । पत्तेणं सक्खं चिय समुद्ददेवो मए दिट्ठो ॥ ७७ ॥ अह सोहडेण सहिओ भमेइ सो तं न पिक्खए तत्थ । अहवा वारं वारं सुरवग्गो दीसए कह वि ॥ ७८ ॥ खिन्नो समुद्ददत्तो तत्थ य चिंतेइ आत्तय चेय । पाणप्पवासहेऊ जाएइ पए पए मज्झ ॥ ७९ ॥ दुक्खसमुद्दे खित्तो करुणाठाणं अहं सुरेणावि । पुव्वकियकम्माणं हरिउं को तीरइ विवायं ॥ ८० ॥ वणिउत्तमित्तलच्छीविच्छोहदुहेण खिन्नदेहेण । गयणंगण-संभूओ निसुओ सद्दो अमयतुल्लो ॥ ८१ ॥ वणिउत्त ! अहं सु च्चिय सुरो तए इह पहायसमयंमि । आउल्लनंगरेहिं सज्जं वहणं कुणेयव्वं ॥ ८२ ॥ जेणागच्छंति सया बहवे भारुंडपक्खिणो इत्थ । तप्पक्खवायवड्ढुं पवणपिल्लियं जाणवत्तमिणं ॥ ८३ ॥ निवडिस्सइ सुहमग्गे इत्थत्थे को वि नेव संदेहो । अह भइणिभाउणो सो कहेइ सव्वं पि वुत्तंतं ॥ ८४ ॥ भणइ य किं सच्चं चिय नो वा जाणिज्जए कहवि सम्मं । अहवा दहिदड्ढतणू फुक्केउं पियइ खलु दुद्धं ॥ ८५ ॥ तहवि कुणिज्जइ एयं तेहिं तओ सियवडो कओ पउणो। आउल्लयवग्गकरा संजाया धीवरा ज्झत्ति ॥ ८६ ॥ जा चडिओ सयलजणो ता पत्ता नहपहेण भारुंडा। तं पक्खवायहरियं वहणं पत्तं सुमग्गंमि ॥ ८७ ॥ पुणलद्धजीविया विव संजाया हरिसनिब्भरा धणियं । पत्ता कमेण नयरे रायगिहे कयमणुच्छाहा ॥ ८८ ॥ बहिभाए उत्तारिय सव्वाइं कयाणगाइं सिट्ठिसुओ । समुवज्जियबहुदव्वो संपत्तो निययगेहंमि ॥ ८९ ॥ पणमइ समुद्ददत्तो चलणे जणयाण भत्तिसंजुत्तो । लद्धासीसो साहइ अच्छरियकरं नियं चरियं ॥ ९० ॥ सोवन्न-इट्टियाओ गहिऊण गओ निवस्स पासंमि । पाहुडमप्पिय जियसत्तुनिवइणो नमइ पयपउमे ॥ ९१ ॥ सुपसन्नमाणसेणं सुंकद्धं तेण तस्स परिचत्तं । तत्तो सयलं रिद्धिं नियपिउणो दंसइ पहिट्ठो ॥ ९२ ॥ चिंतइ सागरदत्तो साहिज्जेणं इमस्स

पुत्तस्स । अम्हाण पच्छिमवयं गच्छिस्सइ सुक्खभावेण ॥ ९३ ॥ उच्छाहबुद्धिधीरिमथिरोवयारिचपुन्नसंपत्तो । जेणऽम्ह एस तणओ पडिपुन्नासो गुणावासो ॥ ९४ ॥ तस्सागमंमि सिट्ठी वद्धावणयं कुणेइ रिद्धीए । अह रत्तिजागराओ विसूइया तस्स संजाया ॥ ९५ ॥ नयरपहाणेहिं तओ कयोवयारे वि णेगविज्जेहिं । पंचत्तं संपत्तो समुद्ददत्तो खणेणावि ॥ ९६ ॥ जणणी जणओ तत्तो पुत्तगुणे सुमरिऊण झूरेइ । अंधाण व दंडसमो वच्छ ! तुमं कत्थ दीसिहिसि ? ॥ ९७ ॥ अम्हाण वुड्ढभावे को पुत्त ! कुणिस्सई परित्ताणं । परदुक्खमजाणंतो कत्थ गओ चइय सयणजणं ॥ ९८ ॥ जइ थोवदिणेहिं चिय अम्हाणं गिहाउ चिंतियं गमणं । ता कीस पुत्त ! तुमयं उप्पन्नो इत्थ पढमं पि ॥ ९९ ॥ किं वच्छ ! तुमं जाओ अइनिट्ठुरमाणसो खणेणावि । विलवंताण वि अम्हाण जेण न हु उत्तरं देसि ॥ १०० ॥ विलवइ बहुप्पयारं कणयवई असहणिज्जदुक्खभरा । एयागिणिं चइत्ता मं नाह ! गओ तुमं कत्थ ? ॥ १०१ ॥ पाणेसविरहियाणं जम्मो इत्थीण निप्फलु च्चेय । भोगुवभोगसुहाइं जेणं दूरेण जायाइं ॥ १०२ ॥ दुक्खाण परित्ताणं कुणिस्सई को तए विणा नाह ! । को वा सुललियवयणं वियरिस्सइ मज्झ दुहियाए ॥ १०३ ॥ पाणप्पिये ! किं तुमयं रुट्ठो सि ? न देसि जेण पडिवयणं । सुमरेमि किं पि नो नियमवराहं तह वि खमसु तुमं ॥ १०४ ॥ उत्तमजणाण कोवो पणिवायंतो हवेइ खलु जम्हा । पाणेस ! एगवारं देसु तुमं मज्झ पडिवयणं ॥ १०५ ॥ रे ! दिव्व ! तए पढमं नो गहिया कह अहं अकरुणेणं । जेण न हविज्ज कइयावि भायणं एरिसदुहाणं ॥१०६॥ जणएहिं य मयकिच्चं सयलं पि कयं समुद्ददत्तस्स । तह वि न गच्छइ ताणं दुक्खभरो कहवि हिययाओ ॥१०७॥ अह धम्मघोसपहुणो पत्ता गेहंमि मुणियपरमत्था । पणमइ सागरदत्तो उववेसिय आसणे पवरे ॥ १०८ ॥ सोयभरुल्लिय-

नयणाण ताण सुयरयणविरहदुहियाण। सोयंधयारतरणिं कुणंति ते देसणं पवरं ॥ १०९ ॥ एम कयंतो सवाण नूण साहारणो सयाकालं । सविवेयाण न जुत्तो ता सोओ इट्ठमरणे वि ॥ ११० ॥ जइ पंचत्तं पत्तो जीवइ ता नूण किज्जए सोओ । अन्नह नियदेहस्स य धम्मस्स य होइ परिहाणी ॥ १११ ॥ तारुण्यं करिकर्णतालचपलं लक्ष्मीस्तडित्सन्निभा । सम्बन्धः शरदभ्रविभ्र(भ्र)महरः प्रेमेन्द्रचापोपमम् ॥ आयुर्वायुविधूततूलतरलं संसारिणां सर्वदा । मुक्त्वा धर्ममनुत्तमं किमपि नो नित्यं भवे दृश्यते ॥ ११२ ॥ दारिद्दगिरिविहंडणकुलिससमो भवसमुद्दबोहित्थो । एक्को च्चिय जिणधम्मो लोयाण मणिच्छियं जणइ ॥ ११३ ॥ सागरदत्तो कमला कणयवई धम्मदेसणं सुणिउं । जिणधम्ममाणसाइं तिन्नि वि जायाइं सविसेसं ॥ ११४ ॥ गुरुणो वि निए ठाणे संपत्ता तेहिं नमियपयपउमा । कालं गमेंति ताइं जिणगुरुपयसेवणपराइं ॥ ११५ ॥ पंचपरमेट्ठिमंतं सुमरंताइं विसुद्धभावाइं । नियआउसमत्तीए कमेण पत्ताइं देवत्तं ॥ ११६ ॥

॥ इति अनित्यताविषये समुद्रदत्तकथानकम् समाप्तम् ॥